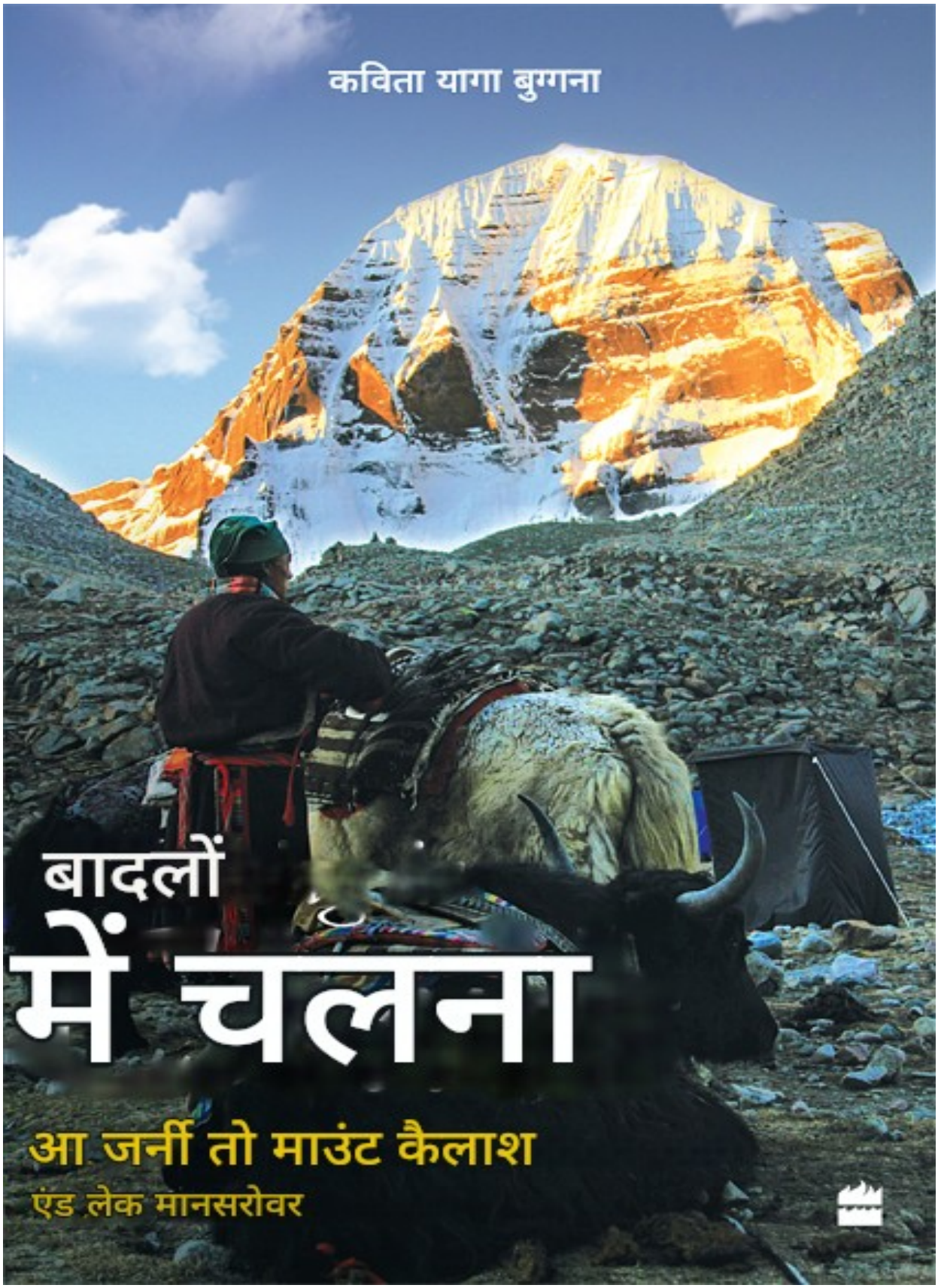
कविता यागा बुग्गना
बादलों
में चलना
आ जर्नी तो माउंट कैलाश
एंड लेक मानसरोवर

Table of Contents

ढकना
शीर्षक पेज
समर्पण
विषयसूची
झील और पहाड़
यात्री , प्रतीक्षा कर रहे हैं दिग्गजों के बीच
वास्तविकता सामने आती है अन्य यात्राएँ
पहला शिविर
एक और दिन
पाठकों
करनाली नदी के किनारे
यह जितना समय लेगा
देवताओं
सीमा पार करना
सैनिकों
पहली नजर
हम जिन देवताओं की पूजा करते हैं , उनकी पूजा क्यों करते हैं ? डुबोना , साफ करना
झील पर रोशनी
चिउ गोम्पा , पक्षी मठ
आखिरी शहर
देवताओं का पर्वत
प्रेम कहानियां
यात्री
कैलाश में रात्रि
नीली बत्तियाँ
बादलों में चलना

एक चुराया हुआ दिन
मून लेक
रिटर्निंग
क्षणिक और शाश्वत
अनुक्रमणिका
उपसंहार एवं आभारोक्ति
किताब के बारे में
लेखक के बारे में
कॉपीराइट

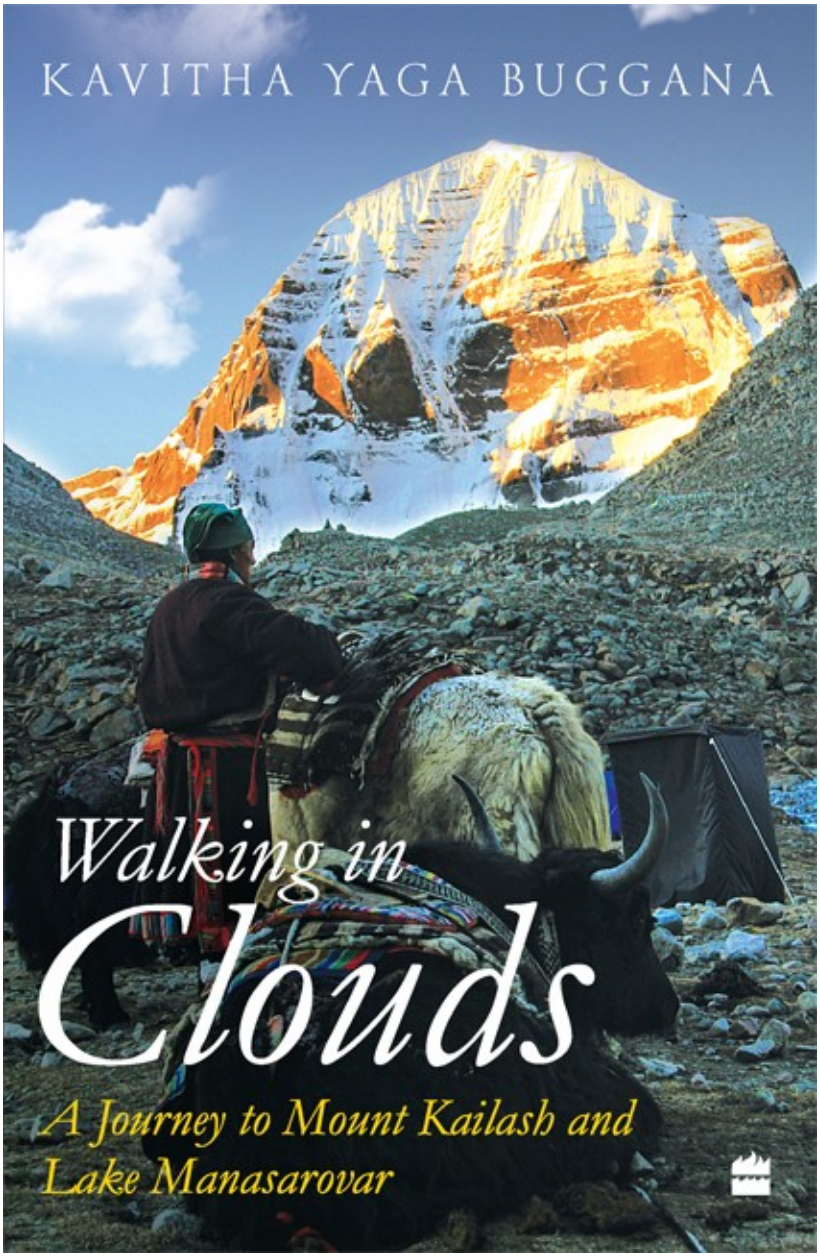
KAVITHA YAGA BUGGANA
Walking in
Clouds
A Journey to Mount Kailash and
Lake Manasarovar

बादलों में चलना

A Journey to Mount Kailash and Lake Manasarovar

KAVITHA YAGA BUGGANA

HarperCollins *Publishers* India

मेरे ससुर जी को, जिन्हें किताबें बहुत पसंद थीं और जो इसे पढ़कर बहुत प्रसन्न होते।
और मेरे माता-पिता को, जिन्होंने मुझे इस विश्वास के साथ पाला- पोसा कि एक महिला का स्थान उसके घर में, उसके कार्यालय में, उसके स्टूडियो में, उसकी प्रयोगशाला में और जहाँ कहीं भी उसके सपने उसे ले जा सकते हैं।

अंतर्वस्तु

झील और पहाड़
यात्री, प्रतीक्षा कर रहे हैं दिग्गजों के बीच
वास्तविकता सामने आती है अन्य यात्राएँ
पहला शिविर
एक और दिन
पाठकों
करनाली नदी के किनारे
यह जितना समय लेगा
देवताओं
सीमा पार करना
सैनिकों
पहली नजर
हम जिन देवताओं की पूजा करते हैं, उनकी पूजा क्यों करते हैं? डुबोना, साफ करना
झील पर रोशनी
चिउ गोम्पा, पक्षी मठ
आखिरी शहर
देवताओं का पर्वत
प्रेम कहानियां
यात्री
कैलाश में रात्रि

नीली बत्तियाँ
बादलों में चलना
एक चुराया हुआ दिन
मून लेक
रिटर्निंग
क्षणिक और शाश्वत
अनुक्रमणिका
उपसंहार एवं आभारोक्ति किताब के बारे में
लेखक के बारे में
कॉपीराइट

झील और पहाड़

दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर एक झील और एक पहाड़ है, जहाँ हवा पतली है और बादल चट्टानों पर ठहरते हैं। ये अद्भुत जगहें हैं और इन्हें देखने की यात्रा में कई दिन लगेंगे। मेरी चचेरी बहन पल्लू और मुझे नहीं पता कि हम इन जगहों तक पहुँच पाएँगे या नहीं, या हमें वहाँ जाने के लिए क्या प्रेरित करता है, लेकिन यह एक ऐसी यात्रा है जिसका वादा हमने दशकों पहले खुद से किया था, जब हम अभी स्कूल में पढ़ती थीं।
उन दिनों हम घाटी में बसे अपने स्कूल के चारों ओर फैली छोटी-छोटी, गोल पहाड़ियों पर चढ़ते थे। चोटी के पास की बड़ी चट्टानों तक पहुँचने में हमें एक-दो घंटे लग जाते थे। वहाँ हम पत्थरों पर लेट जाते थे, और गर्मी में बादल धीरे-धीरे छंटने लगते थे। हम उन रोमांचों के सपने देखते थे जो मानो हमारी नींद भरी दुनिया से बस बाहर हमारा इंतज़ार कर रहे हों। और सबसे बड़ा रोमांच उस झील और पहाड़ की यात्रा थी जो इतनी दूर थे – इतने सुंदर कि मानो वे धरती से ज़्यादा आकाश के हों।

यात्री, प्रतीक्षा कर रहे हैं

Nepalgunj, Nepal

ऊंचाई ~ 150 मीटर

सितंबर की इस साफ़ सुबह में, सूरज की किरणें चमक रही हैं और गर्मी सूखी धरती में समा रही है। पल्लू और मुझे हैदराबाद में अपने घर छोड़े चार दिन हो गए हैं, लेकिन हमारी यात्रा अभी शुरू नहीं हुई है। नेपालगंज हवाई अड्डे की इमारत के बाहर एक चबूतरे पर बैठे, मैं और मेरी चचेरी बहन बाकी लोगों के साथ इंतज़ार कर रहे हैं। यिंग ने फिलहाल अपना बड़ा सा काला कैमरा एक तरफ रख दिया है। वह अपने लंगड़ाते हुए पैर के बावजूद इसे हर जगह साथ ले जाती है। स्पेरेलो, पल्लू की घर की दोस्त प्रार्थना से बातें कर रहा है। हरे रंग की बुद्ध टी-शर्ट और लहराते सुनहरे बालों वाला जेफ, हवाई अड्डे के छोटे से लॉन में एक छिपकली का पीछा करते हुए इधर-उधर भाग रहा है। सूखी घास और पेड़ों के पत्ते धूल से ढके हुए हैं।
‘तो, क्या तुम्हें लगता है कि हम आज सिमिकोट पहुँच पाएँगे?’ मैंने केटी से पूछा, जिसने बगीचे के पास एक छायादार जगह ढूंढ ली थी।
एक शुरुआती बातचीत के तौर पर, यही ठीक रहेगा। पल्लू, प्रार्थना और मैं हैदराबाद से साथ-साथ आए थे, लेकिन हम बाकी लोगों से कल रात काठमांडू हवाई अड्डे पर ही मिले।
'मुझे ऐसा लगता है,' केटी कहती है। उसकी मुस्कान झटपट आती है, लेकिन उसकी मुस्कान से उसका चेहरा आँखों तक खिल उठता है।
पल्लू ने आगे कहा, 'मैंने सुना है कि एक समूह दो दिनों से यहां फंसा हुआ है और सिमिकोट जाने का इंतजार कर रहा है।'
इस हवाई अड्डे पर हर कोई सिमिकोट नामक छोटे से पहाड़ी कस्बे के लिए उड़ान भरने का इंतजार कर रहा है। हमारा इंतजार सिमिकोट के अनिश्चित मौसम पर निर्भर करता है। सिमिकोट उत्तर-पश्चिमी नेपाल में हुमला से होकर गुजरने

वाली ट्रेक का शुरुआती बिंदु है। हुमला ट्रेक तिब्बत में कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील तक की हमारी यात्रा का पहला चरण है।
कैटी हांगकांग की रहने वाली चीनी मूल की महिला हैं जो कई साल पहले वैंकूवर में आकर बस गईं। वह बताती हैं कि उनका जीवन बहुत व्यस्त है। एक प्रशिक्षित नर्स होने के साथ-साथ, वह एक अस्पताल प्रशासक और एक उत्साही पर्वतारोही भी हैं, और उनकी एक वयस्क बेटी है जिसका जीवन उनसे भी कहीं अधिक व्यस्त है।
‘आपके बच्चे कितने साल के हैं?’ कैटी पूछती है।
‘मेरी बेटी चौदह साल की है और मेरा बेटा आठ साल का है,’ पल्लू जवाब देता है। 'उनका आनंद लें। सबसे अच्छा समय तब होता है जब वे छोटे होते हैं,' केटी ने उदास स्वर में कहा।
'मेरे बेटे चौदह और ग्यारह साल के हैं।' मैं अपने बड़े बेटे को गली में क्रिकेट खेलते हुए और छोटे बेटे को लेगो के टुकड़ों के समुद्र में से सही टुकड़ा ढूंढते हुए कल्पना करता हूँ।
यात्रा की सुबह घर की यादें उमड़ आती हैं: बगीचा, घास और ओस से हरा-भरा, और उसका गुलाबी ओलियंडर और लाल हिबिस्कस का कोना; बच्चे, जिनके सिर अभी भी नींद से झुके हुए हैं; मेरे पति हरि, चुपचाप, अपने सफेद चीनी मिट्टी के कप से कॉफी की चुस्की लेते हुए। हालांकि वह इसे दिखाने की कोशिश नहीं करते, लेकिन वह चिंतित हैं। वह समझ नहीं पा रहे हैं कि मैं अपनी दुनिया की सीमाओं से परे इन जगहों पर क्यों जा रही हूँ। मुझे क्या प्रेरित कर रहा है? मैं इतने लंबे समय के लिए सबको कैसे छोड़ सकती हूँ? अगर मुझे कुछ हो गया तो परिवार का क्या होगा? ये जायज़ सवाल हैं। मुझे यकीन नहीं है कि मेरे पास इनके जवाब हैं।
नेपालगंज हवाई अड्डे पर सूरज की गर्मी बढ़ती जा रही है। आखिरकार, हमारे गाइड छिरिंग, जो दुबले-पतले और लगभग बीस वर्ष के हैं, हमें हवाई अड्डे के लाउंज में ले जाते हैं। दीवार पर लगे टेलीविजन पर एक नेपाली धारावाहिक चल रहा है। यह मुझे 1980 के दशक के हिंदी धारावाहिकों की याद दिलाता है, जो भारत के सरकारी चैनल दूरदर्शन पर प्रसारित होते थे। नेपाल मुझे कुछ ऐसा ही लगता है। गड्ढों से बचते हुए हॉर्न बजाती अव्यवस्थित गाड़ियाँ, चमकीली साड़ियों और सिंदूर में सजी शर्मीली महिलाएँ, और लोगों की मासूमियत, ये सब मुझे दशकों पुराने भारत की याद दिलाते हैं। कुछ देर बाद, नेपाली धारावाहिक

की नवीनता फीकी पड़ जाती है और इंतज़ार की नीरसता – हर यात्रा की अनकही कहानी – हावी हो जाती है।
मुझे हैरानी और हंसी की आवाजें सुनाई देती हैं। एयरपोर्ट सुरक्षा गार्ड के दोनों बच्चे जेफ के जादू के करतब देखकर खुशी से चिल्ला उठते हैं। वह अपने हाथों से बड़े-बड़े इशारे करता है और हवा में एक कार्ड लहराता है। लड़का अपने होठों पर हाथ रख लेता है। लड़की की आंखें चौड़ी हो जाती हैं और खुशी से उसके कंधे सिकुड़ जाते हैं। यिंग और स्पेरेलो तस्वीरें खींचते हैं। पल्लू देखने के लिए आती है, और जब बच्चे हंसते हैं, तो हम भी उनके साथ हंसते हैं।
दोपहर के बाद, जब सिमिकोट में हवाएँ तेज़ हो गईं, तो छिरिंग ने हमें बताया कि आज उड़ान भरना सुरक्षित नहीं है। हम वापस होटल की ओर चल पड़े जहाँ पल्लू, प्रार्थना और मैं अपने वातानुकूलित कमरों में आराम करने चले गए। हमेशा हंसमुख रहने वाली प्रार्थना अजीब तरह से शांत थी।
‘बच्चे कैसे हैं?’ पल्लू ने प्रार्थना से पूछा। उनके बेटे सहपाठी हैं और बेटियाँ सहपाठी हैं।
‘वे जितना चाहें उतना टीवी देख सकते हैं, वे जो चाहें खा सकते हैं – वे ठीक क्यों नहीं रहेंगे?’ प्रार्थना कहती हैं।
पल्लू हंसता है।
‘हम लंबे समय तक दूर रहेंगे, लेकिन वे ठीक रहेंगे,’ प्रार्थना कहती हैं, लेकिन मैं देख सकती हूँ कि वह जितना आत्मविश्वास दिखा रही हैं, उतना उनमें नहीं है। पल्लू और मैंने तो इस यात्रा की योजना दशकों पहले बनाई थी, लेकिन प्रार्थना ने पंजीकरण बंद होने से ठीक पहले अपना नाम दर्ज कराया। शायद इस लंबी यात्रा और परिवार से कई दिनों तक दूर रहने के परिणाम अब जाकर उन्हें समझ आ रहे हैं।
इस बीच, विदेशी (हम उन्हें विदेशी ही कहते हैं, हालाँकि नेपाल में हम सभी विदेशी ही हैं; वे हमें 'भारतीय महिलाएँ' कहते हैं) बिल्कुल भी विचलित नहीं हैं। वे कैमरे और धूप से बचने वाली टोपियाँ लेकर रिक्शा में घूमने निकल पड़ते हैं। वे गोल-गोल स्विचों और बाहर निकले तारों वाले पुराने स्विचबोर्डों, फल विक्रेताओं, पुराने रिक्शाओं, गंदी मुर्गी की दुकानों और आवारा गधों की तस्वीरें खींचते हैं। हमारे भारतीय शहरों में, ये दृश्य उस गंदे और खस्ताहाल देश की शर्मनाक झलकियाँ हैं जिनसे हम आगे निकलने की

कोशिश कर रहे हैं। लेकिन उनकी नज़र में, टूटा-फूटा स्विचबोर्ड जुगाड़ का एक अद्भुत नमूना है; चमकीले लाल, मटमैले भूरे और चटख पीले फलों से सजी फलों की दुकान, जो रंग-बिरंगी ज्यामिति में सजी है, किसी कलाकार के लिए आनंददायक है।
शाम को हम होटल के रेस्टोरेंट में इकट्ठा होते हैं। आयताकार इमारत, जिसके अंदरूनी हिस्से में बहुत ज़्यादा रोशनी है, मुझे पता चलता है कि यह एक भारतीय रेस्टोरेंट है। मुझे नहीं पता कि मैं क्यों हैरान हूँ, क्योंकि भारतीय सीमा यहाँ से कुछ ही मिनटों की दूरी पर है, लेकिन मेरा दिल बैठ जाता है। ज़्यादातर छोटे भारतीय रेस्टोरेंट असली खाने की बहुत ज़्यादा मसालेदार, तेल में डूबी हुई, घिसी-पिटी नकलें परोसते हैं। मैं कुछ नहीं कहती, क्योंकि विदेशी लोग उत्साहित दिखते हैं। मैं उन्हें यह नहीं बताती कि 'भारतीय खाना' जैसी कोई चीज़ नहीं होती। 'तेलुगु खाना' या 'तमिल खाना' जैसी भी कोई चीज़ नहीं होती। हर ज़िले की अपनी पाक परंपराएँ होती हैं जिनमें स्थानीय सामग्रियों का इस्तेमाल होता है, और ये मौसम, तापमान और आयुर्वेद के सिद्धांतों पर निर्भर करती हैं। इसलिए, छोटे भौगोलिक क्षेत्रों में भी खान-पान की अद्भुत विविधता पाई जाती है। उदाहरण के लिए, मेरी माँ का गाँव चावल के साथ खाई जाने वाली खट्टी-मीठी इमली की करी के लिए मशहूर है, जबकि मेरे पिता के गाँव में रागी बाजरे के गरमागरम गोले बनाए जाते हैं। मेरे पति के गाँव में, पप्पू (मसालेदार सब्ज़ी दाल) और नरम जोन्ना रोटी के बिना भोजन अधूरा है। और ये सभी गाँव एक-दूसरे से कुछ ही घंटों की दूरी पर हैं। नेपालगंज के इस चकाचौंध भरे रेस्तरां में, मैं मेनू में मौजूद नकली 'भारतीय भोजन' पर संदेह भरी नज़र डालती हूँ।
बाकी सभी लोग उत्साह से अपना ऑर्डर देते हैं: मटन महारानी, बटर नान। जेफ, स्पेरेलो, केटी और यिंग हमसे मिलने से पहले भी साथ में समय बिता चुके हैं और उनके बीच पहले से ही अच्छी दोस्ती है। पल्लू, प्रार्थना और मैं थोड़े संकोची हैं। यात्रा शुरू करने से पहले हम तीनों अपने साथी यात्रियों के बारे में सोच रहे थे – खासकर स्पेरेलो के बारे में। क्या वह एक अय्याश और अय्याश आदमी निकलेगा जिसकी फैशन की समझ अनोखी होगी? शायद वह एक गुस्सैल, घमंडी और बेबाक इशारों वाला पुरुष होगा? लेकिन वह इन सभी धारणाओं से बिल्कुल अलग निकला। फ्लोरेंस के एक खगोल भौतिक विज्ञानी, स्पेरेलो अपनी

साफ-सफाई का बहुत ध्यान रखते हैं, सोच-समझकर बोलते हैं और उनका व्यवहार औपचारिक है। वेटर पेय पदार्थों की ट्रे लेकर आता है।
‘चीयर्स!’ जेफ कहता है और अपनी बीयर का एक घूंट लेता है।
वेटर अभी भी ड्रिंक्स परोस रहा है। मुस्कुराते हुए और भौंहें चढ़ाते हुए, स्पेरेलो ने वेटर की ओर इशारा किया और जेफ से कहा, जो खुशी-खुशी अपनी बीयर पी रहा था, 'इटली में, हम जानते हैं कि सभी को सर्व किए जाने तक इंतजार करना चाहिए।'
‘हाँ,’ जेफ ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘ऑस्ट्रेलिया में भी हम यही जानते हैं। लेकिन हमें इसकी कोई परवाह नहीं है।’
सब लोग हंसते हैं।
कुछ ही देर में खाना आ जाता है। देखने में तो यह किसी आम भारतीय रेस्टोरेंट के खाने जैसा लगता है, लेकिन खुशी की बात है कि मैं पूरी तरह गलत थी। मटन महारानी का स्वाद लाजवाब, सूक्ष्म और संतुलित था। दाल में मसाले बिल्कुल सही मात्रा में थे। नान गरमागरम और मक्खन से लथपथ थे। सबने दोबारा मटन और नान मंगवाए। हमने और मटन और नान मंगवाए।
‘यह देखो!’ जेफ कहता है। वह एक चम्मच उठाता है और उसे लीवर की तरह और अपने हाथ को पिस्टन की तरह इस्तेमाल करते हुए, बीयर की बोतल का ढक्कन खोल देता है। सब लोग ताली बजाते हैं। जेफ वाकई असाधारण प्रतिभा का धनी है।
मैंने उसे एक बोतल थमा दी। 'जेफ, क्या तुम मुझे सिखा सकते हो? मैं घर पर यह ट्रिक दिखाना चाहता हूँ।'
मैं दूसरों की बीयर की बोतलें खोलने का अभ्यास करती हूँ। देखते ही देखते, मेरी कलाई की एक झटके से ही ढक्कन खुल जाते हैं। मेरे पति और बच्चे ज़रूर प्रभावित होंगे।
खाना परोसने के बाद, स्पेरेल्लो अपना लैपटॉप खोलते हैं और हमें सिल्क रूट पर अपनी साइकिल यात्रा की तस्वीरें दिखाते हैं। इटली से चीन तक का सफर बेहद खूबसूरत लगता है। चीनी पहाड़ों में मंदिर की गुफाएँ बसी हैं, और मध्य एशिया के अंतहीन हल्के भूरे रंग के मैदान नीले रंग की झीलों में जाकर मिलते हैं। हर तस्वीर के साथ एक छोटी सी कहानी जुड़ी है।
पल्लू झुककर धीरे से कहती है, 'ये लोग घर के लोगों से कितने अलग हैं।' हैदराबाद के हमारे उच्च-मध्यम वर्गीय दायरे में, जीवन शिक्षा, विवाह, बच्चे, समाज में एक निश्चित प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए धन, और फिर

सेवानिवृत्ति के एक निर्धारित क्रम में चलता है। लेकिन स्पेरेलो, जेफ और केटी के लिए ऐसा नहीं है। उनके पास अपनी नियमित नौकरियां तो हैं ही, साथ ही उनका एक और जीवन भी है, जो महाद्वीपों में साइकिल चलाने, ब्रिटिश कोलंबिया के हरे-भरे पहाड़ों में ट्रेकिंग करने और माचू पिचू के प्राचीन खंडहरों पर चढ़ने में व्यतीत होता है।
‘रुको, रुको!’ मैं अपने बैग से नोटबुक निकालते हुए कहती हूँ। ‘चीनी गुफा मंदिर का नाम क्या था, याद है?’ मैं खूब नोट्स बनाती हूँ, हालाँकि मुझे खुद नहीं पता क्यों। शायद मैं कुछ भी भूलना नहीं चाहती क्योंकि एक दिन मैं भी साइकिल से महाद्वीपों की यात्रा करूँगी।
मैं पल्लू की ओर झुककर कहता हूँ, 'मुझे लगता है कि हमें अपनी यात्रा के लिए सही लोग मिल गए हैं, है ना?'
हम इस कस्बे में फंसे हुए हैं, यह नहीं जानते कि हम कभी यहां से उड़ान भर पाएंगे या नहीं, फिर भी बीयर बह रही है और हमारी हंसी रात में गूंज रही है।

दिग्गजों के बीच

सिमिकोट, हुमला, नेपाल

ऊंचाई ~ 3,000 मीटर

नेपालगंज से आया यह ग्यारह सीटों वाला विमान अब तक का सबसे छोटा विमान है जिसमें मैंने उड़ान भरी है। कॉकपिट की खिड़की पर लाल झालरों वाला एक चीनी ताबीज़ लटका हुआ है, जो हवा में विमान के हिलने-डुलने से झिलमिलाता है। जहाँ वाणिज्यिक विमान लगभग 38,000 फीट की ऊँचाई पर उड़ान भरते हैं, वहीं हम लगभग 13,000 फीट की ऊँचाई पर हैं - यह अब तक की मेरी सबसे कम उड़ान है। जहाँ तक मेरी नज़र जाती है, पहाड़ ही पहाड़ विशाल जमी हुई धरती की लहरों की तरह उठते दिखाई देते हैं। हम एक हरी ढलान के ऊपर से गुज़र रहे हैं; मुझे दो- तीन के समूहों में बने छोटे-छोटे घर और इधर-उधर बिखरे हुए अकेले घर दिखाई देते हैं। ये घर आयताकार खेतों में विभाजित एकड़ ज़मीन पर और ढलानों पर तराशे गए सीढ़ीदार खेतों पर बने हैं। इन समूहों के अलावा, यहाँ कुछ भी नहीं है - न एक भी घर, न एक भी इंसान।
इन गांवों के लोग आदिवासी किसान हैं। वे इन कठिन जमीनों पर खेती करते हैं, पशुपालन करते हैं (मुख्यतः याक और बकरियां), और नीचे मैदानी इलाकों में वन उत्पादों और जड़ी-बूटियों का व्यापार करते हैं। बिजली या आधुनिक सुविधाओं के बिना, यह एकांत का कठिन जीवन है। मैं कल्पना करने की कोशिश करती हूं कि मेरे बच्चे यहां बड़े होंगे, लेकिन मैं कल्पना नहीं कर सकती।
हवा का एक तेज़ झोंका विमान को हिला देता है। यह हवा में लटका हुआ है, इसका इंजन हवा के बल और इन विशाल पहाड़ों के खिंचाव के कारण कांप रहा है। मैं अपनी सांस रोक लेता हूँ - अभी बहुत लंबा रास्ता तय करना है। छोटे विमान अपने स्टील और तेज़ आवाज़ वाले इंजनों से झूठा आराम देते हैं। लेकिन जब वे पहाड़ों के बीच से गुज़रते हैं, तो वे महत्वहीन छोटी-छोटी चीज़ों के अलावा और क्या होते हैं जिन्हें किसी नुकीली चट्टान पर फेंका जा सकता है, जैसे कोई मक्खी जिसे आप चाहें तो अपनी तर्जनी उंगली से मार सकते हैं?

कुछ दिन पहले, जब हम काठमांडू हवाई अड्डे पर अपनी उड़ान का इंतजार कर रहे थे, छिरिंग ने हमें बुद्ध एयर के एक विमान के बारे में बताया जो हाल ही में उड़ान भरते समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। उसने आगे कहा, 'सभी यात्री मारे गए।'
'क्या वे सभी कैलाश-मानसरोवर जा रहे थे?' पल्लू ने पूछा।
'हां। और वे सभी भारतीय तीर्थयात्री थे।'
हिंदू, बौद्ध, जैन और बोन धर्म के 15 लाख से अधिक अनुयायियों के लिए कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील सबसे पवित्र स्थलों में से हैं। हिंदू तीर्थयात्रियों के लिए कैलाश शिव का निवास स्थान है - विनाश के देवता - और मानसरोवर शिव की पूजा के लिए निर्मित एक पवित्र झील है। मानसरोवर में स्नान करने से सभी पाप धुल जाते हैं। कैलाश में चलना स्वर्ग में चलने के समान है।
उस दिन छिरिंग ने हमसे कहा, 'हर साल कैलाश पर्वत पर कुछ भारतीय तीर्थयात्रियों की मृत्यु हो जाती है।'
‘सच में? वे किस चीज से मरते हैं?’ मैंने पूछा।
कुछ लोग कैलाश पहुंचने से पहले ही मर जाते हैं। कुछ लोग पहाड़ पर ही बीमार पड़ जाते हैं और वापस लौटने से इनकार कर देते हैं, जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है।
मैंने जोर देकर पूछा, 'वे मना क्यों कर रहे हैं?'
‘वे पीछे हटने के बजाय मरना पसंद करेंगे। वे शिव के साथ पर्वत पर मरने के लिए तैयार हैं।’ छिरिंग ने सिर हिलाया। ‘समझ नहीं आ रहा, समझ नहीं आ रहा।’ मैं भी नहीं कर सका। एक नास्तिक होने के नाते, भगवान के लिए मरने की इच्छा मुझे विशेष रूप से हैरान करती है। जब छिरिंग ने हमें उन तीर्थयात्रियों के बारे में बताया, तो मेरा मन किया कि मैं समय में पीछे चला जाऊं, उन तीर्थयात्रियों को कंधों से पकड़कर तब तक हिलाऊं जब तक उनके दांत न बजने लगें। उनकी भक्ति का क्या लाभ? वे तो वैसे भी मर चुके थे। क्या यह सब व्यर्थ था? मैं उनसे पूछना चाहता था, क्या भगवान के लिए मरना उचित था? काठमांडू हवाई अड्डे के ऊपर आसमान की ओर देखते हुए, मुझे दुर्घटनाग्रस्त बुद्ध एयर विमान की याद आ गई। मैंने चकनाचूर विमान के मलबे और उसके चारों ओर तीर्थयात्रियों की रोज़मर्रा की जानी-पहचानी चीज़ों की कल्पना की:

मसाला मूंगफली, पारिवारिक तस्वीरें, एक महिला का दुपट्टा। मैंने उन्हें ज़मीन पर बिखरे हुए खोए हुए सपनों की तरह देखा।
सिमिकोट जाने वाले हमारे छोटे विमान ने नियंत्रण हासिल कर लिया है। इंजन एकसमान गति से चल रहा है और विमान आत्मविश्वास से अपनी उड़ान जारी रखे हुए है। नीचे, पहाड़ एक-दूसरे से अधिक दूरी पर हैं। हवा भी धीमी है। विमान धीरे से एक ढलान पर मुड़ता है।
घाटियाँ संकरी और छायादार हैं, और नदियाँ और झरने चट्टानों को चीरते हुए अपना रास्ता बनाते हैं। बादल—कुछ पतले पूंछ जैसे, कुछ सफेद रुई जैसे— पहाड़ी ढलानों पर चट्टानों, झरनों और पेड़ों को छूते हैं। ये जगहें अवास्तविक, लगभग जादुई लगती हैं। मैंने खिड़की के शीशे पर हाथ रखा। जल्द ही मैं इनमें चलूंगा और बादल मुझे भी छू लेंगे।
हम नीचे उतरने लगते हैं। पहाड़ पर टिन की छत और लाल रंग की छत वाली इमारतें दिखाई देती हैं। हमें बताया जाता है कि यह सिमिकोट है। हवाई अड्डा कहाँ है? मुझे कुछ दिखाई देता है जो हवाई पट्टी जैसा दिखता है, लेकिन यह आधे किलोमीटर से ज़्यादा लंबा नहीं हो सकता। यह पहाड़ के किनारे के खतरनाक रूप से करीब लगता है। अगर हम आगे निकल गए, तो हम सैकड़ों मीटर नीचे, उस घुमावदार नदी में जा गिरेंगे जिसकी मैं अभी प्रशंसा कर रहा था। हवाई पट्टी के एक तरफ एक छोटे विमान का टूटा हुआ मलबा पड़ा है, जिसकी पूंछ ऊपर की ओर उठी हुई है। मैं खिड़की से नाक सटाकर देखता हूँ। यह वह जगह नहीं हो सकती जहाँ हम उतर रहे हैं। हवाई अड्डे की इमारत कहाँ है? रनवे कहाँ है? ज़रूर कोई गलती हुई है। मैं खिड़की से और ज़ोर से नाक सटाकर देखता हूँ।
जैसे ही विमान नीचे उतरने लगता है, उसके इंजन से घरघराहट की आवाज़ आने लगती है। पायलट जेफ की ओर मुड़ता है, जो ठीक उसके पीछे बैठा है।
‘चिंता मत करो,’ पायलट ने आश्वस्त करने वाली मुस्कान के साथ कहा। ‘कोई नहीं मरा। कोई नहीं मरा।’
हल्का सा झटका लगा, कुछ धक्के लगे, और विमान रनवे पर आकर रुक गया। बाद में मुझे पता चला कि जब कोई विमान लैंडिंग नहीं कर रहा होता, तो इस हवाई पट्टी का इस्तेमाल खेल के मैदान और क्रिकेट के मैदान के रूप में किया जाता है। विमान के अंदर, लाल रंग का चीनी ताबीज अभी भी वहीं है। हमने अपनी सीट बेल्ट खोलीं और अपने बैग उठा लिए। पायलट सही था। कोई मरा नहीं।

लोग हवाई पट्टी की ओर दौड़ पड़ते हैं और कांटेदार तार की बाड़ के पीछे से भीड़ उन्हें देखती रहती है। पहाड़ों की चोटियों और चीड़ के जंगलों के बीच बसा सिमिकोट किसी पोस्टकार्ड की तस्वीर जैसा दिखता है। लगभग दो हज़ार लोगों के इस कस्बे में एक स्कूल, एक छोटा अस्पताल, कच्ची सड़क के किनारे कुछ दुकानें और पास ही एक सेना शिविर है। कस्बे तक जाने वाली सड़कें अभी भी बन रही हैं। भारत में मैंने जितने भी कस्बे देखे हैं, उनमें से यह सबसे छोटा है, फिर भी यह हुमला के सबसे बड़े कस्बों में से एक है और हुमला क्षेत्र का मुख्यालय भी है।
कुली हमारे बैग उठा लेते हैं। कस्बे से गुजरते हुए दुकानदार और बूढ़ी औरतें हमें उत्सुकता से देखती हैं। छिरिंग इसी इलाके का है, और उसकी चाचियाँ और चचेरी बहनें मुस्कुराते हुए और कंधे थपथपाते हुए उसका अभिवादन करती हैं। हम कामगारों के दल से मिलते हैं। चश्मा पहने एक छोटा सा आदमी - गाँव के एक स्कूल में शिक्षक - सहायक-मार्गदर्शक होगा। एक दुबला-पतला युवा रसोइया खाना पकाने के बर्तनों का निरीक्षण करता है। तीन हट्टे-कट्टे आदमी, जो हमारे कामगार और सहायक होंगे, उन खच्चरों की देखभाल करते हैं जो हमारे तंबू और पोर्टेबल कुर्सियाँ और मेजें ढोएंगे। कुछ कुत्ते हमारे आसपास सूंघते हैं, और बच्चे उत्सुकता से हमें देखते हुए खिलखिलाते हैं।
चावल, चिकन और ऑमलेट के हल्के दोपहर के भोजन के बाद, हम अपनी ट्रेकिंग शुरू करते हैं। अगले छह दिनों तक हम करनाली नदी और उसकी सहायक नदियों के मार्ग का अनुसरण करते हुए तिब्बत सीमा तक पहुँचेंगे। यहीं पर हमारी ट्रेकिंग का पहला चरण समाप्त होगा। फिर हम मानसरोवर झील और कैलाश पर्वत के लिए रवाना होंगे, जहाँ से हमारी ट्रेकिंग का दूसरा चरण शुरू होगा - तीन दिन और दो रातों की कैलाश पर्वतमाला की परिक्रमा।
पल्लू और मैं तैयार हैं। हमारे बैग में ऐसी चीज़ें भरी हैं जिनका हमने पहले कभी इस्तेमाल नहीं किया: ट्रेकिंग पोल, मेटल-टिप वाले जूते और आपातकालीन सीटी। कपड़े की पट्टियाँ छोटी-मोटी खरोंचों के लिए नहीं, बल्कि गंभीर घावों के लिए हैं। आज का रास्ता पहले चढ़ाई वाला होगा और फिर ज़्यादातर ढलान वाला। मुझे लगता है कि मैं पूरा रास्ता दौड़ सकती हूँ, लेकिन पल्लू धीरे-धीरे चलती है, और उसके साथ चलते हुए मुझे मुश्किल से यकीन हो रहा है कि हम आखिरकार यहाँ पहुँच गए हैं, झील और पहाड़ की ओर।

जब पल्लू और मैंने पहली बार इस यात्रा का सपना देखा था, तब हम दक्षिण भारत के ग्रामीण इलाके के एक बोर्डिंग स्कूल में पढ़ रहे थे। हमें पूरा यकीन था कि हम कुछ ही सालों में, जब हम दोनों अठारह साल के हो जाएंगे, तब यह सफर पूरा कर लेंगे। लेकिन अगले दो दशकों में ज़िंदगी ने हमें अलग-अलग रास्तों पर मोड़ दिया। हम दोनों की शादी हो गई और हम अलग-अलग जगहों पर चले गए – मैं शिकागो और पल्लू न्यू जर्सी। हमने अपना करियर और परिवार बसाया। लेकिन आखिरकार, हम दोनों अपने माता-पिता के करीब रहने के लिए भारत वापस आ गए। अब हम एक-दूसरे से तीन किलोमीटर की दूरी पर रहते हैं।
इस साल पल्लू चालीस साल की हो गईं और मैं इकतालीस साल का। पारिवारिक जिम्मेदारियों ने हमें यह एहसास दिलाया कि अगर हमें यह यात्रा करनी ही है तो इसी साल करनी होगी। एक सुबह, हम पल्लू के घर में कंप्यूटर के सामने बैठे, गहरी साँसें लीं और सर्च इंजन में 'मानसरोवर कैलाश की ट्रेक' टाइप किया। हमें पता चला कि कई रास्ते हैं। लेकिन कोई भी हुमला की बराबरी नहीं कर सकता था। अपनी हरी-भरी ढलानों, मनमोहक ऊँचाइयों और निर्मल सुंदरता के साथ, यह समय से अछूता और दुनिया से बेदाग प्रतीत होता था। यह वही था जिसकी हमने हमेशा अपनी ट्रेक के लिए कल्पना की थी। हमने तय किया कि यही वह साल होगा जब हम आखिरकार अपनी यात्रा पर निकलेंगे और हुमला हमारा मार्ग होगा। ऊपर जाते समय, हम छोटे बच्चों को बहते पानी के पाइप में नहाते हुए खुशी से चिल्लाते हुए देखते हैं। मोतियों के गहने पहने एक महिला हमें देख रही है। उसने एक लंबा, मोटा सफेद कपड़ा ओढ़ा हुआ है, जिसमें से एक शिशु का जिज्ञासु चेहरा झाँक रहा है। पहाड़, हवा और बादल मुझे अपनी ओर खींच रहे हैं और मैं उनके बीच पहुँचने के लिए बेताब हूँ। मैं और तेज़ चलने लगती हूँ।
मैं अपनी चचेरी बहन को धीरे-धीरे रास्ते पर आगे बढ़ते हुए देखती हूँ। क्या मुझे उसका इंतज़ार करना चाहिए? यह हमारी यात्रा है, हमने सालों से इसकी योजना साथ मिलकर बनाई है। लेकिन कैटी, जेफ और स्पेरेलो आगे निकल चुके हैं, और मैं पहले समूह में शामिल होने के रोमांच का विरोध नहीं कर सकती। मैं पल्लू को हाथ हिलाती हूँ।
वह हाथ हिलाकर जवाब देती है, 'चलते रहो, कवि!'
‘क्या यह शानदार नहीं है?’ मैं चिल्लाता हूँ। मेरे नीचे, हरे-भरे पहाड़ों की चोटियों पर बादलों की परछाइयाँ तैर रही हैं। मुझे छोटे-छोटे पत्थर के घरों की छतें, उनके छोटे-छोटे बगीचे और नारंगी पहाड़ी फूलों की कतारें

दिखाई देती हैं। ऊपर से, धूसर रंग की पट्टी किसी के बड़े से ड्राइववे जैसी दिखती है।
रास्ता ढलानदार और आश्चर्यजनक रूप से व्यस्त है। एक पुरुष और एक महिला दो पहाड़ी घोड़ों को हांक रहे हैं, जिन पर चमकीले रंगों के कालीन और गलीचे लदे हैं: लाल, फ़िरोज़ी, नारंगी और काला। महिलाएं गधों को हांक रही हैं जिन पर प्याज से भरे बड़े प्लास्टिक के थैले लदे हैं। चार-पांच साल का एक बच्चा अपने गधों को रास्ते से नीचे ले जा रहा है जबकि एक पुरुष अपने घोड़ों को ऊपर ले जा रहा है। दो लड़कियां अपनी पीठ पर ताज़ी कटी हुई लकड़ी के लट्ठे बांधे हुए हैं और उनकी मुस्कान आधी जिज्ञासु, आधी शर्मीली है।
मैं जेफ, केटी और स्पेरेलो के साथ कदम मिलाकर चल रहा हूँ, जो सबसे आगे हैं। मेरे कदम भी उन्हीं की तरह पक्के हैं, तेज़ और सहज। चट्टान के किनारे पर, मैं एक पत्थर पर खड़ा हूँ जहाँ से गहरी घाटी का नज़ारा दिखता है। आसमान हल्के नीले रंग का है, और एक अकेला पक्षी मेरे सामने से उड़ रहा है। हवा साफ़ और ठंडी है, और सूरज चमकीला लेकिन कोमल है। यह हमारी ट्रेक की शुरुआत के लिए एकदम सही दिन, सही समय और एकदम सही माहौल है।

वास्तविकता सामने आती है

धरापोरी, हुमला, नेपाल के लिए

पहले तो मेरे पैर कांपने लगे। वे थरथरा रहे थे, मानो घबराहट से। सिमिकोट ज़्यादा पीछे नहीं था, और आगे जाकर कैटी, जेफ और स्पेरेलो एक मोड़ पर ओझल हो गए।
जल्द ही, न केवल मेरे पैर बल्कि मेरे कूल्हे और बाहें भी तनाव महसूस करने लगती हैं। मैं एक पेड़ के नीचे एक बड़े पत्थर पर बैठ जाता हूँ। मुझे बस थोड़ी देर आराम करने की ज़रूरत है।
मैं अपनी चिंताओं को दूर करने के लिए सिर हिलाती हूँ। मुझे यकीन है कि कुछ नहीं है। मुझे क्या परेशानी हो सकती है? मैं तो जन्मजात ट्रेकर हूँ। मैं थोड़ा पानी पीती हूँ और अपने अब तक के सभी ट्रेकिंग अनुभवों के बारे में सोचती हूँ। पल्लू और मैंने जिस पुराने बोर्डिंग स्कूल में पढ़ाई की थी, वहाँ भी ट्रेकिंग की थी। बेशक, यह दशकों पहले की बात है, और वहाँ की पहाड़ियाँ बस हल्की ढलान वाली थीं। हाल ही में, मैं अपने छोटे बेटे के साथ घर के पास ट्रेकिंग पर गई हूँ। लेकिन ये ट्रेकिंग बच्चों के लिए एक-दो घंटे की ही थीं। मैं थोड़ा और पानी पीती हूँ, ध्यान रखती हूँ कि ज़्यादा न पी लूँ क्योंकि अभी कई घंटे बाकी हैं। ठीक है। मैंने ज़्यादा ट्रेकिंग नहीं की है, लेकिन ट्रेकिंग मेरा शौक है।
मैंने अपना पानी एक तरफ रख दिया – अब चलने का समय हो गया है। मैं चट्टान से उछल पड़ी, मुझे पूरा यकीन था कि मेरे पैर अब ठीक हैं। मैं पूरी तरह से एकाग्र थी। मुझे पता था कि अगर मैं अपनी गति बढ़ा दूं तो मैं कैटी और बाकी लोगों के साथ पहुँच सकती हूँ। लेकिन कुछ मिनटों बाद, मेरी साँस फूलने लगी और मेरे पैर फिर से काँपने लगे। कोई फायदा नहीं। मुझे रुकना होगा। मैंने एक लंबी, गहरी साँस ली और अपने पैर रास्ते पर जमा लिए। मैंने ऐसा दिखावा किया कि मैं बस आसपास के नज़ारे का आनंद ले रही हूँ, कहीं ऐसा न हो कि हमारे

समूह का कोई मुझे देख ले और सोचे कि मैं क्यों रुक गई हूँ। लेकिन मैं ऐसा दिखावा क्यों कर रही हूँ? किसके लिए? मैं तो अकेली हूँ।
अचानक मुझे एहसास हुआ – मैं पहाड़ों में अकेली हूँ। मुझे नहीं पता कि मैं कहाँ हूँ और मुझे कहाँ जाना चाहिए, और मेरे पास बस कुछ खाने का सामान और थोड़ा सा पानी है। मैं जल्दी से रास्ते पर उतरने लगी – मुझे बाकी लोगों से मिलना था। मेरे जूते सूखी रेत और कंकड़ पर फिसल रहे थे। मैं रुक गई। हकीकत मेरे सामने आ गई। कैटी और बाकी लोग बहुत आगे निकल गए हैं और मैं उनके साथ नहीं मिल पाऊँगी। मुझे वापस जाना चाहिए। मैं मुड़कर पल्लू और बाकी लोगों के पास वापस चढ़ने लगी। लेकिन चढ़ाई पर चलना मुश्किल था और मैं थकना नहीं चाहती थी; अभी ट्रेक में कई घंटे बाकी थे। मैं पास की एक चट्टान पर जाकर बैठ गई।
मेरे भीतर का एक हिस्सा मेरे चारों ओर फैली सुंदरता से अवगत हो जाता है। मेरे सामने, अनंत ढलानें नीले आकाश के बीच भव्य रूप से फैली हुई हैं। फिर भी, मुझे आश्चर्य का कोई भाव नहीं आता। मैं चारों ओर देखता हूँ। मैं कैसे उदासीन रह सकता हूँ? अगर मैं हर पल, हर साँस, हर कदम में खुद को पूरी तरह से डुबो न सकूँ, तो इस यात्रा का क्या अर्थ? शांत हो जाओ, मैं खुद से कहता हूँ। मैं गहरी और धीमी साँस लेता हूँ। मैं खुद को सचेत रहने के लिए मजबूर करता हूँ, हालाँकि मैं जानता हूँ कि जागरूकता, चाँदनी की एक किरण की तरह, कहीं भी रुकने के लिए मजबूर नहीं की जा सकती। मैं आँखें खोलता हूँ और खड़ा हो जाता हूँ। अब सच्चाई का सामना करने का समय है। मेरा मन शांत नहीं है; मैं पहाड़ों में अकेला हूँ; और, स्पष्ट रूप से, ट्रेकिंग मेरे बस की बात नहीं है।
धीरे-धीरे। मैं तब तक धीरे-धीरे चलूंगा जब तक पल्लू और बाकी लोग मेरे पास नहीं आ जाते।
मैंने अपना बैग उठाया। यह एकदम नया था, मेरे जूते, ट्रेकिंग पोल, ट्रेकिंग पैंट, स्मार्ट वूल माउंटेनियरिंग मोज़े और लगभग सारा सामान जो मेरे पास था, सब कुछ नया था। मैंने इन्हें कुछ महीने पहले अमेरिका की यात्रा पर खरीदा था। आउटडोर गियर की दुकान में कस्टमर सर्विस वाले डैन ने लगभग दो घंटे लगाकर मुझे सब कुछ चुनने में मदद की। डैन ने एक-एक करके मेरे बैग चेक किए। उसने मुझे फ्रेंच बूट्स, जर्मन बूट्स, अमेरिकन बूट्स पहनाए। उसने

मुझे बूट्स पहनकर दौड़ने, चलने और कूदने के लिए कहा, जब तक कि मुझे एक ऐसा बूट नहीं मिल गया जो मुझे बिल्कुल सही लगा।
बूट पहने हुए दुकान में कूदते हुए मैंने ज़रूर तमाशा मचाया होगा। मैंने घंटों सबसे बढ़िया और सबसे महंगे सामान का चुनाव किया था, ताकि मेरी ट्रेक में कोई दिक्कत न हो। अब पता चला कि सबसे बड़ी समस्या मेरा शरीर ही है। मैं पल्लू और प्रार्थना को घुमावदार रास्ते पर धीरे-धीरे चलते हुए देखता हूँ। दोनों सहेलियाँ अपने ट्रेकिंग पोल से मुझे हाथ हिलाकर इशारा करती हैं। मैं उनके आने का इंतज़ार करता हूँ। वे मुझसे कुछ नहीं पूछतीं, और मैं उन्हें कुछ नहीं बताता। जल्द ही हम तीनों साथ चलने लगते हैं, हमारे पोल रेतीले रास्ते में धंसते हुए घिसटने लगते हैं। यिंग और छिरिंग हमारे ठीक पीछे चल रही हैं। यिंग का चेहरा उदास है और उसका चोटिल पैर भारी होकर घिसट रहा है।
गाँववाले अपनी बकरियों को चराते हुए गुजर रहे हैं। कुछ बच्चे हमसे आगे निकल जाते हैं और उनकी माताएँ उनके पीछे-पीछे आती हैं। सूरज गुलाबी और चमकीला होता जा रहा है। करनाली नदी का पानी नीचे गरज रहा है। ये वही जादुई जगहें हैं जिन्हें मैंने हवाई जहाज की खिड़की से देखा था। मैं जानती हूँ कि ढलते सूरज की रोशनी में सब कुछ बेहद खूबसूरत लग रहा होगा, लेकिन मुझे सिर्फ अपनी बेबसी का एहसास है। हर कदम पर मैं सोचती हूँ कि पैर कहाँ रखूँ और संतुलन कैसे बनाए रखूँ। मेरी मांसपेशियाँ मुझे रुकने के लिए कह रही हैं। बीच-बीच में मुझे रुकना पड़ता है, साँस लेनी पड़ती है और अपनी घबराहट को काबू में करना पड़ता है।
पहाड़ पर अंधेरा छाने लगता है। छिरिंग अपनी टॉर्च जलाता है और मैं भी अपने बैग में अपनी टॉर्च ढूंढने लगता हूँ। इस यात्रा के लिए मैंने आउटडोर स्टोर से दो टॉर्च खरीदी थीं। एक छोटी चौकोर टॉर्च, जो इलास्टिक बैंड से बंधी होती है, उसे सिर पर बांधा जाता है ताकि हाथ खाली रहें। दूसरी पतली टॉर्च है जिसमें आपातकालीन स्थिति के लिए तेज़ सीटी भी लगी होती है। लेकिन बैग में टॉर्च ढूंढते हुए मुझे एहसास होता है कि मैं दोनों को पैक करना भूल गया हूँ। शायद वे मेरे डफ़ल बैग में ही हैं और याक उन्हें सुरक्षित शिविर स्थल तक ले आए हैं।
‘पल्लू, क्या तुम्हारे पास टॉर्च है?’ मैंने पूछा।
नहीं! मुझे लगता है मैंने अपना सामान डफ़ल बैग में ही छोड़ दिया।

प्रार्थना? यिंग? लेकिन बाकी महिलाएं भी अपनी टॉर्च भूल गई हैं। हम सबको छिरिंग की टॉर्च पर निर्भर रहना पड़ रहा है। वह हमारे लिए रास्ता रोशन करते हुए आगे-पीछे चल रहा है। हम सुरक्षा और रोशनी के लिए एक-दूसरे के करीब रहने की कोशिश करते हुए धीरे-धीरे ढलान से नीचे उतर रहे हैं।
‘जब हम वहां पहुंचेंगे, तो सबसे पहले मैं टॉर्च को अपने बैग में पैक करूंगी!’ पल्लू कहती हैं।
हम कब पहुंचेंगे या पहुंचेंगे भी या नहीं? मैं खुद से यह सवाल पूछता हूं। कुछ मिनट बाद, छिरिंग की टॉर्च टिमटिमाती है। वह उसे हिलाता है और बैटरी के बारे में बड़बड़ाता है। वह शीशे पर हाथ मारता है, लेकिन कोई फायदा नहीं; रोशनी बुझ जाती है। अब हमारे पास कोई चारा नहीं है – हम चांदनी रात में नीचे उतरना शुरू करते हैं। दूर, शिविर की बत्तियाँ हल्की रोशनी बिखेर रही हैं। शिविर तक का रास्ता कितना लंबा है!
जैसे-जैसे हमारी आँखें अंधेरे की आदी होती जाती हैं, हम थोड़ा और संभलकर चलने लगते हैं। हम चुपचाप चलते हैं।
अगर हम लगातार कोशिश करते रहे तो शायद हम सफल हो जाएं, मुझे ऐसा लगता है।
तभी पानी की एक बूंद मेरे गाल पर गिरती है।
‘ऐसा हो ही नहीं सकता!’ प्रार्थना आसमान की ओर देखते हुए कहती है। कुछ ही पलों में बारिश की बूँदें गिरने लगती हैं।
‘अरे यार!’ पल्लू अपना सिर हिलाती है। यिंग और मैं आह भरते हैं।
छिरिंग हमसे बस चलते रहने को कहता है।
कोई भी रेनकोट निकालने के लिए नहीं रुकता। बारिश में ज़मीन फिसलन भरी हो जाती है। मुझे एक छोटे जानवर के हमारे रास्ते से भागने की आवाज़ सुनाई देती है। क्या वह पहाड़ी चूहा है? या साँप? मैं काँप उठता हूँ और चाहता हूँ कि मैं तेज़ी से चल सकूँ। कीचड़ भरे रास्ते और बारिश में सिर्फ़ चाँद और तारों की रोशनी से हमारा रास्ता दिख रहा है, ऐसे में मुझे चारों ओर फैले अँधेरे, खड़ी ढलानों और पहाड़ों से बहती नदी की गर्जना का ज़बरदस्त एहसास हो रहा है।

अन्य यात्राएँ

यह हमारी इस यात्रा का तीसरा प्रयास है। पहला प्रयास तब विफल हो गया जब हैदराबाद से निकलने से पहले ही हमारे समूह के सभी लोग पीछे हट गए। दूसरा प्रयास राजनीति, इतिहास और दुर्भाग्यपूर्ण समय के कारण रद्द करना पड़ा। हम काठमांडू तक पहुँच गए, जहाँ हमारे मार्गदर्शक, सोनम नाम के एक मिलनसार और छोटे कद के व्यक्ति ने हमें हमारे साथी यात्रियों से मिलवाया: दो विनम्र ऑस्ट्रियाई पुरुष, एक सुंदर स्वीडिश महिला और फिजी द्वीप समूह के एक गंभीर और मजबूत कद-काठी वाले भारतीय डॉक्टर, जो कई वर्षों से इस यात्रा की योजना बना रहे थे। एक शाम, गर्म चाय पीते हुए, सोनम ने बताया कि चीनी अधिकारियों ने तिब्बत के सभी परमिट रद्द कर दिए हैं।
उस वर्ष तिब्बत की शांतिपूर्ण मुक्ति के लिए सत्रह सूत्री समझौते पर हस्ताक्षर की 60 वीं वर्षगांठ थी। यह समझौता 1951 में हुआ था, चीनी सेना द्वारा तिब्बत पर आक्रमण करने के एक वर्ष बाद। चीनियों के लिए यह मुक्ति थी, लेकिन तिब्बतियों के लिए यह कब्ज़ा था। समझौते पर तिब्बती प्रतिनिधि और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की केंद्र सरकार ने हस्ताक्षर किए थे। लेकिन तिब्बतियों ने समझौते की वैधता पर सवाल उठाते हुए दावा किया कि इस पर अनधिकृत प्रतिनिधियों द्वारा दबाव में हस्ताक्षर किए गए थे। चूंकि यह समझौता तिब्बत पर चीन के अधिकार को सही ठहराने का एक महत्वपूर्ण साधन था, इसलिए यह एक बेहद संवेदनशील मुद्दा था। राजनीतिक तनाव चरम पर था, और 60 वीं वर्षगांठ सागा दावा त्योहार के साथ मेल खा रही थी।
हमें कैलाश पर्वत की तलहटी में स्थित एक पवित्र स्थान दारपोचे में सागा दावा मनाना था। तिब्बती चंद्र कैलेंडर के चौथे महीने की पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला सागा दावा, बुद्ध शाक्यमुनि के जन्म, ज्ञान प्राप्ति और मृत्यु की याद में मनाया जाता है और तिब्बती बौद्ध धर्म के सबसे पवित्र दिनों में से एक है। कैलाश के दारपोचे में सागा दावा का उत्सव प्रसिद्ध है। वहां उत्सव, मंत्रोच्चार, प्रार्थना करते भिक्षुओं की कतारें और पूरे

तिब्बत से उमड़ी भीड़ होती है - इतनी भीड़ कि उसे नियंत्रित करना और निगरानी करना असंभव होता है। इस अनिश्चित स्थिति में, चीनी अधिकारियों ने किसी भी विदेशी पर्यटक को प्रवेश नहीं दिया। मुझे पता था कि काठमांडू में हमारे जैसे कई लोग इंतजार कर रहे होंगे।
जब हमने यह खबर सुनी, तो सब लोग सदमे में थे। सोनम ने हमें बताया कि हमारे पास कई विकल्प हैं: हम अपनी यात्रा रद्द कर सकते हैं, नेपाल में कोई दूसरा गंतव्य चुन सकते हैं, या कैलाश जाने के लिए कोई दूसरा रास्ता चुन सकते हैं। लेकिन कैलाश जाने का मतलब था कि टूर कंपनी हमारे पासपोर्ट काठमांडू में रखेगी ताकि संशोधित तिथियों के साथ नए परमिट के लिए दोबारा आवेदन किया जा सके। इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि ये परमिट मिल ही जाएंगे, और उन कुछ हफ्तों तक हमें नेपाल में बिना पासपोर्ट के ही यात्रा करनी पड़ेगी।
हमने दूसरे विकल्पों पर चर्चा की। मुस्तांग का साम्राज्य और खूबसूरत अन्नपूर्णा सर्किट भी थे। लेकिन फिजी द्वीप समूह के डॉक्टर ने आखिरकार अपनी बात रखी। वे झील और पहाड़ देखने आए थे और हार मानने को तैयार नहीं थे। बाकी लोग भी यही सोच रहे थे। लेकिन पल्लू और मैं पासपोर्ट या परमिट के बिना यात्रा करने का जोखिम नहीं उठाना चाहते थे। यह तय हुआ कि बाकी लोग अपना जोखिम उठाएंगे और मैं और मेरा चचेरा भाई घर लौटेंगे। चाय की चुस्की लेते हुए मुझे पल्लू और खुद पर तरस आया और बाकी लोगों पर बेवजह गुस्सा आया कि उन्होंने हमें छोड़कर जाने का फैसला किया।
अगले दिन, पल्लू और मैं भारत वापस जाने वाली फ्लाइट में सवार हो गए। हमने सोचा कि मानस – जो हमने यात्रा और झील दोनों को दिया था – आखिरकार हमेशा के लिए हमारे पीछे छूट गया है। हालांकि, हमारी निराशा के साथ-साथ राहत की भावना भी थी।
कुछ सप्ताह बाद, अगस्त की शुरुआत में, ट्रैवल कंपनी ने पल्लू को फोन किया। एक और समूह हुमला होते हुए कैलाश और मानसरोवर जा रहा था। सूचना बहुत कम समय की थी और पंजीकरण बंद होने वाले थे, लेकिन क्या हमें इसमें दिलचस्पी थी? हमने तुरंत पंजीकरण करा लिया।
हमारी तेलुगु संस्कृति में, बुजुर्गों का मानना है कि किसी पवित्र स्थान की यात्रा तभी संभव है जब यात्री को ईश्वर का बुलावा हो। उस बुलावे के बिना, इच्छा, प्रयास या भाग्य का कोई महत्व नहीं। जब हमने दोबारा अपना

□□□□□□ □□□□ □□□□□, □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□

पहला शिविर

Dharapori, Humla, Nepal

ऊंचाई ~ 2,300 मीटर

धरपोरी शिविर स्थल करनाली नदी के किनारे एक घाटी में स्थित है। पथरीले पहाड़ी रास्ते के बाद, नदी किनारे की नरम, घासीली ज़मीन पर मेरे जूते धंसते देखकर अजीब सा लगता है। मुझे पास ही करनाली नदी की आवाज़ सुनाई दे रही है, लेकिन अंधेरे में पानी दिखाई नहीं दे रहा। बारिश रुक चुकी है। तंबू नीले त्रिकोण की तरह दिख रहे हैं, आसमान में हल्के-हल्के तारों की छाया है। पल्लू और मैं भोजन कक्ष में रखी तह कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। यिंग मुस्कुराने की कोशिश करती है, लेकिन उसकी मुस्कान बनावटी लगती है। कोई हमें खाने की थालियाँ देता है और हम बिना उत्साह के खाते हैं। प्रार्थना बेसुध सी आगे देखती रहती है। जेफ, केटी और स्पेरेलो घंटों पहले ही आ चुके हैं, इसलिए वे हमारा ख्याल रख रहे हैं।
‘इसे पी लो,’ स्पेरेलो ने कहा और प्रार्थना के सामने एक प्याला रख दिया। ‘इससे तुम्हें अच्छा लगेगा।’ प्रार्थना एक जोशीली, सुगठित और मजबूत चेहरे वाली महिला है। उसकी कमजोरी का एहसास उसके शारीरिक व्यक्तित्व से मेल नहीं खाता। फिर भी उसमें थोड़ी सी कोमलता है, जिसे वह अच्छी तरह छिपाकर रखती है, हालांकि स्पेरेलो को इसका पहले ही आभास हो चुका है।
मैं अपनी सीट पर धंस गया और गहरी सांस ली। किसी ने हमें बताया नहीं था। किसी ने हमें यह नहीं बताया था कि जब आप घंटों चलते हैं, तो आपका शरीर एक बोझ बन जाता है जिसे आप ढोते हैं। आपकी हड्डियां आपको नीचे खींचती हैं, आपकी मांसपेशियां खिंचाव और संकुचन के दर्द से भरी होती हैं। आपका शरीर इतना तीव्र हो जाता है कि उसमें किसी और चीज के लिए जगह नहीं बचती - न तो उस जगह की सुंदरता, न ही साथ का सुकून, और न ही यात्रा का रोमांच।
घोर अंधेरे में सब कुछ शत्रुतापूर्ण और भयावह लगता है - खच्चरों की स्थिर आकृतियाँ, जमीन पर लेटे एक विशाल कुत्ते की आकृति, जिसकी चौकस चमकती आँखें

हैं, यहाँ तक कि नदी की आवाज़ भी शत्रुतापूर्ण लगती है, उसकी गड़गड़ाहट एक दबी हुई धमकी जैसी लगती है।
मैं यह ट्रेक जारी नहीं रख सकती। मैं क्या सोच रही थी? शुरू से ही हरि मेरे फैसले से असहज था। क्या उसे पता था कि मैं कितनी कम तैयार थी? क्या उसने अंदाज़ा लगाया था कि यह कितना मुश्किल होगा? जब हमने इस यात्रा के लिए साइन अप किया था, तब मुझे ज़रा भी घबराहट या संदेह नहीं था। मेरे आत्मविश्वास ने मुझे इस यात्रा को गंभीरता से लेने से रोक दिया था। लेकिन अब मुझे यह देखकर हैरानी हो रही है कि पल्लू और मैं कितनी अस्वस्थ हैं। हमारा वज़न ज़्यादा है। दो सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद ही हमारी साँस फूल जाती है। मैं चालीस साल की हो चुकी हूँ और मुझे हाई ब्लड प्रेशर की समस्या है। फिर भी, हम दोनों ने मन ही मन सोचा था कि हम ऐसे साहसी हैं जो तिब्बत के पहाड़ों को बिना पसीना बहाए फतह कर सकते हैं।
‘मुझे नहीं लगता कि हम यह कर सकते हैं, पल्लू,’ मैं कहती हूं, जब हम अपने तम्बू की ओर चल रहे होते हैं।
‘बिल्कुल नहीं!’ वह सिर हिलाते हुए बोली। ‘चलो सिमिकोट वापस चलते हैं। वहाँ उतरने वाले अगले विमान से हम वापस आ सकते हैं।’
हम छिरिंग को खुशखबरी देने के लिए क्रू टेंट की ओर चल पड़े। मैं मन ही मन गाने लगी, हम घर जा रहे हैं! मैंने कल्पना की कि मैं अपने बिस्तर पर गिर रही हूँ और मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे गर्म, मुलायम कंबल मेरे चारों ओर लिपटे हों।
पल्लू रुककर कहता है, 'लेकिन एक समस्या है।'
'क्या?'
इसका मतलब है कि कल हमें पूरा रास्ता पैदल ही वापस चढ़ना होगा।
मैं घंटों की थका देने वाली पहाड़ी चढ़ाई और मांसपेशियों में होने वाले दर्द की कल्पना करता हूँ। मेरा दिल बैठ जाता है।
हम वहां कभी नहीं पहुंच पाएंगे। यह नामुमकिन है!
अब सिर्फ एक ही रास्ता बचा है।
जब हमें छिरिंग मिल जाएगा, तो हम उससे मांग करेंगे कि वह हमें हवाई मार्ग से सुरक्षित स्थान पर वापस ले जाए।
हमने उससे कहा, 'आपातकालीन सेवाओं को कॉल करें।'

चूंकि हुमला के इन दूरस्थ इलाकों में सेल फोन का सिग्नल नहीं आता, इसलिए हम उनसे सैटेलाइट फोन का इस्तेमाल करने के लिए कहते हैं।
छिरिंग ने हल्के से कंधे उचकाते हुए कहा कि सैटेलाइट फोन काम नहीं कर रहा है।
‘आपातकालीन सैटेलाइट फोन काम क्यों नहीं कर रहा है? यह तो आपात स्थितियों के लिए है,’ मैंने कहा।
‘अगर कुछ हो जाए तो क्या होगा?’ पल्लू पूछती है।
छिरिंग ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'कुछ नहीं होगा।' उसके बड़े-बड़े गालों पर हल्की सी मुस्कान फैल गई। उसकी शांत और हंसमुख अदा, जो कभी आश्वस्त करने वाली थी, अब भयावह लग रही थी।
‘अगर कुछ हो जाए तो क्या होगा? अगर कोई आपात स्थिति आ जाए तो क्या होगा?’ पल्लू लगातार पूछता रहता है।
‘यहां फोन काम नहीं कर रहा है। बाद में काम करने लगेगा। कल देखते हैं,’ यह कहकर वह रसोइए से बात करने के लिए जल्दी से चला गया।
हम अपने तम्बू में जाते हैं।
‘कल हम हेलीकॉप्टर बुलाएंगे,’ मैं पल्लू से कहता हूं, और अपने स्लीपिंग बैग में घुस जाता हूं।
‘हमने कभी सोचा भी कैसे था कि हम ऐसा कर पाएंगे?’ वह कहती हैं।

एक और दिन

सल्ली खोला, हुमला, नेपाल के लिए

सुबह की यही खासियत है – सूरज सब कुछ बदल देता है। कल रात जो कुत्ता इतना डरावना लग रहा था, अब दोस्ताना लग रहा है और दानों की तलाश में मंडरा रहा है। खच्चर छोटे लग रहे हैं और आराम से अपना चारा चबा रहे हैं। नदी जीवन से भरपूर है। करनाली नेपाल की सबसे लंबी नदी है, जो मानसरोवर झील क्षेत्र से शुरू होकर भारत में गंगा नदी में मिल जाती है। कभी पन्ना जैसी, कभी फ़िरोज़ी, यह हीरे की तरह चमकती है। छिरिंग का दल नाश्ता तैयार करने और खच्चरों पर सामान लादने में व्यस्त है। शिविर स्थल के पास एक घर की बालकनी से एक नाज़ुक, सुंदर लड़की झाँक रही है। हम जेफ़ और स्पेरेलो को उसकी तस्वीरें खींचते हुए चिढ़ाते हैं। दलिया और जैम का नाश्ता भी स्वादिष्ट लग रहा है। पिछली रात के सारे दर्द और डर धुल गए हैं।
पल्लू और मैंने सैटेलाइट फोन का ज़िक्र दोबारा नहीं किया। क्या वह सचमुच खराब हो गया था? शायद। या हो सकता है छिरिंग ने हम जैसे यात्रियों को पहले भी देखा हो और वह जानता हो कि हमें बस एक नए दिन की रोशनी देखने की ज़रूरत है।
पास ही में एक जर्मन दंपति डेरा डाले हुए हैं। मैरिएन और स्टीफन भी कैलाश और मानसरोवर की यात्रा पर हैं। उनका शिविर हमारे शिविर के किनारे पर है और उनका रास्ता हमारे रास्ते का अनुसरण करेगा। स्टीफन के चेहरे पर कोमलता है; मैरिएन के चेहरे पर तीक्ष्णता है। वे एक-दूसरे की संगति में ही प्रसन्न प्रतीत होते हैं। हमें पता चलता है कि वे जर्मनी के ग्रामीण इलाके में एक पहाड़ी पर स्थित अपने फार्म में कुत्ते पालते हैं। वे बताते हैं कि उन्हें कुत्ते बहुत प्यारे हैं और उनका घर जानवरों से भरा हुआ है। भारत में मेरे गृहनगर की भागदौड़ भरी जिंदगी से आने के बाद, जहाँ हमारा दिन पारिवारिक भोज, शादियों और सामाजिक समारोहों से भरा रहता है, दूर पहाड़ी पर स्थित एक

विशाल फार्म में केवल जानवरों के साथ उनका जीवन एक साथ शांत और एकांतपूर्ण लगता है। वे दोनों अपने रसोइए और सहायक के साथ निकल पड़ते हैं।
हम हुमला की ढलानों पर चढ़ना शुरू करते हैं। हम छोटी-छोटी बस्तियों से गुज़रते हैं जहाँ चमकीले, फटे-पुराने कपड़े पहने बच्चे उत्साह से हमारी ओर दौड़ते हुए 'पेन!' 'पेन!' 'पेन!' माँगते हैं। यहाँ के लोग दुबले-पतले और झुर्रियों से झुलसे हुए हैं। कुछ हमें देखकर मुस्कुराते हैं, तो कुछ अपने मिट्टी और पत्थर से बने छोटे-छोटे, घास-फूस से ढके घरों से संभलकर देखते हैं। छोटे कुत्ते, मुर्गियाँ और नन्हे बच्चे छतों पर धीरे-धीरे चलते हैं और हमें नीचे घूरते हैं। उनके घर, उनका जीवन, पहाड़ों की तेज़ हवाओं के सामने बेहद कमज़ोर लगता है।
दो हट्टे-कट्टे नौजवानों ने हमें हाथ हिलाकर अभिवादन किया। उन्होंने पूछा, 'भारत? भारत?'
‘हां, भारत!’ मैंने हाथ हिलाकर जवाब दिया।
वे हिंदी में पूछते हैं, 'भारत में कहाँ?'
मैं कहता हूँ, 'हैदराबाद।' वे इसके बारे में नहीं जानते होंगे। भारत के बारे में सोचते ही लोगों के दिमाग में आने वाला पहला या पाँचवाँ शहर भी हैदराबाद नहीं है।
उनकी मुस्कान और चौड़ी हो जाती है। 'मैं हैदराबाद को जानता हूँ! आप तेलुगु जानते हैं?'
मैं उन्हें देखता रहता हूँ, समझ नहीं आता कि क्या कहूँ।
वे तेलुगु में पूछते हैं, 'आपका नाम क्या है?'
मैं इतना हैरान हूँ कि जवाब नहीं दे पा रहा। मेरे घर से सैकड़ों मील दूर, इस सुदूर स्थान पर रहने वाला कोई व्यक्ति मेरी भाषा कैसे जान सकता है? मेरी हैरानी देखकर वे हंस पड़ते हैं। वे बताते हैं कि उन्होंने विशाखापत्तनम के तेलुगु बंदरगाह शहर में गोरखा के रूप में काम किया था। नेपाली सैनिक गोरखाओं ने अपनी बहादुरी और कौशल से ब्रिटिश राज को इतना प्रभावित किया था कि भारतीय सेना में उनकी अपनी रेजिमेंट थी: प्रसिद्ध गोरखा राइफल्स। नेपाली पुरुष आज भी वीर गोरखा सैनिकों से जुड़े हुए हैं और अक्सर सुरक्षा गार्ड के रूप में काम करते हैं। भारत में, मैंने अनगिनत वर्दीधारी गोरखाओं को चुपचाप शॉपिंग मॉल की रखवाली करते या घरों के सामने स्टूल पर सुस्त बैठे देखा है।

वे कुछ देर मेरे साथ चलते हैं, फिर हाथ हिलाकर बड़े ही खुशमिजाज अंदाज़ में चले जाते हैं – पहाड़ों में बसे हुए नौजवान। भारत में, हुमला के ये दोनों आदमी शायद बाकी गोरखाओं की तरह ही थे – शांत, आज्ञाकारी, लगभग अदृश्य। लेकिन यहाँ, वे पहाड़ों के असली आदमी हैं, ढलानों पर टहलते हुए, हँसते हुए, पूरे आत्मविश्वास से भरे हुए।
हम करनाली नदी पर बने एक संकरे स्टील के पुल को पार करके दूसरी ओर की ढलानों पर चढ़ते हैं। हम हरे-भरे घास और चीड़ के पेड़ों की कतारों से ढके पहाड़ी इलाकों से गुज़रते हैं। मैं अपने चेहरे पर उन ऊंचे झरनों का ठंडा पानी छिड़कता हूँ जो घूंघट की तरह नीचे गिरते हैं।
हमारा रास्ता एक चट्टान के किनारे पर बनी संकरी सुरंग जैसा बन जाता है, जिसका एक सिरा गहरी खाई की ओर खुलता है। ज़रा सी भी चूक मुझे मौत के मुंह में धकेल सकती है। मैं चट्टान के किनारे से जितना हो सके सटकर चलती हूँ, और नीचे देखने से बचने की पूरी कोशिश करती हूँ। जैसे ही पल्लू और मैं इस ऊबड़- खाबड़ रास्ते से बाहर निकलते हैं, जेफ़ कहता है, 'मुस्कुराओ!' वह हम सबकी तस्वीरें खींचता है - क्लिक, क्लिक। जेफ़ समूह का सबसे फुर्तीला सदस्य है। वह इधर-उधर भागता रहता है, तस्वीरें खींचता है, चट्टानों पर आराम करता है, छोटी-छोटी धाराओं में अपने पैर भिगोता है। यह सफ़र उसके लिए उतना ही आसान है जितना हमारे लिए।
पल्लू और मैंने यात्रा की तैयारी के लिए कई तरह की सलाहें सुनी थीं। तीर्थयात्रियों ने कहा था कि हमें बस शिव में आस्था रखनी है। ट्रैवल एजेंसी ने कहा कि हमें शारीरिक रूप से फिट रहना चाहिए और तैयारी के लिए अभ्यास करना चाहिए, साथ ही यह भी कहा कि ऊंचाई का बहुत असर होता है और कोई भी अभ्यास हमें इसके लिए तैयार नहीं कर सकता। एक दोस्त ने हमें दवा लेने की सलाह दी - एक मूत्रवर्धक दवा, हालांकि उसने यह भी माना कि इससे ऊंचाई पर होने वाली बीमारी से बचाव की कोई गारंटी नहीं है। किसी ने कहा कि योग हर चीज के लिए सबसे अच्छा प्रशिक्षण है। मैंने अपनी योगा डीवीडी लगाई और तरह-तरह के आसन किए। फिर, खुद से यह पूछने के बाद कि पहाड़ों में ये आसन मेरी कैसे मदद करेंगे, मैंने डीवीडी बंद कर दी। किसी और ने फेफड़ों की क्षमता बढ़ाने के लिए प्राणायाम करने का सुझाव दिया। ट्रेक से दो हफ्ते पहले हमने खूब जोर-जोर से सांस ली और धीरे-धीरे प्राणायाम किया।

किए हुए सूटकेस बिस्तर पर खुले पड़े थे। अलमारी का बायां हिस्सा उसके पास था और दायां मेरे पास, लेकिन अब हम इन सबको कैसे अलग करते? उसने बैंगलोर में एक सुंदर टॉप खरीदा था, लेकिन उसे पहनने का काम मेरा था। मेरे पास एक रिकॉर्ड था, लेकिन उसे सुनने का काम उसका था। किसे क्या मिलेगा? उन खुले सूटकेसों की अनिश्चितता और अंतिम विदाई ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि जीवन में हमारे लिए आगे क्या होने वाला है। हमारे साथ बिताए पलों को संजोने का कोई न कोई तरीका तो होना ही चाहिए।
मैंने पूछा, 'मानस का क्या हुआ?'
पल्लू का चेहरा खिल उठा। 'हाँ! मानस। हमें यह करना ही होगा।'
हमने अपनी यात्रा के लिए आवश्यक चीजों की सूची बनाना शुरू कर दिया।
मैंने कहा, 'बूट्स।'
'हां,' उसने कहा, 'और दस्ताने भी।' मैंने सिर हिलाया, जिससे मेरे सीधे बाल, जो हमेशा मेरे चेहरे को आधा ढके रहते थे, उछल पड़े।
ऊनी कोट, दवाइयाँ, मोज़े। और सेफ्टी पिन। उस छोटी सी चीज़ - सेफ्टी पिन - ने सूची और यात्रा को गंभीरता और उद्देश्य से भर दिया। मैंने उस सूची को अपनी अलमारी के एक दराज में रखा जहाँ मैं कुछ और गुप्त चीज़ें रखती थी: गहने, हरि के पत्र (हालाँकि तब मुझे नहीं पता था कि कुछ साल बाद मैं उससे शादी करूँगी), तस्वीरें, एक डायरी। समय बीतने के साथ, वह सूची मुझसे खो गई। जब आखिरकार मैंने मानस के लिए पैकिंग शुरू की, तो मैंने ट्रैवल एजेंट द्वारा भेजी गई एक नई सूची का इस्तेमाल किया। उसमें सेफ्टी पिन का ज़िक्र नहीं था, लेकिन फिर भी मैंने कुछ सेफ्टी पिन रख लीं।

पाठकों

सल्ली खोला, हुमला, नेपाल के लिए

पहाड़ों को देखकर ऐसा लगता है मानो किसी कलाकार ने उन्हें बेहिसाब आज़ादी से चित्रित किया हो। ढलानों पर लाल जौ और पीली सरसों के सीढ़ीदार खेत हैं, जिनके चारों ओर गहरे हरे रंग की झाड़ियाँ हैं। खेत किसी कढ़ाईदार स्कर्ट पर बने आधे-गोलाकार डिज़ाइनों की तरह दिखते हैं। दूर एक खेत में जौ काटकर एक बड़ी चादर पर ढेर बनाकर रखा गया है। एक आदमी चादर के एक छोर पर बैठा है, जबकि एक औरत और बच्ची, शायद उसकी पत्नी और बेटी, दूसरे छोर पर बैठी हैं। बच्ची ऊपर देख रही है। हालाँकि मैं उसका चेहरा नहीं देख पा रही हूँ, लेकिन उसकी निगाहों में छिपी जिज्ञासा को महसूस कर सकती हूँ। हम धूप में चरती पहाड़ी बकरियों के झुंड और एक पेड़ के पास कुछ पौधों को खींचती याक के पास से गुज़रते हैं। आगे एक जगह पत्थरों से चिह्नित की गई है, जबकि दो खंभों पर प्रार्थना झंडों की रस्सियाँ हवा में लहरा रही हैं - जो एक पवित्र स्थान का संकेत देती हैं। हल्के नीले आसमान में बादल टेढ़ी-मेढ़ी, धुंधली रेखाएँ बना रहे हैं, और दूर जाकर भूरे रंग की, घनी बारिश में विलीन हो जाते हैं। जैसे ही मैं खड़ी ढलान पर चढ़ने लगा, मुझे स्पेरेल्लो को देखकर आश्चर्य हुआ। उनका कैमरा उनके कंधे पर झूल रहा था और उनकी छड़ी ज़मीन में धंस रही थी। उनकी चाल असामान्य रूप से धीमी थी। उन्होंने मुझे बताया कि काठमांडू से ही उनकी बाईं एड़ी में दर्द हो रहा है।
‘तुम्हें चिंता हो रही होगी!’ मैंने कहा।
'हां,' वह कंधे उचकाते हुए अपनी छड़ी को थोड़ा हिलाता है। 'इससे बहुत मदद मिलती है।'
स्पेरेलो की बहन फ्लेविया भी उसी दर्द से पीड़ित है और अब अपनी पसंदीदा सैर पर नहीं जा सकती। वह अपने दर्द को फ्लेविया का दर्द समझता है। यह सोचकर कि वह अपनी बहन का दर्द सह रहा है, उसे अपना दर्द सहने में आसानी होती है। उसे उम्मीद है कि कैलाश में अपना साझा दर्द लाने से यह दर्द दूर हो जाएगा।

उनकी दूसरी बहन अन्ना ने एक सफेद लिफाफे में एक काला रिबन रखा है जिस पर एक अदृश्य संदेश लिखा है और उनसे कहा है कि वे इसे कैलाश पर्वत पर किसी पत्थर के नीचे छोड़ दें। यादगार के तौर पर वह पर्वत से एक छोटा पत्थर चाहती हैं। उनके दोस्त को उन जगहों का नमक चाहिए जो इसके लिए प्रसिद्ध हैं, और उनकी पत्नी कार्ला ने एक शॉल मांगा है। स्पेरेलो कहते हैं कि उनकी यह यात्रा उम्मीदों से भरी है।
मैंने उनसे पूछा, 'यह पर्वत ही क्यों?' उन्होंने जवाब दिया, 'भारत में तो हर कोई कैलाश पर्वत के बारे में जानता है क्योंकि यह शिव का स्थान है, लेकिन इटली में आपको और आपके परिवार को इसके बारे में कैसे पता चला?'
उन्होंने कहा कि उन्हें कैलाश पर्वत पर लिखी एक किताब से प्रेरणा मिली। मैंने उनसे कहा कि मुझे भी पढ़ना बहुत पसंद है।
मैं उसे यह नहीं बताती कि मैं पहले एक लालची पाठक हुआ करती थी। मेरी कार में हमेशा एक किताब पड़ी रहती थी। जब भी मैं लाल बत्ती पर गाड़ी रोकती, चाहे एक-दो मिनट के लिए ही क्यों न हो, मैं उसे उठा लेती थी। फिर बत्ती हरी हो जाती और मेरे पीछे वाली गाड़ियाँ हॉर्न बजाने लगतीं। एक किताब बाथरूम के लिए होती थी, और तीसरी मेरे बिस्तर के पास वाली मेज पर। मैं एक ही झटके में पढ़ती रहती थी, और साथ ही अपनी सूची में अगली किताब के बारे में सोचती रहती थी।
एक दिन मैं ऊपर अपनी बालकनी में बैठी गरमा गरम चाय की चुस्की लेते हुए किताब पढ़ रही थी। सर्दी का दिन था, हल्की ठंड और धूप, जैसा कि हैदराबाद में अक्सर सर्दियों के दिन होते हैं। जब मैं एक ऐसे अंश को पढ़ रही थी जिसमें एक महिला अपने बगीचे में चाय पी रही थी, तो मुझे उसकी चाय का स्वाद महसूस हुआ और वह मेरी चाय से कहीं बेहतर थी। मुझे उसकी त्वचा पर हवा का झोंका महसूस हुआ और उसके बगीचे की रंग-बिरंगी सुंदरता ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। उसका जीवन कितना जीवंत लग रहा था! उसकी सारी संवेदनाएँ, विचार और भावनाएँ इतनी जीवंत लग रही थीं, जबकि मेरी भावनाएँ नीरस और साधारण सी थीं। मैंने किताब नीचे रख दी। मैंने चाय की चुस्की ली और आँखें बंद कर लीं, उसकी गर्म, मीठी मिठास का स्वाद अपनी जीभ पर महसूस किया। मैं बालकनी में गई और अपने बगीचे को देखने लगी। विशाल, पुराने पेड़ एक छतरी की तरह फैले हुए थे, कैक्टस के फूल बड़े-बड़े पत्थरों के चारों ओर उगे हुए थे, और बोगनविलिया धूप में पारदर्शी गुलाबी कागज़ की पंखुड़ियों की तरह लग रही थी। मेरी

दुनिया की सुंदरता मुझसे दूर हो गई, जबकि किताब के पन्नों में बसी दुनिया की सुंदरता मुझे अपनी दुनिया से कहीं ज़्यादा वास्तविक, कहीं ज़्यादा सुंदर, कहीं ज़्यादा जीवंत महसूस हुई। मैं एक परोक्ष जीवन जी रही थी।
कुछ समय के लिए मैंने पढ़ना छोड़ दिया। जब मैंने दोबारा पढ़ना शुरू किया, तो मैंने हर किताब का सम्मान किया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि किसी ने इसे लिखने में घंटों बिताए हैं, क्रियाओं और जटिल वाक्यों को लेकर खुद को परेशान किया है। किसी ने खुद को कागज़ पर उतारा है, उपहास के लिए खुला छोड़ दिया है। किसी ने मुझसे कहीं अधिक साहस दिखाया है। हर किताब मेरे लिए उत्तम शराब की एक घूंट की तरह थी, जिसका मैंने बिना जल्दबाजी किए आनंद लिया। अब, जब भी मैं कोई किताब शुरू करता हूँ, मैं उसे पूरी तरह से अनुभव करना चाहता हूँ, यह ध्यान में रखते हुए कि वास्तविक अनुभव हमेशा पढ़ी जा रही कहानी से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होता है।
जब पल्लू और मैं इस यात्रा की योजना बना रहे थे, तब मैं हुमला और कैलाश के बारे में लिखी हर चीज़ पढ़ना चाहती थी। मैं हर तस्वीर देखना चाहती थी। मैं झील और पहाड़ पर एक किताब साथ ले जाना चाहती थी और यात्रा के दौरान उसे पढ़ना चाहती थी। लेकिन फिर मैंने इनमें से कुछ भी न करने का फैसला किया। मैं इस यात्रा को नए नज़रिए से देखना चाहती थी। मैं ठंड को महसूस करना चाहती थी, बिना उसके बारे में पढ़े। आसमान का नीला रंग, पानी पर लहरें, घास पर ओस की बूँदें: मैं उन्हें पहले खुद देखना चाहती थी।
हम एक ऊँचाई पर पहुँचते हैं और पहाड़ के दूसरी ओर मुड़ जाते हैं। रास्ता ढलान वाला है, लेकिन मुझे संदेह है कि इससे स्पेरेल्लो के पैर को कोई आराम मिलेगा।
मैंने उनसे कहा, 'मैंने इटालियन लेखकों की कोई किताब नहीं पढ़ी है। क्या आप कुछ किताबें सुझा सकते हैं? लेकिन वे अनुवादित होनी चाहिए।'
‘अच्छे इतालवी लेखक। हम्म, बहुत सारे हैं। लेकिन अनुवादकों के बारे में मुझे पक्का पता नहीं,’ स्पेरेल्लो कहते हैं। सोचते-सोचते उनके कदम धीमे हो जाते हैं।
अंत में, वह पूछता है, 'क्या आपने बैरन इन द ट्रीज़ पढ़ी है?'
नहीं। यह किस बारे में है?
‘यह एक ऐसे बैरन की कहानी है जो पेड़ों पर रहने का फैसला करता है। यह उसके जीवन के बारे में है।’

‘यह तो दिलचस्प लग रहा है,’ मैंने कहा। यह काफी विचित्र लग रहा है और मैं इसे पढ़ने के लिए बेताब हूँ। मुझे उनकी सिफारिश की मौलिकता से बहुत प्रभावित हुआ हूँ।
‘हाँ, यह बहुत अच्छा है।’ स्पेरेल्लो सिर हिलाता है। ‘यह प्रसिद्ध है।’ वह अपनी ट्रेकिंग पोल को ज़मीन में गाड़ता है। ‘क्या आपने दांते के बारे में सुना है?’
‘आपका मतलब दांते की डिवाइन कॉमेडी से है?’
'हाँ।'
'बिल्कुल!'
स्पेरल्लो मुस्कुराते हैं। 'वह मेरे पूर्वज हैं।'
मैं रुककर देखने लगा। 'क्या दांते एलिघिएरी आपके पूर्वज हैं?'
'हाँ।'
'बहुत खूब!'
मुझे आश्चर्य होता है कि क्या स्पेरेलो को पता है कि डिवाइन कॉमेडी की मूल पांडुलिपि मुंबई स्थित एशियाटिक सोसाइटी में है। यह पांडुलिपि उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में बॉम्बे के ब्रिटिश गवर्नर माउंटस्टुआर्ट एल्फिंस्टन द्वारा सोसाइटी को भेंट की गई थी। मुंबई में मैं अक्सर एशियाटिक सोसाइटी के पास से गुजरता था और दांते तथा उस पुरानी पांडुलिपि के बारे में सोचता था जिसने इटली से भारत तक का सफर तय किया था। मैं स्पेरेलो को देखकर मुस्कुराता हूँ। दुनिया में हर कोई अप्रत्याशित तरीकों से एक दूसरे से जुड़ा हुआ है।

करनाली नदी के किनारे

सल्ली खोला, हुमला, नेपाल

ऊंचाई ~ 2,800 मीटर

मैं घंटों से यही कर रहा हूँ। कदम-कदम, खंभे गाड़ते हुए, कदम-कदम। पिछले एक घंटे में रास्ता सूखा और कंकड़दार होता जा रहा है। लगभग शाम हो चुकी है और पल्लू और मुझे अब तक शिविर स्थल पर पहुँच जाना चाहिए था। मैं कल्पना कर रहा हूँ कि स्पेरेलो, केटी और जेफ शिविर स्थल पर चाय की चुस्की लेते हुए आराम कर रहे होंगे। खुले मैदान से मुझे नदी दिखाई दे रही है। यह करनाली नदी की एक शाखा है, सल्ली खोला, और यह धूसर रंग की दिखती है और सफेद झाग उछालती है। मैं इसकी गर्जना सुन सकता हूँ। इसके पीछे, पेड़ों के झुंड से आधा छिपा हुआ, हमारा शिविर स्थल है। यह बहुत दूर नहीं लगता, लेकिन मेरी गति से वहाँ पहुँचने में एक या दो घंटे लग सकते हैं।
हमारी टीम की एक आदिवासी महिला अपने घोड़े को पीछे खींच रही थी। पल्लू और मैं फिसलन भरे रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे, तभी वह महिला अधीर हो गई। उसने कुछ कहा, सिर हिलाया और हमें अपने हाथ बढ़ाए। पल्लू और मैंने उसके दोनों हाथ थाम लिए। वह तेज़ी से चलने लगी और हमें अपने साथ ले जाने लगी, उसकी पकड़ भरोसेमंद और मज़बूत थी। देखते ही देखते हम इतनी दूरी तय कर चुके थे, जिसे तय करने में हमें तीन गुना ज़्यादा समय लगता। शायद इतनी आसानी से उतरने का राज़ उस महिला के हाथों में था। उन्होंने हमें आत्मविश्वास दिया और हमें इस चिंता से मुक्त कर दिया कि अगला कदम कहाँ रखें। जब हम नदी के किनारे पहुँचे, तब भी दिन का उजाला था।
महिला ने सिर हिलाकर हमारा हाथ छोड़ दिया और अपने घोड़े की लगाम खींची। पल्लू और मैं पुल पार करके सल्ली खोला स्थित शिविर स्थल पर पहुँचे, जहाँ छिरिंग के दल ने पहले ही तंबू लगा रखे थे। मैं एक कुर्सी पर बैठ गया।
बिस्कुट की एक थाली रखी हुई थी। एल्युमिनियम के मगों में गरमागरम चाय से भाप निकल रही थी।

‘मुझे बस इसी की जरूरत थी,’ पल्लू कहती है। वह अपनी टोपी उतारकर मीठी चाय की एक घूंट लेती है।
शाम के ढलते सूरज में नदी का पानी पत्तों की रोशनी और छाया से जगमगा रहा है। मैं अपने मग को हाथों से थामकर आँखें बंद कर लेती हूँ और गहरी साँस लेती हूँ, मानो मुझमें कुछ और करने की ऊर्जा ही न बची हो। अगर हिम्मत होती, तो मैं नदी के किनारे, सबसे दूर कहीं बैठ जाती, अपनी साँसों के उतार-चढ़ाव को देखती और अपनी त्वचा पर हवा का स्पर्श महसूस करती। घर पर मैं हर दिन ध्यान करती हूँ। लेकिन इस यात्रा में, जब भी मैं ध्यान लगाने बैठती हूँ, मेरे विचार कीड़ों की तरह बेतहाशा इधर-उधर भागने लगते हैं और मेरा शरीर बेचैनी से काँपने लगता है। एक पल बाद, मैं ध्यान करना छोड़ देती हूँ।
जेफ ने हमें बताया कि मैरिएन, वह जर्मन महिला जिससे हम पिछले शिविर स्थल पर मिले थे, नदी के किनारे बैठकर ध्यान कर रही थी। उसने आगे कहा, "क्या यह अजीब और थोड़ा सनकी नहीं था?" मैं जेफ से कहना चाहता था कि मैं भी ठीक यही करने की सोच रहा था, और शायद यह सनकी और अजीब है, तो इसमें क्या गलत है? लेकिन वह जा चुका था।
मैं फिर से नदी किनारे टहलने जाने के बारे में सोचती हूँ, लेकिन घंटों पैदल चलने की याद अभी भी मेरे मन में बसी हुई है, जैसे मुझे अपनी जगह पर ही जकड़ कर रख रही हो। मैं अपने तंबू में घुस जाना चाहती हूँ। कल मैं कैसे सैर करूँगी?
पल्लू और मैं एक आसान रास्ता चुन सकते थे। हम कई भारतीय तीर्थयात्रियों की तरह लैंड क्रूज़र में जा सकते थे। हमारे जान-पहचान के किसी भी भारतीय यात्री ने हुमला का रास्ता नहीं लिया है; वे सभी न्यालम से होकर गए हैं। लेकिन भीड़भाड़ वाले न्यालम की भीड़भाड़ वाली सड़कों और छोटे-छोटे लॉजों से होकर डिब्बेनुमा गाड़ियों में जाने का क्या फायदा, जब हम दुनिया भर के अन्य यात्रियों के साथ निर्मल और मनमोहक हुमला में पैदल यात्रा कर सकते हैं?
यह यात्रा हममें से प्रत्येक के लिए अलग-अलग अर्थ रखती है। पल्लू और मेरे लिए, इसका अर्थ है रोमांच और सुंदरता। तीर्थयात्रियों के लिए, रोमांच, सुंदरता और स्वयं यात्रा, देवताओं की छाया में चलने के समान है।
दशकों तक, यह सपना अधिकांश भारतीयों के लिए असंभव ही रहा। कैलाश क्षेत्र 1962 से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के लिए बंद कर दिया गया था। यह

प्रतिबंध भारत और चीन के बीच बिगड़ते संबंधों को दर्शाता है। 1959 में, चीनी सरकार ने चौदहवें दलाई लामा को भारत द्वारा दिए गए शरणस्थल का विरोध किया, जब वे ल्हासा में हुए हिंसक विद्रोह के बाद सीमा पार भाग गए थे, जिसमें हजारों लोग मारे गए थे। फिर, 1962 से शुरू होकर, भारत और चीन विवादित क्षेत्रों को लेकर कई सैन्य संघर्षों में उलझे रहे, जिनमें भारत को हार का सामना करना पड़ा। जैसे-जैसे तनाव कम होने लगा, चीनी आर्थिक सुधारों की शुरुआत के ठीक बाद, 1980 में कैलाश क्षेत्र को फिर से खोल दिया गया। लेकिन परमिट केवल सीमित संख्या में पूर्व-जांच किए गए और निरंतर निगरानी में रहने वाले पर्यटकों को ही दिए जाते थे।
तीर्थयात्रा मार्ग के दोबारा खुलने पर लोगों में ज़बरदस्त उत्साह देखने को मिला। भारतीय तीर्थयात्रियों का पहला जत्था 1981 में रवाना हुआ और पूरे देश ने उन्हें भव्य विदाई दी। हर तरफ से शुभकामनाएँ मिलीं और अख़बारों और टेलीविजन पर इसकी व्यापक कवरेज हुई। रास्ते में पड़ने वाले भारतीय गाँवों में 'स्वागत' लिखे बोर्ड लगाकर उनका स्वागत किया गया।
यह यात्रा आसान नहीं थी। व्यवस्थाएं अनिश्चित थीं और रास्ता खतरनाक था। हर समय, यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों को चीनी और भारतीय दोनों सरकारों के अधिकारियों द्वारा सुरक्षा प्रदान की गई।
पहले अभियान का नेतृत्व देब मुखर्जी ने किया था, जो भारतीय विदेश सेवा के एक प्रतिष्ठित अधिकारी और मेरे पिता के घनिष्ठ मित्र थे। मैंने कैलाश और मानसरोवर की यात्रा के बारे में अपने पिता से देब मुखर्जी की यात्रा के वृत्तांतों से जाना। बाद में, जब पल्लू ने इस यात्रा के बारे में सुना, तो हम भी वहाँ जाने का सपना देखने लगे।
यह तो एक विचित्र संयोग ही रहा है। देब मुखर्जी की कहानियों और उस पहली यात्रा के रोमांच ने दशकों पहले मेरी कल्पना को जगा दिया था। अगर उन्होंने अफगानिस्तान के हिंदू-कुश या यूरोप के आल्प्स पर्वतमाला की यात्रा की होती, तो क्या मैं उनकी जगह उन पहाड़ों पर चल रहा होता?
रात के खाने पर, जेफ हमें एक नया करतब दिखाता है। वह अपने बैग को ज़मीन पर इस तरह रखता है कि उसकी पट्टियाँ ऊपर की ओर हों। वह उसे एक हाथ से उठाता है और एक चाप में घुमाता है। एक ही झटके में, पट्टियाँ उसके कंधों पर आ जाती हैं।
‘अरे! मुझे सिखाओ,’ मैंने कहा।

बोतल का ढक्कन खोलने की तरकीब और बैग पलटने के करतब से मैं अपने बेटों का हीरो बन जाऊँगा। मैं सोचता हूँ कि वे कैसे हैं। क्या वे अपना होमवर्क समय पर पूरा कर रहे हैं? क्या वे ठीक से खा रहे हैं? मैं उन्हें उनके कमरे में कल्पना करता हूँ, जहाँ उनके बिस्तर के ऊपर चिड़ियों वाली पतंगें लटकी हैं और रॉक स्टार, रेस कार और गिटार के पोस्टर लगे हैं। जब वे बहुत छोटे थे, मैंने उनके कमरे में हर जगह चमकते सितारों के स्टिकर चिपका दिए थे। रात को, जब मैं उन्हें कहानियाँ सुनाता और सुलाता, तो हमारे चारों ओर स्टिकर सफेद-हरे रंग में चमकते थे।
'इधर आओ, देवियों, मैं आपको तारे दिखाऊंगा!' स्पेरेलो ने उस रात बाद में हमसे कहा।
वह खगोल भौतिक विज्ञानी की तरह व्यवहार करने लगता है, नक्षत्रों को दर्शाता है, दूरियों का वर्णन करता है और ग्रहों और आकाशगंगाओं के नाम बताता है। पल्लू और बाकी लोग चले जाते हैं, लेकिन मैं वहीं खड़ा रहता हूँ, मेरे पैर ज़मीन पर टिके हैं, मेरा सिर आसमान की ओर उठा है। इतनी ऊँचाई पर, मानो आकाश धरती को छू रहा हो। हवा ठंडी है। नदी चट्टानों के ऊपर से बह रही है, मानो गुनगुना रही हो। यह मेरे जीवन का सबसे चमकीला आकाश है। आकाश को निहारते हुए, मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं गिर भी रहा हूँ और उड़ भी रहा हूँ, और मैं इन अद्भुत तारों के अनंत विस्तार को गहराई से महसूस कर पाता हूँ।

यह जितना समय लेगा

तुमकोट, हुमला, नेपाल के लिए

ऊंचाई ~ 2,885 मीटर

खुली हवा में फैली ताजी रोशनी में सुबह का सूरज चमक रहा है। हम करनाली नदी के किनारे लौट आए हैं, जो यालबंग चौर मैदान में शांत हो गई है। मैं अपने हाथों को नदी के ठंडे पानी में डुबोता हूँ।
छिरिंग का कहना है, 'यालबंग चौर एक प्राचीन व्यापारिक केंद्र था, जो इस मार्ग पर एक महत्वपूर्ण स्थान था। लोग यहां अपने याक और सामान बेचने के लिए लाते थे।'
मानो अपनी बात को साबित करने के लिए, यालबांग चौर अचानक सौ बकरियों और याकों से भर जाता है - हालाँकि वे याक जैसे दिखने में उतने बालों वाले नहीं लगते। मुझे बाद में पता चलता है कि ये ड्ज़ो हैं, जो याक और गायों की संकर नस्ल हैं। जैसे ही चमकीले रंग के कोट पहने लोग जानवरों को पहाड़ियों से नीचे ले जाते हैं, मैं इस जगह की कल्पना कर सकता हूँ जैसा कि यह सदियों पहले दिखती थी, व्यापारियों की आवाज़ों से गूंजती हुई, जो समाचारों का आदान-प्रदान करते थे, पशुधन, अनाज, नमक और कपड़े का लेन-देन और सौदेबाजी करते थे।
छिरिंग के सहायकों में से एक खच्चर को हमारे पास से ले जाता है। जाने का समय हो गया है। घास के मैदान की ओर जाने वाला रास्ता जंगली खुबानी के पेड़ों से घिरा हुआ है। पेड़ पुराने हैं, फिर भी उन पर लटकी छोटी-छोटी गुलाबी-भूरी खुबानीें शरमाते हुए गोलों जैसी दिखती हैं।
‘क्या खुबानी खाने के लिए सुरक्षित हैं? क्या मैं एक चख सकती हूँ?’ मैंने छिरिंग से पूछा।
‘लो।’ उसने मेरे लिए एक तोड़कर दिया।
खुबानी इतनी खट्टी हैं कि मेरे होंठ सिकुड़ गए। मेरे चेहरे के भाव देखकर पल्लू हंस पड़ी। मैंने देखा कि छिरिंग भी अपनी हंसी छिपा रही थी।

'आप उन्हें पसंद करते हो?'
‘हाँ। ये बिल्कुल वैसे ही स्वादिष्ट हैं जैसे मैंने रेस्टोरेंट में खाए हैं।’ मैंने सफेद रोल को काटा और उसमें से भाप निकलने लगी। ‘दरअसल, ये उससे भी बेहतर हैं।’
प्रार्थना ताज़ा पकौड़ी का एक और टुकड़ा लेते हुए गहरी सांस लेती है। स्पेरल्लो उसकी नाक को लेकर उसे चिढ़ाता है। दोनों पहले से ही अच्छे दोस्त हैं।
पतले-पतले चीड़ के पेड़ों की कतार से छनकर आती धूप करनाली नदी के जल पर चमक बिखेरती है, जो शिविर स्थल के किनारे बहती है। जंगल एकदम हरा-भरा है। चीड़ के जंगलों की यह हरियाली उष्णकटिबंधीय जंगलों की घनी, चटख हरियाली जैसी नहीं है; यह अधिक सौम्य है और इसमें हवा और आसमान के कुछ अंशों के लिए जगह है।
ऊपर चढ़ते हुए हम करनाली को पीछे छोड़ देते हैं। जंगल धीरे-धीरे भूरे और विभिन्न रंगों के शांत परिदृश्य में तब्दील हो जाता है। सूरज की गर्मी और ठंडी हवा का मनमोहक मेल। पानी की एक छोटी सी धारा नीचे बहती है, ढलानों पर आगे बढ़ने से पहले एक साफ पोखर बनाती है। मैं अपने ट्रेकिंग पोल नीचे रख देता हूँ और बर्फीले पानी में हाथ डुबोकर बैठ जाता हूँ।
'मुस्कुराओ, कवि!' छिरिंग कहते हैं।
जब मैंने ऊपर देखा, तो छिरिंग ने अपने मोबाइल फोन से एक तस्वीर खींची। उसने पूरी यात्रा के दौरान हमारी तस्वीरें ली हैं: नेपालगंज हवाई अड्डे पर बच्चों के साथ जेफ की, और चट्टानों पर चढ़ती यिंग की।
मैंने अपने गाइड से पूछा, 'क्या आप मुझे फोटो भेज सकते हैं?'
'हां। मैं फेसबुक के माध्यम से सभी की तस्वीरें भेज दूंगी।'
‘क्या आप फेसबुक इस्तेमाल करते हैं?’ मुझे नहीं पता कि मुझे आश्चर्य क्यों हो रहा है, छिरिंग बीस साल का एक युवक है।
‘हां। हां। मैं फेसबुक इस्तेमाल करता हूं,’ वह कहता है।
आज छिरिंग बहुत बातूनी है। हम काठमांडू, तिब्बत और भारत की उसकी यात्रा के बारे में बात करने लगते हैं। वह बताता है कि उसे फुटबॉल पसंद है और हाल ही में देखे गए एक मैच का वर्णन करता है। वह नेपाल की राजनीति के बारे में बात करने लगता है और यह महसूस करते हुए कि दक्षिण एशिया के अधिकांश हिस्से भ्रष्टाचार से ग्रस्त हैं, हम दोनों के विचार मिलते हैं। फिर वह बताता है

कि उसे फिल्में, खासकर बॉलीवुड फिल्में बहुत पसंद हैं। मुझे यह बात थोड़ी अजीब लगती है कि हुमला में एक ऐसे व्यक्ति से ऐसी बातचीत हो रही है जो अपना अधिकांश समय सुदूर पहाड़ों में, कंप्यूटर और बिजली से दूर बिताता है।

देवताओं

तुमकोट, हुमला, नेपाल

ऊंचाई ~ 3,100 मीटर

ढलानें और भी खड़ी हो गई हैं और हरियाली की जगह भूरी धूल और धूसर पत्थर दिखाई देने लगे हैं। इन शांत और एकरस रंगों के बीच यालबांग मठ का प्रवेश द्वार खड़ा है। प्रवेश द्वार पर बने चमकीले लाल, पीले और नीले रंग के चित्र और सोने की नक्काशी चट्टानी परिवेश की कठोरता के बीच मानो एक विस्फोट की तरह उभर रहे हैं।
जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, हमें नन्हे-मुन्ने भिक्षुओं का झुंड दिखाई दिया। सिर मुंडवाए और नारंगी-भूरे रंग के वस्त्र पहने बच्चे आगंतुकों को देखकर उत्साह से झूम रहे थे। उनकी उम्र पाँच से पंद्रह वर्ष के बीच थी। जब जेफ़ ने ताश के पत्तों का अपना बंडल निकाला, तो नन्हे भिक्षु उसके चारों ओर जमा हो गए, एक-दूसरे पर झुक गए, आँखें चौड़ी कर लीं और गर्दनें घुमा लीं। जेफ़ ने पत्तों को पलटा, उन्हें गायब किया और फिर प्रकट किया - वही जादू का करतब जो मैंने नेपालगंज हवाई अड्डे पर देखा था। बच्चे अवाक रह गए, खुश हुए और हँसे, उनके चेहरे चमक रहे थे और सुंदर लग रहे थे। वे मुझे अपने बेटों की याद दिला रहे थे। भिक्षु और बच्चा, दोनों में कितना कुछ है?
मुख्य मंदिर के प्रवेश द्वार पर हल्के हरे रंग का एक थांका लटका हुआ है। थांका कढ़ाई या चित्रकारी वाले वस्त्र होते हैं जिन पर बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं को दर्शाया जाता है और इन्हें घरों या मंदिरों के बाहर लटकाया जाता है। यालबांग थांका में लाल और पीले रंग का एक चक्र है जिस पर बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं के दृश्य बने हुए हैं। यह चक्र एक राक्षस के शरीर में समाहित है - संभवतः मारा, जो मृत्यु और आसक्ति का प्रतीक है।
बौद्ध धर्म में दो प्रमुख मार्ग हैं: थेरवाद और महायान। थेरवाद मार्ग श्रीलंका, बर्मा और अन्य दक्षिण एशियाई देशों में प्रचलित है। बुद्ध की शिक्षाओं के पाली ग्रंथ पर आधारित थेरवाद मार्ग दोनों में से अधिक कठोर है

पतले सफेद कपड़े से ढका गया है, शायद शालीनता के लिए। पुरुष देवता बुद्ध दम्चोक या चक्रसंवर हैं, जो कैलाश पर्वत पर निवास करने वाले तिब्बती तांत्रिक देवता हैं। स्त्री देवता वज्रवराही हैं, जो उनकी संगिनी हैं। वे सीधे, भावहीन बैठे हैं; वे एक लता की तरह उनके चारों ओर लिपटी हुई हैं। वे करुणा का प्रतीक हैं; वे अंतर्दृष्टि का। उनका मिलन दो गुणों का प्रतीकात्मक मिलन है और शिव और पार्वती के चित्रण से उल्लेखनीय समानता रखता है। शिव की पूजा का सामान्य प्रतीक लिंगम है (जिसे कुछ लोग शिव का लिंग मानते हैं जबकि अन्य इसे प्रकाश की किरण या उनकी ब्रह्मांडीय ऊर्जा की अभिव्यक्ति मानते हैं)। पार्वती को योनि (या गर्भ, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों) के रूप में चित्रित किया गया है। उनके मिलन को सृजनात्मक ऊर्जा का स्रोत माना जाता है।
मैंने छिरिंग से कहा, 'मंदिर इतना पुराना नहीं दिखता।'
‘मूल मठ बहुत पुराना है। यह वाला उतना पुराना नहीं है।’ छिरिंग की आवाज स्थिर रहती है, लेकिन उसके होंठ कस जाते हैं।
तिब्बत में स्थित पुराना नामखा ख्युंग ज़ोंग मठ 1959 में चीनियों द्वारा नष्ट कर दिया गया था और 1980 के दशक के मध्य में यालबांग में इसका पुनर्निर्माण किया गया। फिर भी, इस दुखद अतीत का प्रभाव यहाँ आसानी से दिखाई नहीं देता। यालबांग मठ में शांति का भाव व्याप्त है, और इमारत की कलाकृतियों के चमकीले रंग, भिक्षुओं की उत्साहपूर्ण बातचीत, और चमकीले प्लास्टिक के फूलों और धुएँ वाले अगरबत्ती से सजी वेदी इस स्थान को जीवंतता से भर देती है।
मूल मंदिर को ध्वस्त होते देखना, भिक्षुओं को शास्त्रों और मूर्तियों के साथ भागते देखना, और आग और मलबे द्वारा कभी पवित्र रहे उस स्थान को भस्म होते देखना अत्यंत विचलित करने वाला है। लेकिन वे शास्त्र और मूर्तियाँ तो महज़ वस्तुएँ थीं। पुराना मंदिर तो केवल एक पत्थर की इमारत थी। वस्तुओं और इमारतों के विनाश से मैं इतना विचलित क्यों हो जाता हूँ? आख़िरकार, किसी अन्य वस्तु, जैसे पेंसिल या कुर्सी के टूटने से तो मैं इतना परेशान नहीं होता। न ही किसी अन्य इमारत, जैसे दुकान या सिनेमाघर के विनाश से मैं इतना विचलित होता।
मेरी निराशा की जड़ में कुछ गहरा कारण है। किसी वस्तु को अक्सर किसी भावना, अर्थ, कहानी, आस्था या सौंदर्य के विचार से जोड़ा जाता है, जो उसका सार

होता है। मंदिर के निर्माता, मूर्तिकार, उपासक या कला प्रेमी के लिए पवित्र वस्तु और उसका सार अविभाज्य होते हैं और अक्सर ये महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पहचानों के भंडार होते हैं। पुराने मंदिर में पत्थर या धातु को निशाना नहीं बनाया गया था, बल्कि तिब्बती लोगों के आत्मसम्मान, उनकी आत्मा, संस्कृति, आशाओं और शक्तियों को ठेस पहुंचाई गई थी। इन गुणों को जानबूझकर निशाना बनाने की अंतर्निहित दुर्भावना इतनी विचलित करने वाली है कि प्राकृतिक आपदाओं द्वारा अनजाने में किया गया विनाश इतना विचलित नहीं करता। यहां तक कि मेरे अंदर का नास्तिक भी छिरिंग और उनके लोगों के गहरे दुख को महसूस कर सकता है।
फिर भी, इसमें एक विडंबना है। बुद्ध ने सिखाया कि यह सार माया का एक रूप है
– भ्रम जो लालसा, आसक्ति और दुख का कारण बनता है। बुद्ध ने सभी चीजों की अनित्यता के सत्य पर भी बल दिया। संभवतः, इसमें बौद्ध मंदिर और मूर्तियाँ भी शामिल हैं।
मंदिर से निकलने से पहले, मैं वेदी पर रखी दलाई लामा की तस्वीर को निहारता हूँ। उनके चेहरे पर शांति, मासूमियत और आशा के भाव हैं। मैं यह तय करता हूँ कि यह नया मंदिर आशा का प्रतीक है। अपने अपवित्र करने वालों को चुनौती देते हुए, पुराने मठ ने मरने से इनकार कर दिया है; यह केवल स्थानांतरित हुआ है।
ऐसा लग रहा है जैसे मैं घंटों से चल रहा हूँ, लेकिन सूरज आसमान में ज़्यादा दूर नहीं गया है। मैं थका हुआ महसूस कर रहा हूँ, फिर भी अजीब तरह से सचेत हूँ। हवा ताज़ी है और सब कुछ एकदम साफ़ लग रहा है, मानो किसी ने साबुन से धरती और आसमान को धोकर सारे रंग फिर से चमका दिए हों। मुझे हवा की ताजगी का एहसास है, और अपनी थकान का भी पूरा एहसास है।
थोड़ा आराम करने का समय हो गया है। प्रार्थना, पल्लू और मैं एक चट्टान पर बैठ कर आराम करते हैं और अपने बैग में से नाश्ता निकालते हैं। पल्लू और प्रार्थना मसालेदार तली हुई दाल का मिश्रण लाई हैं, जिसे हम सब मिलकर खाएंगे। मैं कुछ पौष्टिक फल और मेवे के बार लाई हूँ, जिन्हें कोई भी साझा नहीं करना चाहता।
यिंग मोड़ से मुड़ती है, अपनी ट्रेकिंग पोल को जमीन में गाड़ती है और खुद को आगे धकेलती है।
‘यिंग!’ प्रार्थना ने पुकारा। ‘आओ और हमारे साथ थोड़ा आराम करो।’

'मैं बैठ नहीं सकती,' वह कहती है, उसका चेहरा उसके रंगीन रुमाल के नीचे पीला और सख्त सा लग रहा है। 'अगर मैं एक पल के लिए भी बैठ जाऊं, तो उठ नहीं पाऊंगी। मैं रुक नहीं सकती।'
छिरिंग ने हमें बताया था कि ट्रेक पूरा करने के लिए न तो ताकत और न ही गति ज़रूरी है। ‘नब्बे प्रतिशत दिमाग का खेल है। आपको मानसिक रूप से मज़बूत होना होगा।’ इस हिसाब से, हम सब में से यिंग के सफल होने की सबसे ज़्यादा संभावना है। हम उसके साथ चलना शुरू करते हैं। हमारे कदमों की लय के साथ, हमें करनाली नदी की आवाज़ सुनाई देती है।
हमारे शिविर स्थल के पास एक छोटी सरकारी चौकी पर दो नेपाली गार्ड तैनात हैं। वे हमारे परमिट की जाँच करते हैं और छिरिंग को बताते हैं कि आज सुबह भूकंप आया था। 'भूकंप? कहाँ?' हम पूछते हैं। यह उस रास्ते के पास आया था जिस पर हम चल रहे थे, घास के मैदान से मठ की ओर जाने वाला रास्ता। हमें बताया गया कि यह एक छोटा भूकंप था। फिर भी, यह आश्चर्य की बात है कि हममें से किसी को भी इसका एहसास नहीं हुआ।
पल्लू कहती हैं, 'उम्मीद है कि हमारे पतियों को भूकंप के बारे में पता नहीं चलेगा।'
मैं समझ गई कि वह क्या कहना चाहती है।
‘इसके बारे में सोचो, कवि। हम अभी-अभी भूकंप के बीच से पैदल यात्रा करके आए हैं,’ वह आगे कहती हैं।
‘हमें इसे सूची में शामिल कर लेना चाहिए। रद्द किए गए परमिट, भूकंप – अब आगे क्या?’
ढलान से नीचे उतरते हुए पल्लू ने पूछा, 'हिमस्खलन?'
'बिजली चमकना?'
तूफान, भूस्खलन, आग, हिम तेंदुए, सांप के काटने – हम संभावित प्राकृतिक आपदाओं की एक सूची बनाते हैं। जब हम तुमकोट कैंप पहुंचते हैं, तो पल्लू और मैं हंस रहे होते हैं।
शिविर स्थल पर पहुंचते ही, ढलती रोशनी में मुझे बेचैनी महसूस होने लगी। आसपास कुछ तंबू बिखरे हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो ये लोग घुमंतू हों। अपनी पूरी यात्रा के दौरान, जिन लोगों से हमारी मुलाकात हुई, उन्होंने दोस्ताना अंदाज़ में हाथ हिलाकर या उत्सुकता से हमारा अभिवादन किया। कुछ लोग

उदासीन दिखे। लेकिन ये लोग शत्रुतापूर्ण प्रतीत हो रहे थे, उनकी आँखें ठंडी थीं, और उनके जबड़े कसे हुए थे।
छिरिंग ने मेरी बेचैनी को भांप लिया। उसने कहा, 'उनके पास बहुत कम है। उनका जीवन कठिन है। बस अपनी चीजों का ध्यान रखना। चीजों को इधर-उधर मत छोड़ना।' जैसे ही मैं अपने तंबू की ओर भागा, एक स्थानीय व्यक्ति ने मुझे घृणा भरी निगाहों से देखा। अंदर पहुँचकर मैंने तंबू के फ्लैप्स को ज़िप से बंद कर दिया। मैंने अपना बैग कंधे से उतार दिया। यह कपड़ों, स्नैक्स, ऊँट के पानी की थैली, टॉर्च, टोपी, तीन जोड़ी दस्तानों और हर आपात स्थिति के लिए दवाओं से भरा हुआ था। मेरा बड़ा डफ़ल बैग, जिसे याक ढोते थे, अतिरिक्त कपड़ों और सामान से लबालब भरा हुआ था। इस छोटी सी यात्रा के लिए मैंने जो सामान इकट्ठा किया है, वह खानाबदोशों के पूरे साल के गुज़ारे के लिए लाए गए सामान से कहीं ज़्यादा लगता है। जैसा कि छिरिंग ने कहा, उनके पास इतना कम है और वे इतनी कठिनाइयों का सामना करते हैं, इसलिए हमारे भरे-पूरे जीवन के प्रति उनकी नाराज़गी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हालाँकि मेरे जैसा यात्री स्थानीय लोगों के लिए आमदनी लाता है, फिर भी हमारे बीच भौतिक असमानता स्पष्ट है। मैं सोचता हूँ कि क्या हमारी बातचीत से अधिक समृद्धि और समझ आएगी या अधिक टकराव और नाराज़गी।
सोने से पहले पल्लू मेरी पोर्टेबल मशीन से मेरा ब्लड प्रेशर चेक करती है। रीडिंग सामान्य से ज़्यादा आती है, लेकिन मुझे चिंता नहीं है। मेरे डॉक्टर ने कहा है कि ऊंचाई बढ़ने पर ब्लड प्रेशर बढ़ता है और इससे ट्रेकिंग पर कोई असर नहीं पड़ता।
‘मैं तुम्हारा ब्लड प्रेशर चेक कर लेती हूँ,’ मैंने पल्लू से कहा। उसका ब्लड प्रेशर आमतौर पर नॉर्मल रहता है, इसलिए उसकी रीडिंग मेरे लिए बेंचमार्क होगी।
उसकी रीडिंग मेरी रीडिंग से अधिक है।
‘सचमुच?’ वह कहती है।
‘लेकिन जैसे-जैसे ऊंचाई बढ़ती है, ब्लड प्रेशर भी बढ़ता जाता है।’ मैंने मशीन को अपने बैग में ज़िप से बंद कर दिया।
‘क्या मुझे चिंता करनी चाहिए?’ पल्लू ने स्लीपिंग बैग में घुसते हुए पूछा।
मुझे ऐसा नहीं लगता। और चूंकि मेरे तो निचले स्तर पर हैं, इसलिए मुझे चिंता करने की भी जरूरत नहीं है।

कुछ ही मिनटों में पल्लू गहरी नींद में सो जाती है। मैं करवटें बदलती रहती हूँ। इस शिविर स्थल में कुछ तो ऐसा है जो मुझे पसंद नहीं आ रहा, हालांकि मैं ठीक से बता नहीं पा रही। शायद खानाबदोशों की मौजूदगी मुझे बेचैन कर रही है। शायद चारों ओर फैले पहाड़ों से मेरा मन विचलित हो रहा है। या शायद मुझे अपने रक्तचाप की चिंता सता रही है। नींद नहीं आ रही, जबकि मुझे पता है कि मुझे नींद की ज़रूरत है। छिरिंग ने हमें बताया है कि कल हुमला से होकर गुजरने वाला ट्रेक सबसे चुनौतीपूर्ण होगा।

सीमा पार करना

Tharo Dhunga, Humla, Nepal,

ऊंचाई ~ 4,000 मीटर

तिब्बती कुत्ते मैंने अब तक जितने भी देखे हैं, उनमें सबसे बड़े हैं, उनके बाल शेर की गर्दन के बालों जैसे हैं। जब मैं और पल्लू पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, तभी भूरे रंग के दो कुत्ते नीचे आते हुए हमें लाल आँखों से घूरने लगे। छिरिंग कहती हैं, 'सावधान रहें। अगर आप अकेले हैं, तो वे हमला कर देते हैं। वे इंसान खाते हैं।' कैलाश-मानसरोवर क्षेत्र के जितना करीब हम पहुंचते हैं, उतनी ही बार हमें यह चेतावनी सुनने को मिलती है। यहां के कुत्तों ने आकाश-अंतिम संस्कार में इंसानी मांस चखा है, जो तिब्बत और भारत व नेपाल के कुछ हिस्सों में आज भी प्रचलित है।
आकाश अंत्येष्टि एक ऐसी रस्म है जिसमें शव को टुकड़ों में काटकर एक ऊंचे, खुले चबूतरे पर छोड़ दिया जाता है, ताकि गिद्ध उसे नोच-नोच कर खा सकें। यह महज एक रस्म से कहीं बढ़कर है, यह बौद्ध धर्म के मूल्यों, जैसे कि नश्वरता (शरीर क्षणभंगुर है और मृत्यु के बाद केवल एक खाली पात्र है) और करुणा (अंतिम उदारता के रूप में मांस को अन्य जीवित प्राणियों को अर्पित करना) की पुष्टि है। यह रस्म व्यावहारिकता से भी जुड़ी है; इलाका पथरीला है और पेड़ विरल हैं, जिससे दफनाने और दाह संस्कार करने में कठिनाई होती है। लेकिन हाल ही में, गिद्ध रहस्यमय तरीके से विलुप्त हो रहे हैं, और अब कुत्ते शव के मांस को खा रहे हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें इसका स्वाद लग गया है। हमारी पूरी यात्रा के दौरान, हम शिविर स्थलों के किनारों पर कुत्तों को मंडराते हुए देखते हैं।
याकों के एक छोटे समूह को नीचे की ओर ले जाया जा रहा है। ये विशाल जानवर बहुत करीब हैं, इसलिए पल्लू और मैं चट्टान से सटकर खड़े हो जाते हैं, जब याक गुजरते हैं तो उनके खुरों की आवाज़ चट्टानों पर गूंजती है। एक

विशालकाय कुत्ता उनके पीछे-पीछे आता है। वह लाल आँखों से हमारी ओर एक नज़र डालता है और फिर अपने रास्ते चला जाता है।
मैंने कहा, 'ये कुत्ते देखने में बहुत ही बदसूरत हैं।'
छिरिंग कहती हैं, 'जब वे पिल्ले होते हैं, तो वे प्यारे लगते हैं।' उन्होंने मुझे बताया कि एक बार वे एक अनाथ तिब्बती पिल्ले को काठमांडू ले गए थे। जैसे-जैसे मौसम गर्म होता गया, छिरिंग ने पिल्ले को ठंडा रखने की कोशिश की, लेकिन भीषण गर्मी के कारण वह तड़पने लगा। गर्मी के अंत तक, कुत्ते की मृत्यु हो गई।
छिरिंग कहती हैं, 'उसके बाद मैंने कभी कोई कुत्ता नहीं पाला।'
कुछ-कुछ मिनटों में पल्लू और मैं आराम करते हैं। इस यात्रा के इस चरण में आज की चढ़ाई सबसे कठिन होगी। छिरिंग ने हमें धीरे-धीरे चलने को कहा है। थोड़ा चलो, थोड़ा रुको। नीचे बह रही नदी अब करनाली की एक और सहायक नदी, बुमाचिया खोला है। हम इससे काफी ऊपर चढ़ चुके हैं और अब मुझे इसकी गर्जना मुश्किल से सुनाई दे रही है। हम आराम से चल रहे हैं, लेकिन चढ़ाई के शिखर पर पहुँचकर मुझे इस बात का एहसास होता है कि मुझे ज़रा भी थकान महसूस नहीं हुई। सूरज चमक रहा है और हवा एकदम ठंडी है। इतनी दूर तक पहुँचकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। हमारे सामने पत्थरों का एक बड़ा ढेर है, जिसके ऊपर पीले, नीले और सफेद रंग के प्रार्थना झंडे लटके हुए हैं। शुभ भेंट के रूप में चट्टानों पर याक के सींग बिखेरे गए हैं।
जैसे ही हम प्रार्थना के पास पहुंचे, उसने कहा, 'आप लोग भी कुछ पत्थर डाल दीजिए।'
यिंग ने अपना पत्थर पहले ही टीले में जोड़ दिया है और वह आगे बढ़ रही है। मुझे ढलान के पास एक चिकना, सपाट पत्थर मिला। ये पत्थर के ढेर बच्चों द्वारा बनाए गए पत्थरों जैसे लगते हैं, जैसे समुद्र तट पर रेत के महल। लेकिन ये एक गंभीर प्रतीक है। इस पर लटके प्रार्थना झंडे और चढ़ावे स्वयं से परे किसी महान शक्ति के लिए तड़प की अभिव्यक्ति हैं। मैं चाहता हूँ कि इस पत्थर के ढेर में कुछ जोड़ने का मेरा कार्य भी सार्थक हो।
जब मैं यह पत्थर रखता हूँ, तो मैं इसे कृतज्ञता को समर्पित करता हूँ। इतनी दूर आने के लिए कृतज्ञता। आज की चढ़ाई की सुगमता के लिए कृतज्ञता। स्वच्छ आकाश और हमारे सामान ढोने वाले खच्चरों के लिए कृतज्ञता। उन सभी लोगों के लिए कृतज्ञता जो मुझसे पहले यहाँ आए हैं, जो मेरे बाद आएंगे, और जो अपने-

अपने पत्थरों से इस स्मारक का निर्माण करते रहेंगे, और इस यात्रा को करने के अपने-अपने कारणों को साथ लेकर चलेंगे।
पल्लू कुछ पत्थर उठाती है और उन्हें पत्थरों के ढेर पर रख देती है। उसके बाल हवा से लहरा रहे हैं और उसके चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान है।
‘अरे वाह, ये तो मेरी सोच से भी आसान था!’ वो कहती है। उसकी आवाज़ में कुछ समय से ज़्यादा आत्मविश्वास झलक रहा है।
यह यात्रा पल्लू के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। उसके मन में बड़े-बड़े विचार और भव्य योजनाएँ हैं, जो अक्सर अधूरी ही रह जाती हैं। जब दोस्त और परिवार वाले उसे इस बात पर चिढ़ाते हैं, तो वह हँस पड़ती है। उसे मज़ाक बुरा नहीं लगता, फिर भी उसके मन में कहीं न कहीं उन्हें गलत साबित करने की इच्छा होती है। इस यात्रा पर निकलने से पहले, पल्लू ने अपने भाई से एक शर्त लगाई थी। अगर वह यात्रा पूरी कर लेती है, तो उसका भाई उसे घर की बनी बिरयानी खिलाएगा।
'इसे स्वादिष्ट बनाना,' उसने हमेशा की तरह नखरे दिखाते हुए कहा था।
ज़मीन समतल हो जाती है और हमें एक छोटा सा मंदिर दिखाई देता है, जो किसी गुड़ियाघर से भी छोटा है। उसके सामने ठोस चट्टान पर एक घिसा-पिटा पदचिह्न है। छिरिंग का कहना है कि यह पदचिह्न बुद्ध का था, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे यहाँ आए थे। पदचिह्न के चारों ओर भेंट और मणि पत्थर सावधानीपूर्वक रखे गए हैं।
मणि चट्टानें ऐसे पत्थर हैं जिन पर बौद्ध मंत्र 'ओम मणि पद्मे हम' उकेरा गया है।
महायान बौद्ध धर्म में, ये अक्षर बुद्ध की सभी शिक्षाओं के सार को समाहित करते हैं। दलाई लामा के अनुसार, ओम मणि पद्मे हम उस मार्ग के अभ्यास पर निर्भरता को इंगित करता है जो विधि और ज्ञान का एक अविभाज्य संघ है; आप अपने अशुद्ध शरीर, वाणी और मन को बुद्ध के शुद्ध, उदात्त शरीर, वाणी और मन में परिवर्तित कर सकते हैं।
दलाई लामा तिब्बत के सबसे नए संप्रदाय, गेलुपा संप्रदाय के प्रमुख हैं। दलाई लामा को बोधिसत्व अवलोकितेश्वर का साक्षात अवतार और करुणा का साक्षात रूप माना जाता है। अधिकतर लोग सोचते हैं कि दलाई लामा ही तिब्बती बौद्ध धर्म के एकमात्र आध्यात्मिक नेता हैं; ऐसा नहीं है। फिर भी, वे इसके सबसे पूजनीय और प्रिय नेता हैं। उनका गेलुपा संप्रदाय तिब्बत का सबसे

बड़ा संप्रदाय है और ज्ञान प्राप्ति के मार्ग पर मठवासी जीवन के महत्व पर बल देता है।
प्रत्येक संप्रदाय का अपना धार्मिक प्रमुख होता है और प्रत्येक संप्रदाय एक अलग प्रथा पर ज़ोर देता है। काग्यू संप्रदाय गृहस्थ जीवन और संसार में आने वाली समस्याओं पर अधिक बल देता है। (कर्मपा लामा काग्यू के सबसे बड़े संप्रदाय के प्रमुख हैं।) साक्या संप्रदाय की शुरुआत पूर्वी तिब्बत में हुई थी और इसका नेतृत्व खोन परिवार के एक पुरुष उत्तराधिकारी द्वारा किया जाता है। विडंबना यह है कि रिमे संप्रदाय संप्रदायों में विश्वास नहीं करता।
सभी संप्रदाय (गैर-संप्रदायों सहित) बुद्ध की शिक्षाओं, धम्म का पालन करते हैं, जो करुणा और ज्ञान के दो गुणों को दुख के निवारण के लिए आवश्यक मानती हैं। सभी शिक्षक और नेता बुद्ध का आदर करते हैं, उन्हें देवता नहीं बल्कि असीम करुणा और ज्ञान से परिपूर्ण एक प्रबुद्ध पुरुष मानते हैं।
मैंने चट्टान पर बने पदचिह्न की तस्वीर ली (हालाँकि मेरे कैमरे के व्यूफ़ाइंडर से यह धुंधली और फीकी सी दिख रही थी)। स्थानीय लोग श्रद्धापूर्वक पदचिह्न के पास से गुज़रे, लेकिन उनमें वह स्पष्ट श्रद्धा नहीं थी जो बुद्ध के वास्तविक पदचिह्न के सामने होने पर अपेक्षित होती है। भारत में, किसी प्रमुख हिंदू देवता के पदचिह्न की खोज से एक विशाल मंदिर का निर्माण प्रेरित होता। वहाँ पुजारी होते और लोग पवित्र पदचिह्न के दर्शन के लिए उत्सुक रहते। यहाँ, बुद्ध के पदचिह्न का मंदिर इतना छोटा है और उसके आसपास चढ़ावे इतने कम हैं कि अगर छिरिंग ने मुझे इसके बारे में न बताया होता तो मैं इसे देख ही नहीं पाता।
दो आदमी दूसरी तरफ से नीचे आ रहे हैं। छिरिंग और वे आदमी नेपाली में बातचीत करते हैं और हमारे रास्ते में आगे एक जगह की ओर इशारा करते हैं। छिरिंग चिंतित दिख रहा है। उनके जाने के बाद, वह हमें बताता है कि भूस्खलन हुआ है, इसलिए हमारा रास्ता बंद है। हमें एक अलग, लंबे रास्ते से जाना होगा।
मुझे भूस्खलन का कोई अवशेष दिखाई नहीं दे रहा है। धूल शायद बैठ चुकी होगी। ऊपर देखने पर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मिट्टी हमारे ऊपर लटक रही हो। मैंने छिरिंग से पूछा, 'क्या आपके यहाँ बहुत भूस्खलन होते हैं?'
'भूस्खलन अधिक आम हो गए हैं। इस क्षेत्र में बहुत खनन होता है। मिट्टी ढीली हो रही है।'

वे किस चीज के लिए खनन करते हैं?
‘सोना,’ वह कहता है। ‘लोग कहते हैं कि इन पहाड़ों में सोना है।’
‘क्या यह सच है?’ मैंने पूछा।
मुझे नहीं पता। लेकिन खनन बहुत ज्यादा हो रहा है। यह पहाड़ों के लिए हानिकारक है।
हम कुछ देर चुपचाप चलते हैं। धीरे-धीरे हम ढलान पर चढ़ते हैं। मैं एक छोटा, गोल पत्थर उठाता हूँ जो हल्का काला और चमकदार है। क्या यह सोना हो सकता है? जो भी हो, यह यहीं पहाड़ों में होना चाहिए। मैं इसे अपनी उंगलियों से फिसलने देता हूँ।
‘हम वृक्ष रेखा पार कर रहे हैं।’ पल्लू ने इसे ऐसे इंगित किया, मानो यह कोई विशिष्ट पहचान चिन्ह हो।
जब मैं ढलान पर नीचे की ओर देखता हूँ, तो मुझे पेड़ों और बंजर ज़मीन के बीच एक स्पष्ट विभाजन दिखाई देता है। ऐसा लगता है मानो किसी बच्चे ने रंग-रोगन से पहाड़ों पर एक लकीर खींच दी हो, और उसके आगे हरियाली का नामोनिशान नहीं है। इस रेखा को पार करते ही मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी दूसरी दुनिया में प्रवेश कर रहा हूँ।
दूर-दूर तक फैली नंगी धरती पर चट्टानें नज़र आती हैं। पेड़ों की अनुपस्थिति में, पहाड़ हवा, धूप, धूल और बर्फ के सामने नंगे खड़े हैं। ऐसी जगह चलते हुए जहाँ पेड़ नहीं उग सकते, मैं असुरक्षित और अजीब तरह से अकेला महसूस करता हूँ।
पालबंग में आज दोपहर के भोजन का स्थान अब तक देखे गए सबसे खूबसूरत स्थानों में से एक है। हम एक चट्टान के किनारे पर स्थित खुले मैदान में पहुँच जाते हैं। एक तरफ पहाड़ों की गहरी घाटियाँ हैं, ऊपरी ढलानें भूरी मिट्टी से ढकी हैं, जबकि निचली ढलानें पेड़ों और झाड़ियों की हरियाली से भरी हैं जो मानो भूली हुई यादों की तरह उग रही हैं। दूसरी तरफ, मिट्टी और चट्टानों के विशाल स्तंभों की तरह शानदार चट्टानें आसमान को छूती हैं।
हमारा समूह एक घेरे में बैठा है, गरमागरम, साफ़ सूप की चुस्कियाँ ले रहा है। हमने जैकेट उतार रखी हैं, सूरज की गर्मी हमें महसूस हो रही है। कुछ ही घंटों में पहाड़ों की हवा कड़ाके की ठंड में बदल सकती है। सिमिकोट में पहले दिन के अलावा, हमने बारिश नहीं देखी है। मुझे वह समूह याद है जिसके

निगाहों से हमें देख रहे हैं, न तो जिज्ञासु हैं और न ही शरमाते हैं। शहर के बच्चों के विपरीत, ये बच्चे कभी ऊबते हुए नहीं लगते।
महिलाएं हमें गरमागरम लहसुन का सूप परोसती हैं। हमें बताया जाता है कि यह ऊंचाई वाले स्थानों के लिए अच्छा होता है। प्रार्थना सूप नहीं पी सकती, क्योंकि उसे जी मिचला रहा है। वह अचानक कमजोर दिखने लगती है। छिरिंग उसकी नब्ज़ और चेहरा देखता है। वह उसे कुछ दवा देता है और लगातार उसकी निगरानी करता रहता है।
‘क्या तुम ठीक हो?’ स्पेरल्लो ने उससे पूछा।
वह सिर हिलाती है, लेकिन उसके चेहरे पर अनिश्चितता झलकती है। छिरिंग हमें बताती है कि यह ऊंचाई पर होने वाली बीमारी का हल्का सा दौरा है।
'जागते रहो, ताकि आज रात अच्छी नींद आ सके,' स्पेरेलो ने आगे कहा।
रात के खाने के बाद, पल्लू प्रार्थना के तम्बू में जाती है। यह पहली बार नहीं है जब मैं सोचती हूँ कि क्या पल्लू मेरे और अपनी घर की सहेली के बीच फंसी हुई महसूस कर रही है।
पल्लू के वापस आने पर उसने कहा, 'वह काफी बेहतर लग रही है। वह आराम करना चाहती है।'
‘क्या तुम्हें आज रात उसके साथ रुकना चाहिए?’
‘नहीं।’ पल्लू ने सिर हिलाया। ‘उसने कहा कि वह ठीक हो जाएगी।’
'अच्छा हुआ। कितनी राहत मिली! लेकिन किसे पता था कि ऐसा हो सकता है? मतलब, मुझे पता था कि ऐसा हो सकता है, लेकिन किसे पता था कि यह हमारे साथ होगा?' मेरे जाने से पहले हरि ने मुझसे पूछा था, 'तुम इन खतरनाक जगहों पर क्यों जाओगे?'
मैंने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा, 'यह ट्रेक ऊँचाई वाले इलाकों में होने वाले किसी भी ट्रेक जितना ही खतरनाक है। हर साल सैकड़ों लोग इसे पूरा करते हैं, जिनमें बुजुर्ग लोग भी शामिल हैं। चिंता की कोई बात नहीं है।'
'हर साल पहाड़ों में बहुत से लोग मर जाते हैं। चिंता करने के लिए बहुत कुछ है।'
मैंने कहा था, ‘मरने वाले ज्यादातर लोग भारतीय तीर्थयात्री हैं। वे अयोग्य और अपर्याप्त रूप से सुसज्जित हैं। वे हमारे जैसे नहीं हैं।’
‘आपकी तरह, उन्हें भी लगा था कि वे सफल हो जाएंगे।’
‘हम ठीक रहेंगे, हरि। हमें कुछ नहीं होगा।’

उस रात अपने तंबुओं में, पल्लू और मैं किस्से सुनाते रहे, मानो वे कोई धार्मिक अनुष्ठान हों।
‘क्या आपने सुना है,’ हममें से एक ने बात शुरू की, ‘उस योगी के बारे में जो कैलाश तीर्थयात्रियों के एक समूह के साथ गया था? वह योगी बहुत चुस्त-दुरुस्त था – वह प्रतिदिन आसन, प्राणायाम और ध्यान करता था। दिन में कई बार। वह उन लोगों का उपहास उड़ाता था जो मुश्किल से अपने पैर की उंगलियों को छू पाते थे। वह अपनी फेफड़ों की क्षमता, अपनी सहनशक्ति और अपनी मानसिक चुस्ती के बारे में शेखी बघारता था। कैलाश यात्रा के दूसरे और सबसे कठिन दिन, वह समूह से आगे निकल गया। जब वे उसके पास पहुँचे, तो उन्होंने उसे पथरीले रास्ते पर झुका हुआ पाया। ऊँचाई की बीमारी। इस समूह में, वह अकेला था जिसकी मृत्यु हुई।’
‘रुको – यह तो और भी भयानक है! कैलाश पर्वत पर पहले दिन शिविर स्थल पर, एक भारतीय तीर्थयात्री, तीस वर्ष की एक महिला, रात में शौचालय जाने के लिए उठी। उसे ऊंचाई की बीमारी थी, लेकिन उसे इसका एहसास नहीं था। सुबह, वे उसे शौचालय में मृत पाए।’
क्या मैंने आपको कुत्तों वाली कहानी सुनाई थी? एक जापानी व्यक्ति मानसरोवर झील पर डेरा डाले हुए था। यह ऑफ-सीज़न था, इसलिए आसपास शायद ही कोई था। वह व्यक्ति अपने गाइड के बिना, अकेले ही झील के किनारे टहलने चला गया। गाइड ने दूर से चीखने की आवाज़ सुनी। वह शिविर के रखवालों के साथ तुरंत मौके पर पहुंचा। जब वे पहुंचे, तो उन्होंने उस व्यक्ति का शरीर विशाल तिब्बती कुत्तों द्वारा नोंचकर खाए हुए पाया। उसके क्षत-विक्षत अवशेषों के बीच उसका हाथ था जिसमें उसका मोबाइल फोन था। वह मदद के लिए फोन करने की कोशिश कर रहा था।
ये किस्से भले ही हमें डरा दें, लेकिन इन्हें ज़ोर से बोलने से ये वास्तविकता से दूर हो जाते हैं। ये बच्चों की किताबों की परियों की कहानियों या हमारी पसंदीदा डरावनी फिल्मों की तरह बन जाते हैं, जिन्हें हम सुरक्षित पर्दों के पीछे देखते हैं।

सैनिकों

पुरंग, तिब्बत

ऊंचाई ~ 4,000 मीटर

4,600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित नारा ला दर्रा हमारी ट्रेक के सबसे ऊंचे बिंदुओं में से एक है। इससे ऊंचा केवल कैलाश का डोल्मा ला दर्रा है, जो 5,500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। मैंने कुछ देर के लिए नारा ला दर्रे से होकर ट्रेकिंग करने का विचार किया, लेकिन फिर मैंने यह विचार छोड़ दिया। जीप में सवार होने के बाद अब मेरा पूरा रास्ता पैदल चलने का मन नहीं कर रहा था। स्पेरेलो और जेफ तो चलने के लिए तैयार थे, लेकिन कैटी को उतना भरोसा नहीं था। उसे यकीन नहीं था कि वह दर्रा पार कर पाएगी, लेकिन उसने कोशिश करने का पक्का इरादा कर लिया था। तीनों ने छिरिंग के साथ सुबह-सुबह अपनी यात्रा शुरू की।
यिंग, प्रार्थना, पल्लू और मैं सहायक गाइड के साथ एक जीप में सवार हो गए। माहौल खुशनुमा था। साउंड सिस्टम से बॉलीवुड के गाने ज़ोर-ज़ोर से बज रहे थे। दो लोग एक गहरी, गहरी घाटी से गुज़र रहे थे। मैं तुरंत समझ गया कि वे स्थानीय नहीं हैं। पर्यटकों से ज़्यादा जुड़ाव होता है। वे आम तौर पर स्थानीय लोगों से लंबे और चौड़े होते हैं। उनकी जैकेटें ज़्यादा चमकीली थीं, और उनका चलने का तरीका अलग था। वे बड़ी मुश्किल से उस इलाके में चल रहे थे, जबकि स्थानीय लोग ऐसे गुज़र रहे थे जैसे किसी घर के पीछे के बगीचे के रास्ते पर टहल रहे हों। मुझे एहसास हुआ कि हम स्थानीय लोगों के लिए उतने ही अनोखे होंगे जितने वे हमारे लिए।
अपनी पूरी यात्रा के दौरान हम स्थानीय लोगों की तस्वीरें लेते रहे। उनमें से कुछ हमें देखकर मुस्कुराते हैं, कुछ उदासीन रहते हैं, और कुछ नाराज़ होकर मुंह फेर लेते हैं। अधिकतर लोग हैरान हैं - उनके चमकीले गहनों, बकरियों के झुंड, धूल से सने गालों और चमकीली आँखों में ऐसा क्या अनोखा है?

जब कैटी, स्पेरेलो और जेफ पहुंचते हैं, तो उनके चेहरे खुशी और उत्साह से लाल हो उठते हैं। उन्होंने अपनी पहली परीक्षा पास कर ली है। वे नारू ला दर्रे की ऊंचाइयों को पार कर चुके हैं।
कैटी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं घबराई हुई थी। लेकिन मैंने कर दिखाया।' समूह इकट्ठा होता है और तस्वीरें खिंचवाता है। सहायक गाइड, तीन दलीय सदस्यों के साथ, हमें छोड़कर जाने वाला है। सीमा के दूसरी ओर हमें अन्य सहायक मिलेंगे। खच्चरों की जगह याक होंगे। छिरिंग हमें चेतावनी देता है कि हमें चौकी के पास तस्वीरें नहीं लेनी चाहिए। हमें दलाई लामा की कोई भी तस्वीर या उनकी कोई भी रचना अपने साथ नहीं रखनी चाहिए, और हमें उनका नाम भी नहीं लेना चाहिए।
छिरिंग और रसोइया हमें करनाली नदी पर बने स्टील के पुल से पार ले जाते हैं। अब हम तिब्बत में हैं। तिब्बत दुनिया की छत है, और नगारी प्रांत, जिससे होकर हम इसमें प्रवेश कर रहे हैं, अपनी विशाल पर्वत श्रृंखलाओं के कारण दुनिया की छत की छत के रूप में जाना जाता है।
चौकी पर, सख़्त बालों और कठोर चेहरों वाले युवा चीनी सैनिक हमारे सामान की तलाशी लेते हैं। वे हर बैग खोलते हैं, हर किताब खंगालते हैं, हर लिप बाम की स्टिक खोलते हैं, हर ब्रा, अंडरवियर और सैनिटरी पैड वगैरह सब कुछ बाहर निकाल कर रख देते हैं। पल्लू और मैं एक-दूसरे को देखते हैं और सिर हिलाते हैं। हवाई अड्डे की सुरक्षा जाँचें इस तीखी जाँच के सामने मामूली लगती हैं, जो तलाशी से ज़्यादा एक तरह का उल्लंघन लगती है। मैं अपने कंधों पर जैकेट को और कसकर लपेट लेती हूँ।
हमारी मुलाकात हमारे नए गाइड से होती है, जो चीनी सरकार द्वारा नियुक्त एक तिब्बती व्यक्ति है। उसका नाम न्यिमा है। वह चौड़ा और कुछ हद तक गोल-मटोल है। उसकी त्वचा चिकनी है, छिरिंग की त्वचा के विपरीत, जो धूप और पहाड़ी हवा के कारण समय से पहले ही झुर्रियों से भर गई है। न्यिमा सैनिकों को दलाई लामा के किसी भी सुराग की तलाश करते हुए देखता रहता है। हमें आश्चर्य होता है कि क्या यह तिब्बती व्यक्ति जासूस है, अपने लोगों का गद्दार है। लेकिन न्यिमा काफी मिलनसार लगता है और हमें एक चालू मोबाइल फोन देता है। कई दिनों तक संपर्क न होने के बाद, हम आखिरकार अपने परिवारों से बात कर पाते हैं। हम उसे धन्यवाद देते हैं, हालांकि इससे इस शांत स्वभाव के व्यक्ति के प्रति हमारा अनसुलझा संदेह कम नहीं होता।

पल्लू जब न्यिमा के मोबाइल फोन पर बात करते हुए इधर-उधर टहल रही थी, तो न्यिमा का चेहरा खिल उठा। 'कैसी हो? क्या कर रही हो? मेरे जाने के बाद से कुछ बदला है क्या?'
उसकी आवाज सुनकर उसके पति अशोक को जरूर राहत मिली होगी। हरि की तरह अशोक भी चिंतित है। पल्लू अपनी मां से बात करती है, जो बच्चों की देखभाल कर रही है। पल्लू का मिलनसार और हंसमुख स्वभाव घर में रौनक लाता है और वह अपने परिवार का भावनात्मक केंद्र है।
‘सब ठीक हैं! मुझे लगता है कि आखिरकार उन्हें मेरी कमी महसूस हो रही है,’ वह फोन मुझे देते हुए कहती है। ‘शायद मुझे और भी अक्सर बाहर जाना चाहिए।’
उसे भी उनकी बहुत याद आ रही है। घर छोड़े हुए कितना लंबा समय बीत गया!
जब मैंने फोन किया तो हरि ने फोन उठाया। उसने कहा, 'मुझे सब कुछ बताओ।' मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ से शुरू करूँ, इसलिए मैंने उनसे पूछा कि घर पर क्या चल रहा है और बच्चे कैसे हैं। उनकी आवाज़ सुनना और घर के बारे में सुनना इतना अच्छा लगा कि मैं पास में खड़े उस सैनिक को भूल गई, जो चुपचाप मेरी सबसे निजी चीज़ों को देख रहा था।
इसके बाद स्पेरल्लो अपनी पत्नी से रुक-रुक कर इतालवी भाषा में बात कर रहे हैं।
मेरे पीछे से उत्साहित आवाज़ें आ रही हैं। यिंग कुछ सैनिकों से बात कर रही है। वह मुझे बताती है कि ये उसके घर के हैं, उसकी आँखें चमक रही हैं। सैनिक उसकी बात समझकर हमारी ओर मुस्कुराते हैं और सहमति में सिर हिलाते हैं। यिंग चीन के सिचुआन प्रांत में तिब्बत की सीमा से लगे एक कस्बे में पली- बढ़ी है। ये सैनिक उसके कस्बे के हैं। चीन के ग्रामीण इलाकों के नौजवानों के लिए सेना बेहतर जीवन का ज़रिया होती है, और इन सैन्य शिविरों से कई सैनिकों को चीन और तिब्बत की सीमाओं पर भेजा जाता है। वे अपने घर से दूर तैनात होते हैं, और एक परिचित चेहरा देखकर उनके चेहरे पर मुस्कान आ जाती है।
यिंग ने बाद में मुझसे कहा कि वह 'सीमा' शब्द के अर्थ को लेकर हैरान है। यह अलगाव का एक गहरा अर्थ समेटे हुए है। लेकिन जब आप सीमा रेखा पर होते हैं, तो यह अर्थ मानो गायब हो जाता है। दोनों ओर केवल धरती ही होती है। यिंग कहती है, शायद ये सैनिक सीमाओं को इतनी गंभीरता से नहीं लेते। एक जगह है, और सैनिकों को उसकी रक्षा करनी है, और शायद उनके लिए इस शब्द का यही अर्थ

है। जब सैनिक उससे बातचीत कर रहे थे, तो वे वैसे ही थे जैसे यिंग उन्हें देखती है: दूर-दराज के स्थानों पर ड्यूटी पर तैनात युवा, जो अपनी माँ, भाई, प्रेमिका और अपने गृहनगर को पीछे छोड़ आए हैं।
हमें एक छोटी, उदास सी सीमेंट की इमारत में ले जाया गया जहाँ हमें घंटों चिकित्सा परीक्षण, कागज़ात की जाँच और आगे के परमिट जारी होने का इंतज़ार करना पड़ा। हमने अपनी घड़ियाँ ठीक कीं; चीन नेपाल से दो घंटे पंद्रह मिनट आगे है।
फिर हमें पुरंग ले जाया जाता है, जो चीनी सैनिकों, अधिकारियों, पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की जरूरतों को पूरा करता है। तिब्बत में यह हमारा पहला और सबसे बड़ा शहर है। यह शहर अपनी नीरसता के कारण ही ध्यान खींचता है। सीमेंट से बनी छोटी-छोटी, चौकोर इमारतें मस्सों की तरह उग आई हैं। पुरंग उन सभी छोटे शहरों जैसा है जिन्हें इतनी तेजी से बनाया गया है कि उनमें अपनी कोई पहचान नहीं रह गई है। यह काठमांडू की चहल-पहल और उन पहाड़ी बस्तियों से बिलकुल अलग है, जिन्हें हमने अपनी यात्रा में देखा था, जिनकी सुंदरता बेमिसाल थी। हुमला के चमकीले बनियान, रंगीन कमीजें और गहने अब आम तौर पर बने हुए रेडीमेड कपड़ों में तब्दील हो गए हैं। लोग कम शांत और ज्यादा सतर्क दिखते हैं। मैं दुविधा में हूँ। मैं हुमला के जीवन को बढ़ा-चढ़ाकर पेश नहीं करना चाहता। वहाँ घोर गरीबी है, पर्याप्त अस्पताल और स्कूल नहीं हैं। फिर भी, जिस सुंदरता से हम गुजरे हैं, उसकी तुलना में पुरंग की आत्माहीनता दुखद लगती है।
पुरंग में एक एटीएम मशीन है, काठमांडू के बाद हमने पहली बार ऐसी एटीएम मशीन देखी है। यहाँ किराने की दुकानें हैं जहाँ टूथपेस्ट, कंघी और मेरी ज़रूरत की हर चीज़ मिल जाती है। इन छोटी-छोटी सुविधाओं से मुझे खुशी है। काश मुझे इतनी खुशी न होती – आखिर ये सब उस दुनिया का हिस्सा हैं जहाँ की इमारतें नीरस हैं और आधुनिकता इस इलाके पर थोपी गई लगती है।
छिरिंग हमें बताता है कि यहाँ हमें मोबाइल सिग्नल मिल जाएँगे और हमें एक खुले मिनी-मॉल में स्थित मोबाइल स्टोर की ओर इशारा करता है जहाँ सिम कार्ड बिकते हैं। मोबाइल स्टोर प्लास्टिक में लिपटे तकनीकी सामानों से भरा पड़ा है। पल्लू और मैं इधर-उधर घूमते हैं। ज़्यादातर साइनबोर्ड चीनी भाषा में हैं। काउंटर पर बैठा युवक दुबला-पतला है, उसके बाल सख़्त स्टाइल में बने हैं और वह ज़्यादा मदद नहीं करता। उसके पीछे कंप्यूटर स्क्रीन पर एक युवती

जो बचपन से असली चीनी खाना खाती आई हैं, ने भी खाने के बाद तारीफ में सिर हिलाया।
अगली सुबह, हमारा सारा सामान गाड़ियों में पैक कर दिया गया और सब लोग उसमें बैठ गए। शहर से निकलते समय, हम एक कम हवादार किराने की दुकान पर रुके और बोतलबंद पानी, बिस्कुट और अन्य ज़रूरी सामान खरीदा। पिछली रात के लज़ीज़ खाने के बावजूद, पुरंग के इस धूल भरे, सीमेंट के डिब्बों जैसे बंजर इलाके को छोड़कर निकलना कितना सुकून भरा था!
बाद में मुझे पता चला कि 'द पीकॉक' नाम वास्तव में बिल्कुल सही था। करनाली नदी को 'पीकॉक नदी' कहा जाता है, और इसका उद्गम स्थल, पुरंग से 30 किलोमीटर दूर, तिब्बती भाषा में 'पीकॉक माउथ' कहलाता है। पुरंग तिब्बती पुरंग साम्राज्य की प्राचीन राजधानी थी, और कहा जाता है कि गौतम बुद्ध के पूर्व अवतार सुधना बुद्ध ने यहाँ निवास किया था। प्रसिद्ध नौ मंजिला मठ, त्सेगु गोम्पा के खंडहर पास की एक पहाड़ी पर स्थित हैं। स्थानीय कोरचांग गोम्पा मंदिर में करुणा के देवता जोवो की प्रतिमा है, जो तिब्बत की तीन सबसे प्रसिद्ध प्रतिमाओं में से एक है। हालाँकि पुरंग का इतिहास समृद्ध है, मैं यहाँ के एटीएम, सिम कार्ड और होटल की पाइपलाइन में इतना खो गया था कि इस जगह की अनपेक्षित, छिपी हुई समृद्धि को देख ही नहीं पाया।

पहली नजर

राक्षस ताल, तिब्बत

ऊंचाई ~ 4,600 मीटर

कैलाश पहुँचने तक हमें तिब्बत के प्रतिबंधित क्षेत्र में अकेले नहीं घूमना चाहिए। हमें अपने नियुक्त मार्गदर्शक, शांत स्वभाव वाले न्यिमा की निरंतर निगरानी में ही हर जगह जाना होगा। योजना में किसी भी प्रकार का विचलन चीनी अधिकारियों से पूर्व स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है। इन सख्त निर्देशों को ध्यान में रखते हुए, हम दिन भर के लिए रवाना हुए।
सफेद लैंड क्रूज़र काली तारकोल की सड़कों पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी, तभी मैंने खिड़की से बाहर झाँका और अपनी ठुड्डी मुट्ठी पर टिका ली। सड़कें एक विशाल भूभाग को काटकर बनाई गई थीं जो रेत रहित, पथरीले रेगिस्तान जैसा दिखता था। हालाँकि यहाँ कुछ भी उगना असंभव सा लगता है, फिर भी ढलानों पर लगभग अदृश्य झाड़ियाँ बिखरी हुई थीं, और कुछ छोटे हिरण और पहाड़ी बकरियाँ उन्हें चर रही थीं। सदियों से, खानाबदोश लोग जौ और गेहूँ की खेती करते आए हैं, जिनका वे मैदानों में व्यापार करते हैं। रास्ते में वे अभी भी उन जगहों पर रुकते हैं जहाँ से हम अब तक गुज़रे हैं: पुरंग और यालबंग चौर घास का मैदान।
मेरे बगल में बैठी प्रार्थना ने खिड़की से बाहर इशारा करते हुए कहा, ‘देखो, देखो!’ वह चिल्लाई। दूर क्षितिज के पास, चमकीले नीले आकाश में कैलाश पर्वत की आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।
तिब्बती लोग कैलाश को गंग रिनपोचे (कीमती बर्फ का पर्वत) कहते हैं। इतनी दूरी से भी कैलाश अलग ही नज़र आता है। यह अन्य पर्वतों से भौगोलिक रूप से अलग है और अपनी चौड़ी त्रिकोणीय आकृति के कारण संरचनात्मक रूप से भी अद्वितीय है। इसके रंग भी अलग हैं, क्योंकि बर्फ पत्थर के अंधेरे में अधिक चमकती है। तृतीयक भूवैज्ञानिक युग की रूपांतरित चट्टानों से निर्मित कैलाश का पत्थर आसपास के पर्वतों के पत्थरों की तुलना में अधिक गहरा, सघन

पौराणिक कथाओं के अनुसार, यहीं रावण ने बैठकर शिव की आराधना की थी। रावण ने वर्षों तक प्रार्थना की, जब तक कि शिव कैलाश से नीचे नहीं आए और उसे वरदान नहीं दिया। शिव के महान भक्त रावण, महान हिंदू महाकाव्य रामायण के खलनायक हैं, जिसमें बताया गया है कि कैसे उन्होंने राम की पत्नी सीता का अपहरण किया, जिससे एक महान युद्ध छिड़ गया। रावण की उपस्थिति ने राक्षस ताल के जल को विषैला कर दिया था।
लेकिन पानी कितना शुद्ध दिखता है, कितना साफ है, लहरें सतह पर कितनी धीरे- धीरे उठती और गिरती हैं! लगता ही नहीं कि राक्षस ताल जहरीला हो सकता है। मैं अपने हाथों को कप की तरह बनाकर चुपके से एक छोटा सा घूंट पीती हूँ, कहीं पल्लू, छिरिंग या कोई और मुझे रोक न दे। इसका स्वाद बिल्कुल वैसा ही है जैसा यह है: ठंडा, ताजा, हल्का नमकीन पानी।
जब मैंने बाद में पल्लू को इसके बारे में बताया, तो उसने पूछा, 'तुमने ऐसा क्यों किया?'
'सिर्फ यह साबित करने के लिए कि जहर वाली बात सिर्फ अंधविश्वास है।'
‘किसे साबित करना है?’
‘मुझे नहीं पता। शायद सभी को। शायद मुझे। खैर, मैंने राक्षस ताल का पानी पिया और मैं ज़िंदा हूँ। देखा? कोई ज़हर नहीं!’ मैंने कंधे उचका दिए। पल्लू सिर हिलाकर कहती है, 'कोई ज़रूरत है?'
कैटी किनारे पर पत्थरों का ढेर बना रही है। वह हमें बुलाती है। हालाँकि हम उससे कुछ ही दिन पहले मिले हैं, फिर भी वह हमें पुरानी दोस्त जैसी लगती है। जब वह मुस्कुराती है, तो उसका चेहरा बदल जाता है और उसकी आँखें चमक उठती हैं; उसके कोमल चेहरे पर छोटे-छोटे तिल और भी खूबसूरत लगते हैं।
कैटी एक पत्थर डालती है, फिर पल्लू, फिर मैं। राक्षस ताल का पानी किनारे के पास चट्टानों से टकराते हुए मधुर ध्वनि उत्पन्न करता है। हम अपनी यात्रा, झील, हमारे चारों ओर की सुंदरता, सूर्य और कैलाश के बारे में बातें करते हैं। मैं अपने पत्थर के ढेर की एक तस्वीर लेता हूँ और दोस्ती को समर्पित करने का निर्णय लेता हूँ। पानी और द्वीपों को देखते हुए, मैं उनसे इस झील के किसी द्वीप पर जाकर ध्यान करने के अपने क्षणिक विचार को साझा करता हूँ। ‘क्या तुम ध्यान करती हो?’ केटी पूछती है। केटी कहती है कि वह भी ध्यान करती है और पूछती है कि क्या हम साथ में ध्यान कर सकते हैं।

हम सब झील के सामने एक-एक जगह चुन लेते हैं और वहाँ चुपचाप ध्यान लगाकर बैठ जाते हैं। 'एंटी-गॉड्स की झील' पर, इस यात्रा में पहली बार, मुझे अपनी साँसें धीमी होती हुई महसूस होती हैं।

हम जिन देवताओं की पूजा करते हैं उनकी पूजा क्यों करते हैं

कई साल पहले, जब मैं अमेरिका में रहता था, एक बार मेरे सहकर्मियों और मैंने अलबामा के एक ग्राहक के साथ एक वियतनामी रेस्तरां में दोपहर का भोजन किया। भोजन के बीच में, ग्राहक ने मुझसे एक सवाल पूछा। उसने पूछा कि हम हिंदू हाथी देवता की पूजा कैसे कर सकते हैं। (गणेश, शिव और पार्वती के पुत्र, का सिर हाथी जैसा है।)
‘मेरा मतलब है, ये तो हाथी है!’ उसने अविश्वास से आँखें चौड़ी करते हुए, हथेलियाँ ऊपर उठाते हुए कहा। ‘हाथी की पूजा कौन करता है?’
इस सवाल ने मुझे बेचैन कर दिया। हम इन देवताओं की पूजा क्यों करते हैं? भारत में, हम एक ऐसी संस्कृति में पले-बढ़े हैं जहाँ देवताओं का आदर किया जाता है, और अगर आप सोचें तो उन्हें समझाना वाकई मुश्किल है। हमारे पास न केवल हाथी देवता थे, बल्कि बंदर देवता, नाग देवता, वृक्षों की आत्माएँ और अनगिनत अन्य देवता भी थे। जब मैं उस व्यक्ति के सवाल का जवाब देने की कोशिश कर रहा था, तो मुझे लगा कि बहुत कुछ दांव पर लगा है। ऐसा लग रहा था मानो अनादिकाल से सभी हिंदू मेरी निगरानी कर रहे हों, और मुझसे कोई ठोस जवाब सुनने की प्रतीक्षा कर रहे हों। लेकिन हिंदू विश्वदृष्टि को समझाने का काम मेरे लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं था। पहली बात तो यह कि मुझमें कोई धार्मिक विश्वास नहीं था; दूसरी बात, मैंने इस सवाल पर पहले कभी गंभीरता से विचार ही नहीं किया था।
ऐसा नहीं है कि मुझे सवाल पूछने से डर लगता है। एक बार मंदिर में मेरी एक पुजारी से गहन चर्चा हुई थी, जिसमें मैंने यह सवाल उठाया था कि क्या अनुष्ठान सार्थक होते हैं, यह देखते हुए कि हिंदू धर्म का एक उद्देश्य माया से मुक्ति पाना और हर पल के सार सत्य को समझना है। यह चर्चा तब हुई जब मेरा परिवार मंदिर के अंदर अनुष्ठान करने में लीन था। हालांकि मैंने कई

चीजों पर सवाल उठाए थे, लेकिन मैंने कभी यह सवाल नहीं उठाया था कि हम हिंदू अपने देवी-देवताओं की पूजा क्यों करते हैं।
शायद इसका कारण यह है कि हमारी संस्कृति में देवता इतने व्यापक रूप से मौजूद हैं कि आप शायद ही उन्हें नोटिस करते हैं। हमारा संगीत और नृत्य भक्तिमय हैं, हमारी कला में हमारे देवी-देवताओं और पौराणिक कथाओं का चित्रण होता है, और हमारी अधिकांश प्रिय कहानियाँ हमारे देवताओं के बारे में हैं। सड़क किनारे की दुकानों के नाम भी उन्हीं के नाम पर रखे गए हैं; आपको श्री वेंकटेश्वर टिफिन हाउस, साई बाबा नाई की दुकान और नैतिक रूप से एक अनोखे मोड़ पर गणेश वाइन शॉप भी मिल जाएगी। भारत में हमारे देवता हर जगह मौजूद हैं और हर चीज़ में शामिल हैं।
जब मैं छोटी बच्ची थी, तो मैं कई देवी-देवताओं में विश्वास करती थी। मुझे लगता था कि वे मेरी माँ के पूजा कक्ष में रंग-बिरंगे चित्रों में बने देवताओं जैसे दिखते हैं, और मेरी दादी द्वारा सुनाई गई सभी देवी-देवताओं से जुड़ी कहानियों और मिथकों पर मैं बिना किसी संदेह के विश्वास करती थी। और क्या ही थीं वो कहानियाँ! रंग और नाटकीयता से भरपूर, उनके कथानक पहाड़ों की ढलानों पर घुमावदार मोड़ों की तरह टेढ़े-मेढ़े थे। हमारे नायक और देवता युद्ध लड़ते हैं, प्रेम करते हैं, प्यार करते हैं, ज़रूरत से ज़्यादा खाते हैं और अपना आपा खो देते हैं। मनुष्य उनसे जुड़ाव महसूस कर सकते हैं। हम उनके लिए सहानुभूति रखते हैं और उनसे वैसा ही स्नेह करते हैं जैसा आमतौर पर मित्रों और परिवार के सदस्यों के लिए होता है। मेरे चाचा अक्सर कहते हैं कि वे धन की देवी लक्ष्मी के गालों को छूकर, उनकी प्रिय देवी से, अपना सौभाग्य लाने की प्रार्थना करते हैं। पौराणिक फिल्मों के दौरान मेरी चाची कहती हैं, 'भगवान शिव को क्या हो गया है? वे इतनी आसानी से मूर्ख बन जाते हैं और हर तरह के लोगों को वरदान दे देते हैं!'
मेरे माता-पिता के घर में, मेरी माताजी मुख्य रूप से संरक्षण के देवता विष्णु के विभिन्न अवतारों की पूजा करती थीं। बचपन में, मुझे शिव से थोड़ा डर लगता था। लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मुझे शिव सभी देवताओं में सबसे आकर्षक लगने लगे।
शिव की प्रतिमा अत्यंत अद्भुत है, क्योंकि इसमें मौलिक और रहस्यमय तत्वों का सम्मिश्रण है, जो मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। शिव के गले में सांप कुंडली मारकर रेंगते हैं, मानो जीवित और विषैले आभूषण हों। अन्य हिंदू

देवता रेशम के वस्त्र पहने हैं, जबकि शिव बाघ की खाल धारण करते हैं। विष्णु के मुकुट की तरह सुंदर और रत्नजड़ित मुकुट के बजाय, शिव के सिर पर जटाओं का ढेर है, जिसमें अर्धचंद्र हीरे की तरह चमकता है। उन्होंने अपने माथे पर राख की लकीरें लगाई हैं। उनकी तीन आंखें हैं, और तीसरी आंख इतनी शक्तिशाली है कि जब वह खुलती है, तो जिस पर भी उसकी नजर पड़ती है, वह जलकर राख हो जाती है। हालांकि ये चित्रण अधार्मिक लग सकते हैं, लेकिन सब कुछ प्रतीकात्मक है। तीसरी आंख अंतरिक्ष और समय से परे देखने की क्षमता को दर्शाती है। माथे पर राख की लकीरें मानव चेतना के विकास के विभिन्न मानसिक चरणों को दर्शाती हैं। चंद्रमा करुणा का प्रतीक है।
शिव के अनेक रूप हैं, जिनमें से प्रत्येक किसी विशेष गुण या भाव को दर्शाता है। सदाशिव रूप में उनका नृत्य परोपकारी है और भ्रम का नाश करता है, जिससे सत्य का ज्ञान प्राप्त होता है। नीलकंठ रूप में वे रक्षक हैं, जिनका गला संसार को बचाने के लिए समुद्र के विष को पीने से नीला हो गया था। प्राचीन, आर्य-पूर्व रुद्र रूप में वे अच्छे और बुरे, राजाओं और चोरों के संरक्षक हैं। भयानक काल भैरव रूप में वे श्मशान घाटों में विचरण करते हैं और मृतकों की राख से तब तक शरीर को मलते हैं जब तक कि उनका शरीर नीला न हो जाए और फिर वे उन्मादी और अनियंत्रित नृत्य करने लगते हैं, सब कुछ जला देते हैं, ताकि नई चीजों का निर्माण हो सके। काल भैरव रूप में वे सर्वोच्च संहारक हैं, जो काल (समय) का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सभी का सबसे बड़ा संहारक है। (कुछ कथाओं में, कैलाश के बुद्ध दम्चोक को काल भैरव का बौद्ध रूप माना जाता है।) इन सभी कथाओं में, शिव जीववादी मासूमियत और महान ज्ञान के प्रतीक हैं - जिसका अर्थ है कि अक्सर ये दोनों एक ही हैं। शिव के विविध स्वरूपों को कई स्थानीय देवताओं का समामेलन माना जाता है, जो सदियों से एक ही शिव की अवधारणा में विलीन हो गए हैं।
शायद एक ही ईश्वर के अनेक रूपों और अनेक भिन्न-भिन्न देवताओं का कारण हिंदू धर्म का समन्वयवादी होना है। यह विभिन्न विश्वास प्रणालियों को मिलाकर विश्वासों और देवताओं का एक ताना-बाना बुनता है। शायद इसी कारण हिंदू धर्म, या इसके विभिन्न रूप, सदियों तक जीवित रह पाए। बौद्ध धर्म में भी इस दृष्टिकोण के कुछ पहलू मिलते हैं। तिब्बती बौद्ध धर्म में, भारतीय संत पद्मसंभव को तिब्बत के राजा ने स्थानीय राक्षसों को वश में करने के लिए बुलाया था, जो संभवतः किसी अन्य स्थानीय धर्म के देवता थे। हत्या करना

एक प्रकार की विजय है, लेकिन पद्मसंभव ने अपनी असाधारण शक्तियों का उपयोग करके राक्षसों को तिब्बत में बौद्ध धर्म का रक्षक बनने के लिए राजी कर लिया और उन्हें उन बौद्ध देवताओं में शामिल कर लिया जो पुराने देवताओं से जुड़ी सांस्कृतिक स्मृति को संरक्षित करने का काम करते थे। शायद हिंदू पूजा में भी यही हुआ, जब स्थानीय जनजातीय देवताओं को मौजूदा हिंदू देवताओं के रूपों में ढाल लिया गया।
लेकिन शिव को विनाश का देवता कैसे समझाया जा सकता है? विनाश की पूजा कौन करता है? मेरे ईसाई और मुस्लिम मित्र जहाँ सृष्टिकर्ता ईश्वर की पूजा करते हैं, वहीं हमारे यहाँ विनाशक देवता हैं, और हमारे सृष्टिकर्ता देवता ब्रह्मा को पूजा के योग्य नहीं माना जाता।
उस दिन दोपहर के भोजन के समय, जब मैं ग्राहक के प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास कर रहा था, मैंने प्रतीकात्मकता और निराकार (निर्गुण ब्रह्म) की पूजा के विचार के बारे में कुछ बुदबुदाया, लेकिन यह बात मुझे स्वयं भी विश्वसनीय नहीं लगी। मैं इस विचार को कैसे समझा सकता था कि एक अनेक हो सकता है, और अनेक एक हो सकते हैं, और दोनों ही सत्य के समान रूप से मान्य निरूपण हो सकते हैं? फिर भी, शायद यही एक अच्छा उत्तर था। किसी भी स्थिति में, शायद यही एकमात्र उत्तर था जो एकेश्वरवादी विश्वदृष्टि से मेल खा सकता था। अनेक हिंदुओं के लिए, अनेक देवताओं में विश्वास निराकार चेतना में विश्वास को नकारता नहीं है। एक हिंदू के रूप में, आप एक या अनेक देवताओं में विश्वास कर सकते हैं, या आप एक सर्वोच्च चेतना में विश्वास कर सकते हैं। या दोनों में। या किसी में भी नहीं। वास्तव में, आप सब कुछ पा सकते हैं।
काश मैंने ग्राहक को बताया होता कि हिंदू विभिन्न देवताओं की पूजा अलग-अलग कारणों से करते हैं। वे शिव की पूजा इसलिए करते हैं क्योंकि सृजन और पालन की तरह विनाश भी जीवन चक्र का एक हिस्सा है और पूजा के योग्य है। चूंकि पुरानी का अंत हुए बिना कुछ नया नहीं बन सकता, इसलिए शिव इस बात का प्रतीक हैं कि सभी चीजों का क्षणभंगुर होना आवश्यक और अच्छा दोनों है। हिंदू शिव के पुत्र, हाथी देवता गणेश की पूजा इसलिए करते हैं क्योंकि वे विवेक और सौभाग्य के गुण का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे पार्वती की पूजा इसलिए करते हैं क्योंकि वे महान शक्ति का प्रतीक हैं। वे प्रत्येक देवता की पूजा अलग-अलग कारणों से करते हैं और सभी देवताओं की पूजा एक ही कारण से करते हैं। वे

विभिन्न देवताओं को संकट के समय में शरण का स्रोत और धर्मिक व्यवस्था को बनाए रखने का प्रयास करने वाले दिव्य प्राणी मानते हैं - जो हिंदुओं का नैतिक और आचरण संबंधी संहिता है। बौद्धों का भी धर्म (पाली में धम्म) का एक रूप है, हालांकि यह हिंदू रूप से कुछ भिन्न है। धर्म या धम्म समाज, पशुओं, ब्रह्मांड और यहां तक कि स्वयं देवताओं को भी नियंत्रित करता है।
ग्राहक द्वारा मुझसे वह प्रश्न पूछे जाने के बाद कई वर्ष बीत चुके हैं। मैं उसे भूल ही गया था। लेकिन इन स्थानों पर आकर, जहाँ आस्था और किंवदंतियाँ अक्षांश, देशांतर, मिट्टी और पत्थर की तरह ही वास्तविक हैं, वह प्रश्न याद आ गया जो स्मृति के धुंधले कोनों में खो गया था। अब, देवताओं की भूमि में, उसी भूमि में जहाँ वे चले, सोए, खाए और स्नान किए, मुझे उत्तर मिल गया। हिंदू अपने देवताओं की पूजा उसी कारण से करते हैं जिस कारण से अन्य सभी लोग अपने देवताओं की पूजा करते हैं - क्योंकि देवता उनके लिए कुछ मायने रखते हैं।

डुबोना, साफ करना

Lake Manasarovar, Tibet,

ऊंचाई ~ 4,600 मीटर

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक बार देवताओं ने सृष्टि के स्वामी ब्रह्मा से पास के कैलाश पर्वत पर शिव की आराधना करने से पहले पवित्रता प्राप्त करने के लिए एक स्थान का अनुरोध किया था। ब्रह्मा ने तब अपनी मनस (चेतना) की शक्ति का प्रयोग करके सरोवर (झील) की रचना की। ऐसा माना जाता है कि यह झील इतनी पवित्र है कि इसमें डुबकी लगाने वाले किसी भी व्यक्ति के जीवन भर के पाप धुल जाते हैं। कहा जाता है कि दिव्य प्राणी रात में आकाश से प्रकाश के रूप में झील में उतरते हैं। हर साल भोर से पहले मानसरोवर झील के ऊपर अजीबोगरीब रोशनी मंडराती हुई देखी जाती है। लोग इन रोशनी को दिव्य प्राणियों का रूप मानते हैं।
बौद्ध पौराणिक कथाओं में भी मानसरोवर झील एक पवित्र स्थान है। यहीं पर बुद्ध की माता माया ने गर्भ धारण करने से पहले स्नान किया था। बौद्धों का मानना है कि यह झील अनोत्तत झील का भौतिक रूप है, जिसे विश्व के केंद्र में स्थित झील या तापहीन झील भी कहा जाता है, जिसमें एक डुबकी लगाने से पाप की गर्मी हमेशा के लिए धुल जाती है। इन पौराणिक कथाओं को छोड़ दें तो, मैं इस झील को देखने के लिए बहुत उत्सुक हूँ।
जब हम मानसरोवर पहुँचे तो दोपहर हो चुकी थी। सुबह का सूरज ढल चुका था और बादलों के पीछे छिप रहा था। जीप से उतरने के बाद, मैं समूह और उनकी उत्साहपूर्ण बातचीत से थोड़ा पीछे हट गया। मैंने झील को मंद, नीले-धूसर रंग के पानी से ढका हुआ देखा, किनारे पर पतली-पतली तांबे के रंग की भूरी घास थी, और हमारे और उदास आकाश के बीच खड़े गहरे भूरे और लाल पहाड़ दिखाई दिए।
झील पर शांति से तैरते लंबे गर्दन वाले हंस कहाँ हैं? हवा में लहराते हरे सरकंडे और घास कहाँ हैं? यह नजारा अवास्तविक है, मानो किसी काल्पनिक

विज्ञान कथा उपन्यास की दुनिया हो। राक्षसों के खारे पानी के तालाब - राक्षस ताल - की सुंदरता को निहारने के बाद, देवताओं का मीठे पानी का तालाब नीरस और रहस्यमय सा लगता है। अपनी निराशा को दबाते हुए, मैं शिविर स्थल की ओर तेजी से बढ़ता हूँ जहाँ छिरिंग और उसकी टीम हमारे तंबू लगा रही है। ‘Kavi! Manasarovar!’ Pallu says, her face glowing.
'हाँ।' मैंने मुस्कुराने की कोशिश की।
‘आपको पता है, मुझे यकीन नहीं था कि हम सच में सफल हो पाएंगे,’ पल्लू कहती हैं।
एक उम्र तक पहुँचते-पहुँचते आप जान जाते हैं कि आप क्या हैं और क्या नहीं। एक बात मैं जानती हूँ कि पल्लू और मैं किसी बात पर अड़े रहने वाले लोग नहीं हैं; हम वो लोग हैं जो हालात के साथ चलते हैं। लेकिन इस बार ऐसा नहीं था। समय बीतने, नाकाम कोशिशों और अपने पतियों की चिंताओं के बावजूद, हमने इस यात्रा का विचार ज़िंदा रखा। और हमने इसे मुमकिन कर दिखाया। मंज़िल ज़रूरी है, लेकिन वहाँ तक का सफ़र और नाकामियों के बावजूद डटे रहना भी उतना ही ज़रूरी है।
‘यह तो अद्भुत है, पल्लू! हम सचमुच यहाँ हैं। मानस में।’
मैंने छिरिंग से कहा, 'राक्षस ताल झील का पानी अलग दिखता है। वह नीला है। यहाँ का पानी धूसर दिखता है।'
उनका कहना है कि यह महज़ प्रकाश है। दोनों झीलें गंगा-चू नदी से जुड़ी हुई हैं और दोनों में एक ही जल प्रवाहित होता है। जब नदी में पानी भरा होता है, तो इसका मतलब है कि तिब्बत के लिए शुभ समय है।
छिरिंग कहते हैं, 'इन दिनों गंगा चू पहले की तरह भरी हुई नहीं रहती।'
वह हमें बताता है कि चीनी लोग तिब्बत के पहाड़ों से सोना, खनिज और तेल निकाल रहे हैं। नदियों पर बांध बनाए जा रहे हैं और पानी को चीन की ओर मोड़ा जा रहा है। ऐसी अफवाहें हैं कि मानसरोवर झील का पानी भी निकाला जा रहा है (हालांकि मुझे इसका कोई सबूत नहीं मिला)। विकास तो हो रहा है, लेकिन यह हर जगह नहीं पहुंचा है और पर्यावरण को व्यापक नुकसान हो रहा है।
‘और तिब्बती लोग? वे क्या कहते हैं?’ मैंने उनसे पूछा।
‘वे क्या कह सकते हैं?’ छिरिंग अपना सिर हिलाता है। तिब्बती लोग कुछ कह नहीं सकते।

कैटी ने हमें बताया कि सब लोग झील में डुबकी लगाने जा रहे हैं। क्या हम भी उनके साथ चलना चाहेंगे?
‘हमारा इंतजार करो!’ पल्लू कहता है।
हम तौलिये ढूंढने के लिए अपने बैग खंगालते हैं।
‘वहाँ बहुत ठंड होगी।’ पल्लू कांप उठी।
'झील का पानी आपके पापों को धो देता है। क्या आप नहीं चाहते कि आपके पाप धुल जाएं?'
‘अगर मुझे पता होता कि मैं अपने पाप धो पाऊँगी, तो मैं और भी पाप करती,’ पल्लू कहती है। हम हँसते हुए अपने बैग टांगते हुए झील की ओर चल पड़ते हैं। छिरिंग हमें सावधान रहने को कहता है। पानी ठंडा है और इससे हमारे रक्त संचार में रुकावट आ सकती है, जिससे हमें ऊंचाई पर होने वाली बीमारी का खतरा हो सकता है। मैं सिर हिलाता हूँ, लेकिन उसकी चेतावनियों का मुझ पर कोई असर नहीं होता। मैं बस मानसरोवर झील के बारे में सोच रहा हूँ। मैं इसके किनारों पर चल रहा हूँ, और मैं इसके पानी में डुबकी लगाऊंगा और इसके किनारों पर सोऊंगा।
सूरज की गर्मी और बर्फीली ठंडी हवा मेरे गालों पर मिलकर एक अद्भुत एहसास पैदा करती हैं। कीचड़ और मुलायम पत्थरों के टीलों के पास से गुजरते हुए, जो कॉफी-भूरे और आड़ू रंग की परतों में बंटे हुए हैं, हमारे जूतों के नीचे कंकड़-पत्थर चरमराते हैं। रास्ते में मणि के पत्थर बिखरे पड़े हैं। दरारों के अंदर झील के देवताओं को अर्पित की गई वस्तुएँ हैं: याक के सींग और जले हुए काले घी के दीपक।
‘मैं अंदर जा रही हूँ!’ मैं चिल्लाई और दौड़कर अंदर चली गई। मैंने अपनी साँस रोक ली और झुक गई। मैं चीखना चाहती थी; पानी बहुत ठंडा था। कड़ाके की ठंड के झटके में, मैं हर चीज़ के प्रति सचेत हो गई: मेरे दिल की धड़कन, भयानक ठंड, पानी में मेरे कपड़ों का लहराना। मैं कुछ ही सेकंड के लिए पानी में डूबी रही, लेकिन इतना काफी था। मैं बाहर भागी। काँपते हुए, मैंने सूखे कपड़े पहन लिए इससे पहले कि ठंड मेरी हड्डियों तक जम जाए।
पल्लू धीरे-धीरे पानी में उतरती है, सावधानी से डूबती है। कुछ ही सेकंड बाद, वह वापस ऊपर आ जाती है, अपने दाहिने हाथ में कुछ पकड़े हुए। मैं धूप में आंखें सिकोड़कर देखती हूँ। क्या यह रुद्राक्ष की माला है? रुद्राक्ष की माला बड़े भूरे रंग के मनकों की एक माला होती है, जिसका उपयोग शिव की

पूजा में किया जाता है। पल्लू अपना हाथ खोलती है और आश्चर्य से माला को देखती है। एक क्षण बाद, वह मनकों को अपने हाथ में बंद कर लेती है और उतनी ही धीमी गति से झील से बाहर निकल जाती है जितनी धीमी गति से वह अंदर गई थी।

झील पर रोशनी

Lake Manasarovar, Tibet

ऊंचाई ~ 4,600 मीटर

वापस अपने तम्बू में आकर, पल्लू माला को कपड़े में लपेटने लगती है।
मैं हाथ बढ़ाकर इसके कठोर, खांचेदार मनकों को सहलाती हूँ। यह माला शिव पूजा का एक पूजनीय प्रतीक है। इसके मनके रुद्राक्ष के वृक्ष के फल हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि वे शिव के आँसुओं से उत्पन्न हुए हैं। कई हिंदू झील में माला का मिलना शिव का विशेष संकेत और आशीर्वाद मानते हैं। मेरी चचेरी बहन इसे ऐसे रख देती है जैसे यह कोई पत्थर या सीप हो, उसका आमतौर पर भावपूर्ण चेहरा भावहीन प्रतीत होता है।
मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम्हें नहीं लगता कि यह अविश्वसनीय था?'
‘खैर, मुझे लगता है कि यह माला खास है। मुझे नहीं पता कि यह कैसे मिली। यह तो बस संयोग था,’ वह कंधे उचकाते हुए कहती है।
वह बिल्कुल सही कह रही है। यह संयोग है। मैं चुप रहता हूँ। आमतौर पर मैं संशयवादी होता हूँ और वह आस्तिक।
पल्लू धार्मिक नहीं है, लेकिन आस्था के मामले में उसका दृष्टिकोण खुला है और वह अक्सर आध्यात्मिक विचारों और संगीत से प्रभावित होती है। बोर्डिंग स्कूल में, हम सप्ताह में दो बार सुबह की सभा में भाग लेते थे, जिसमें हम भजन गाते थे। पल्लू का पसंदीदा गीत 15 वीं शताब्दी के कवि कबीर दास का था। ‘इस शरीर और धन का मालिक कौन है? जब मैं तुम्हारी आँखों में देखता हूँ, तो मुझे केवल धरती ही दिखाई देती है।’
भौतिक और सांसारिक जगत की अनित्यता पर किया गया यह ध्यान शिव के आदर्शों से मेल खाता है।
इस गीत में मार्मिक बिम्बों का समावेश है। हिंदू अपने मृतकों का अंतिम संस्कार करते हैं, और कबीर अंतिम संस्कार की चिता के बारे में लिखते हैं, 'तुम्हारी भुजा लकड़ी के लट्ठे की तरह जलेगी, और तुम्हारे बाल जलती हुई घास

जाना था और वह जानना चाहती थी कि क्या मैं भी जाना चाहता हूँ। हम अकेले जाना पसंद नहीं करते, कहीं कोई गिर न जाए, बीमार न पड़ जाए या इंसान खाने वाले कुत्तों से सामना न हो जाए।
‘आ रहा हूँ। बस एक पल,’ मैंने कहा।
‘रुको,’ प्रार्थना कहती है। ‘यह क्या है?’
‘क्या?’ मैं तंबू से बाहर रेंगकर निकला।
‘वहाँ! देखो!’ वह झील की ओर इशारा करती है। मुझे दूसरी तरफ एक रोशनी मंडराती हुई दिखाई देती है। वह बड़ी और गोल है और कंपन कर रही है।
‘शायद दूसरे किनारे पर कोई डेरा डाले हुए हो?’ मैं कहता हूँ, जैसे ही रोशनी धीमी होकर तेज होती है। और क्या हो सकता है?
‘लेकिन यह ज़मीन पर तो नहीं है। है ना?’ हम दोनों के मन में यही सवाल उठ रहा है। क्या पौराणिक दिव्य प्राणी झील पर उतर रहे हैं?
प्रार्थना को पल्लू को जगाने का ख्याल आने में पूरा एक मिनट लग जाता है। ‘पल्लू, पल्लू!’ मैं दौड़कर अपने तम्बू में घुस गई। ‘तुम्हें यह देखना ही होगा!’
जब तक मेरी चचेरी बहन अपने तम्बू से जल्दी-जल्दी बाहर आती है, तब तक रोशनी गायब हो चुकी होती है। मुझे खुद पर बहुत गुस्सा आता है कि मैंने उसे पहले क्यों नहीं बुलाया। हम तीनों कुछ देर तक वहीं खड़े होकर झील को देखते रहते हैं। रोशनी दोबारा नहीं आती।

चिउ गोम्पा, पक्षी मठ

Lake Manasarovar, Tibet

ऊंचाई ~ 4,600 मीटर

घर पहुँचकर मैं सबको क्या बताऊँगी? मैंने झील पर एक रोशनी देखी – वो सचमुच थी। लेकिन मैंने जो समझा, उसमें से कितना सच था? मेरे ध्यान गुरु कहते हैं कि मन एक पेचीदा जीव है।
क्या यह पृथ्वी पर अवतरित दिव्य प्राणियों का प्रकाश था या सामने वाले किनारे पर स्थित किसी शिविर का प्रकाश? मुझे आश्चर्य होता है कि क्या उस पार के लोगों ने प्रार्थना की टॉर्च देखी और झील पर दिव्य प्राणियों के मंडराने की संभावना पर आश्चर्यचकित होकर वहीं खड़े रह गए। क्या हमने जो प्रकाश देखा वह महज़ एक सुंदर कहानी पर विश्वास करने की आपसी लालसा का प्रतिबिंब था? फिर भी, प्रकाश झील पर मंडरा रहा था, किनारे पर नहीं। प्रार्थना ने उसे देखा; मैंने उसे देखा। कल रात, मैंने जो देखा उसे सच माना। दिन के उजाले में, मेरे मन में केवल प्रश्न हैं।
'कवि, पल्लू! जागो! कॉफ़ी!' छिरिंग ने आवाज़ दी।
मैं पहले से ही जाग चुका हूँ। सुबह की ठंडी हवा में, छिरिंग के दल का एक सदस्य हमारे तंबू के बाहर गर्म काली कॉफी के दो मग रख देता है। यह एक विलासिता होने के साथ-साथ जागने का एक कारगर तरीका भी है। हमें तुरंत अपने स्लीपिंग बैग से बाहर निकलकर कॉफी लेनी होगी, नहीं तो यह कुछ ही सेकंड में ठंडी हो जाएगी।
हर सुबह, पल्लू और मुझे अपने स्लीपिंग बैग पैक करने में बेहद मुश्किल होती है। इसके लिए हमें मिलकर प्रयास करना पड़ता है: वह मेरा थैला खोलकर रखती है जबकि मैं अपना स्लीपिंग बैग उसमें डालता हूँ, और फिर मैं भी उसके लिए ऐसा ही करता हूँ।
'सब तैयार है,' पल्लू ने बैग के डोरी को बंद करते हुए कहा।

आज सुबह हमें ज्यादा दूर गाड़ी नहीं चलानी पड़ेगी। मानसरोवर झील के नज़ारे के सामने, एक छोटी और ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी पर फैला हुआ, चियू गोम्पा मठ परिसर स्थित है।
पहली नज़र में चियू गोम्पा किसी टीले पर बने विशाल चींटी के टीले जैसा दिखता है। यह समानता न केवल आकार में है, बल्कि इसके लाल-भूरे रंग में भी है। तिब्बती भाषा में चियू का अर्थ 'पक्षी' या 'गौरैया' होता है, और इमारतें भी ठीक वैसी ही दिखती हैं - जैसे किसी पहाड़ी पर पक्षी बैठे हों। नारंगी- लाल रंग से सजी खिड़कियाँ ही इन संरचनाओं में एकमात्र रंग भरती हैं, जबकि पहाड़ी की चोटी पर लाल, पीले और नीले रंग के प्रार्थना झंडों से लटकती रस्सियों का एक लहराता हुआ जाल दिखाई देता है।
तिब्बती बौद्धों के लिए चिउ गोम्पा सबसे पवित्र स्थानों में से एक है। यह मंदिर परिसर उस गुफा के चारों ओर विकसित हुआ था जिसमें गुरु रिनपोचे (या पद्मसंभव) ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले अपनी पत्नी के साथ ध्यान किया था। गुरु रिनपोचे का अंतिम स्थल होने के कारण, इस मठ का बहुत महत्व है। फिर भी यह अजीब तरह से निर्जीव प्रतीत होता है और इसकी सरल, जर्जर इमारतें इसके महत्व को शायद ही दर्शाती हैं। लेकिन, जो चिउ गोम्पा मैं अब देखता हूँ, वह अपने स्वर्णिम काल का चिउ गोम्पा नहीं है। यह एक सक्रिय मठ और शिक्षा का केंद्र हुआ करता था, जब तक कि चीनियों ने तिब्बत पर आक्रमण के बाद के वर्षों में इसे लगभग पूरी तरह से नष्ट नहीं कर दिया। यद्यपि 1980 के दशक में संरचना को उसके वर्तमान स्वरूप में बहाल कर दिया गया था, फिर भी दीवारें, द्वार और संकरी और असमान आंतरिक सीढ़ियाँ अभी भी जर्जर दिखाई देती हैं। चिउ गोम्पा मठ कोई अकेला मामला नहीं है। चीनी आक्रमण से पहले तिब्बत में 6,000 से अधिक मठ थे; 1976 तक, केवल तेरह ही बचे थे।
कुछ भिक्षु बेपरवाही से हमारे पास से गुज़रते हैं। एक वृद्ध भिक्षु हमें उस स्थान का भ्रमण कराते हैं। वे नाराज़ प्रतीत होते हैं; उनका चेहरा उदास है। हमने सुना है कि मूल भिक्षुओं को मार डाला गया और उनकी जगह इन चीनी भिक्षुओं को बिठा दिया गया। इस स्थान और हुमला के जीवंत और खुशहाल यालबांग मठ के बीच का यह बेतुका अंतर मुझे स्तब्ध कर देता है। जैसे ही हम भिक्षु के पीछे चलते हैं, स्पेरेलो अपना सिर हिलाते हैं। भौतिक विनाश स्पष्ट है, लेकिन एक संस्कृति का विनाश और एक जनमानस पर कब्ज़ा, हालांकि कम स्पष्ट है, फिर भी स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है।

तिब्बत में आपको हर पल निगरानी का एहसास होता है। चौकियों पर तैनात गार्ड विशाल और सुनसान सड़कों पर पहरा देते हैं। स्थानीय लोग शत्रुतापूर्ण और सतर्क प्रतीत होते हैं। लेकिन इसमें उन्हें दोष क्यों दिया जाए? मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि इतनी कड़ी निगरानी में रहना कैसा होगा, यह जानते हुए कि मुझे किसी भी समय और किसी भी कारण से रोका और गिरफ्तार किया जा सकता है।
हममें से अधिकांश लोगों के लिए कहानी स्पष्ट प्रतीत होती है: तिब्बत पर चीन ने आक्रमण कर दिया है, वहां के लोगों पर अत्याचार हो रहा है और उनकी संस्कृति का संहार किया जा रहा है। लेकिन यिंग के लिए यह इतना सरल नहीं है। उनका पालन-पोषण चीन में हुआ, जहाँ, उनके अनुसार, उनका ब्रेनवाश किया गया था। प्राथमिक विद्यालय से लेकर माध्यमिक विद्यालय तक, चीनी बच्चों को आधिकारिक चीनी कथा सिखाई जाती थी - कि दलाई लामा एक दुष्ट और भ्रष्ट जादूगर थे जिन्होंने अपनी प्रजा का शोषण किया, उन्हें जहर दिया और गुलाम बनाया। उन्हें भेड़ की खाल में भेड़िया कहा जाता था। चीनियों के अनुसार, तिब्बती दलाई लामा से भयभीत थे और उनसे नफरत करते थे। छात्रों को सिखाया जाता था कि 1950 के दशक की शुरुआत में चीन द्वारा तिब्बत पर आक्रमण एक स्वागत योग्य मुक्ति थी जिसके लिए तिब्बती आभारी थे। बच्चों को बताया गया कि इन घटनाओं की कोई भी अन्य व्याख्या चीन विरोधी अनैतिक पश्चिमी लोगों द्वारा गढ़ा गया झूठ है। युवा यिंग के लिए, ये इतिहास की किताबों में दर्ज निर्विवाद तथ्य थे। बड़े होते हुए, उन्होंने तिब्बत के बारे में कभी ज्यादा नहीं सोचा। वह राजनीति से दूर रहीं और वहाँ की स्थिति ने उनके जीवन को प्रभावित नहीं किया। न्यू जर्सी में बसने और अमेरिकी नागरिक बनने के बाद भी, वर्षों तक उनके विचार अपरिवर्तित रहे।
2009 में यिंग तिब्बत की यात्रा पर गईं। चीनी सरकार ने उनके साथ हर जगह जाने के लिए एक तिब्बती ड्राइवर और एक गाइड नियुक्त किया था। उन्होंने एक चार पहिया वाहन में पूरे देश की यात्रा की: ल्हासा, शिगात्से, एवरेस्ट बेस कैंप और रास्ते में पड़ने वाले छोटे-छोटे कस्बों और गांवों में। उस एक महीने की यात्रा के दौरान, उन्होंने कुछ स्थानीय लोगों और अपने गाइड और ड्राइवर से बातचीत की। यिंग को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि तिब्बती लोग दलाई लामा से नफरत नहीं करते थे और न ही उन्हें बुरा मानते थे। यह महसूस करते हुए कि सच्चाई उनके द्वारा सिखाई गई बातों से कितनी अलग थी, यिंग ने अपने

इतिहास के पाठों पर सवाल उठाना शुरू कर दिया। वर्षों से, उन्होंने विद्वानों की किताबें पढ़ीं और विभिन्न लोगों से चर्चा की। समय के साथ, उनके विचार बदल गए।
फिर भी, यह कोई आसान स्थिति नहीं है। जब हमारा छोटा समूह चीन-तिब्बत स्थिति पर बहस करता है, तो यिंग अपनी खोज और अपने देश के प्रति अपनी निष्ठा के बीच दुविधा में दिखती है।
स्पेरल्लो ने बताया कि चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया था, जो तब तक एक स्वतंत्र राष्ट्र था।
यिंग उसे बताती है कि तिब्बत के भू-राजनीतिक महत्व को देखते हुए, पश्चिमी शक्तियां इस पर कब्जा कर लेतीं, और चीन का आक्रमण भविष्य में पश्चिमी देशों द्वारा विजय और उपनिवेशीकरण के प्रयास के खिलाफ एक पूर्व-नियोजित हमला था।
यिंग ने स्वीकार किया, 'यह अभी भी आक्रमण का कोई औचित्य नहीं है, लेकिन तिब्बत पर आक्रमण करने के लिए चीन की यही प्रेरणा थी।'
‘लेकिन फिर भी, चीन तिब्बत पर वहां की जनता की इच्छा के विरुद्ध कब्जा कर रहा है,’ स्पेरेलो ने जोर देकर कहा।
‘और आपने देखा कि मठ कैसे बर्बाद हो गए,’ कैटी ने गुस्से से लाल होते हुए कहा। ‘आपने देखा कि भिक्षुओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था। मठों को नष्ट करने या भिक्षुओं की हत्या करने का क्या कारण था?’
‘मैं इस हत्या से स्तब्ध हूँ। लेकिन क्या आपको पता था कि भिक्षु सैनिक थे? पश्चिमी देशों के अधिकांश लोगों को शायद इस तथ्य की जानकारी नहीं होगी। और मठों के पास हथियार और बंदूकें थीं,’ यिंग कहती हैं। तिब्बत एक धर्मनिरपेक्ष समाज नहीं था और वहाँ के भिक्षु केवल ध्यान और अध्ययन ही नहीं करते थे; वास्तव में उन्होंने सरकार बनाई और अपने शत्रुओं से लड़ाई लड़ी। तिब्बत के साथ युद्ध का अर्थ था मठों के साथ युद्ध।
‘सभी भिक्षु योद्धा नहीं थे,’ स्पेरेलो बताते हैं। डोब-डोब, यानी योद्धा भिक्षु, मार्शल आर्ट में प्रशिक्षित थे और तिब्बती मठों में पुलिसकर्मी के रूप में काम करते थे। लेकिन उनकी संख्या बहुत कम थी; अनुमान के अनुसार डोब-डोब भिक्षुओं की संख्या कुल भिक्षु आबादी का लगभग 10 प्रतिशत थी।
वे आगे कहते हैं, ‘युद्ध किसी पूरी संस्कृति के विनाश को जायज़ नहीं ठहरा सकता।’ मठ केवल पूजा स्थल ही नहीं, बल्कि तिब्बती सांस्कृतिक जीवन का

केंद्र भी था; नृत्य, संगीत और कला का, सामुदायिक आयोजनों और साहित्य का। मठों के विनाश के साथ ही जीवन शैली का पूरा कतई अंत हो गया। सांस्कृतिक क्रांति के बाद, तिब्बतियों की एक पीढ़ी बिना अपनी मातृभाषा या अपने इतिहास को स्कूल में सीखे बड़ी हुई। यह केवल एक स्थान का भौतिक विनाश नहीं था, बल्कि एक मानसिक परिदृश्य का मिटना था।
‘बिल्कुल,’ यिंग ने सिर हिलाते हुए कहा। उसने नज़रें फेर लीं।
स्पेरल्लो और भी कुछ कहने के लिए उत्सुक प्रतीत होता है, लेकिन समूह में सन्नाटा छा जाता है।
यिंग के लिए यह मुश्किल है। उसके कुछ दोस्त हैं जिनके पिता तिब्बत में चीनी सेना में सेवा कर चुके हैं। तिब्बत में चीन की कार्रवाइयों की निंदा करना उनके देश के प्रति उनकी सेवा को कमतर आंकना होगा। मुझे हिल्सा सीमा पर तैनात चीनी सैनिक याद हैं। मैं उन्हें शत्रुतापूर्ण एजेंट समझती थी। यिंग उन्हें अपने देश के परिचित और मित्रवत नौजवानों के रूप में देखती थी, जो अपने देश की सुरक्षा के लिए अपना कर्तव्य निभा रहे थे।
यिंग आगे बताती हैं कि पश्चिम भी अत्याचारों से अछूता नहीं है। पेरू में, माचू पिचू के इंका खंडहरों का दौरा करते समय, वह इसके प्रसिद्ध प्रवेश द्वार - सूर्य द्वार - की ओर जा रही थीं, तभी कुछ मिनटों के लिए आराम करने के लिए रुक गईं। वहाँ उनकी मुलाकात एक अमेरिकी पर्यटक से हुई। बिना किसी उकसावे के, उस अमेरिकी ने यिंग को तिब्बत में चीन के दमन के बारे में उपदेश देना शुरू कर दिया।
‘उसे ऐसा क्यों लगता है कि वो मुझसे यूं ही आकर इस तरह बात करने लगेगा? अगर उसे इतिहास के अन्याय के बारे में बात करनी है, तो पेरू में स्पेनिश औपनिवेशिक शासन के बारे में क्या?’ वह पूछती है। ‘हम पेरू में थे। स्पेनियों ने पेरू को तबाह कर दिया था। वो इसके बारे में क्या सोचता है? पेरू में मुझे चीन के बारे में क्यों उपदेश दे रहा है?’
मैं यह बताना चाहता हूँ कि तिब्बत पर चीनी अभी भी कब्ज़ा किए हुए हैं, जबकि औपनिवेशिक शक्तियों को दशकों पहले वहाँ से खदेड़ दिया गया था। लेकिन उनका मुद्दा यह नहीं है।
वह आगे कहती हैं, 'यह हुआ। लोग इसके बारे में कुछ भी सोचें, यह हुआ। इतिहास अन्याय से भरा पड़ा है। इतिहास की कई घटनाओं की तरह, तिब्बत पर आक्रमण भी भयानक है। बचपन में भी, भले ही मेरा दिमाग इस तरह से चलाया गया था, मुझे कभी

नहीं लगा कि तिब्बत चीन का हिस्सा है। मुझे तिब्बतियों के प्रति गहरी सहानुभूति है। बेशक, उन पर अत्याचार हो रहा है। उन्हें बोलने की आजादी नहीं है। वे जहां चाहें वहां नहीं जा सकते। उनके लिए पासपोर्ट बनवाना भी मुश्किल है। क्या तिब्बती आजादी चाहते हैं और इसके हकदार हैं? हां। लेकिन क्या वे हिंसा और मौत का सामना किए बिना इसे हासिल कर सकते हैं? नहीं। हिंसा भयावह होगी और मरने वालों की संख्या भयावह होगी।'
भारत के अंग्रेजों से आजादी के संघर्ष के बारे में भी लोग यही कहते। फिर भी भारत ने वह संघर्ष जीत लिया। लेकिन यिंग की टिप्पणियां सटीक हैं - तिब्बती संघर्ष की कीमत भयावह है।
वह आगे कहती हैं, 'चीन तिब्बत को अपना हिस्सा होने का दावा करता है। लेकिन अगर आप किसी जगह को अपना हिस्सा होने का दावा करते हैं, तो आपको वहां के लोगों को भी यह एहसास दिलाना होगा कि वे आपके ही हिस्से हैं और उनके साथ अच्छा व्यवहार करना होगा। तिब्बत के लोगों को आर्थिक विकास की जरूरत है। उन्हें आजादी चाहिए। उन्हें अपने धर्म और संस्कृति का पालन करने का अधिकार होना चाहिए। लेकिन चीनी सरकार अपना नियंत्रण खोना नहीं चाहती। यह सिर्फ तिब्बत की बात नहीं है, बल्कि पूरे चीन की बात है। यहां तक कि मूल हान चीनी लोगों को भी पूरी राजनीतिक आजादी नहीं है। यह हास्यास्पद है कि चीनी लोगों को आज भी तिब्बत के बारे में किताबें नहीं मिल पातीं।'
यिंग सही कह रही हैं। सांस्कृतिक क्रांति ने चीन को कई तरह से जख्मी किया। बौद्ध, कन्फ्यूशियस और ताओवादी परंपराओं में गहराई से निहित चीन की अपनी एक विशाल और समृद्ध विरासत थी। सांस्कृतिक क्रांति के बाद, चीनी मंदिरों को ध्वस्त कर दिया गया, चीनी भिक्षुओं को सार्वजनिक जुलूसों में अपमानित करके मार डाला गया, और अमूल्य चीनी पांडुलिपियों को आग में जला दिया गया। चीनी अधिकारियों के अपने विचार हैं। उनका कहना है कि 1950 के आक्रमण ने तिब्बती समाज की पारंपरिक सामंती व्यवस्था को समाप्त कर दिया। (हालांकि, यह प्रक्रिया कई अन्य एशियाई और यूरोपीय देशों की तरह धीरे-धीरे और अधिक स्वाभाविक रूप से भी हो सकती थी।) चीनी यह भी दावा करते हैं कि वे बेहतर बुनियादी ढांचा तैयार कर रहे हैं और तिब्बतियों की मानसिकता को आधुनिकता की ओर मोड़ने में मदद कर रहे हैं। हालांकि पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता अभी भी दूर की बात है, उनका दावा है कि हालात बदल रहे हैं। हाल के वर्षों में,

चीनी सरकार ने धार्मिक पूजा-पाठ पर लगे प्रतिबंधों में ढील दी है, जिसका कुछ हद तक तिब्बत पर भी असर पड़ा है।
फिर भी, हमारे समूह में से कोई भी तिब्बत में कहीं भी दलाई लामा का नाम लेने की हिम्मत नहीं करता था। कोई भी उनकी तस्वीर ले जाने की हिम्मत नहीं करता था। हममें से कोई भी उन सैनिकों को नहीं भूल सकता था जो हमारे बैग के हर कोने की तलाशी ले रहे थे। मानसरोवर झील में, कुछ पश्चिमी पर्यटकों ने हमें दो तिब्बतियों के बारे में बताया जो उनके पास आए और फुसफुसाते हुए 'दलाई लामा, दलाई लामा' कहने लगे। वे अपने प्रिय नेता के एक अंश के लिए तरस रहे थे: उनके शब्द, एक तस्वीर, यहाँ तक कि कोई खबर भी।
चियू गोम्पा में एक बुजुर्ग प्रार्थना चक्र घुमा रहे हैं। सुबह के समय सूर्य की रोशनी में मानसरोवर झील का पानी नीला चमक रहा है, और कैलाश पर्वत का उत्तरी भाग सफेद और काले रंग में दमक रहा है। झील और पर्वत सदियों से वैसे ही खड़े हैं जैसे पहले थे: उन मनुष्यों से बेखबर जो उन्हें अपनी व्यर्थ महत्वाकांक्षाओं की सीमाओं में बांधने का प्रयास करते हैं।

आखिरी शहर

दारचेन, तिब्बत

ऊंचाई ~ 4,600 मीटर

हमारे रसोइए की पत्नी ने एक बच्चे को जन्म दिया। जब जेफ और स्पेरेलो ने उसे बधाई दी, तो उसने कहा कि यह उसका बच्चा नहीं बल्कि उसके भाई का है। यह खबर देते समय रसोइए की चौड़ी मुस्कान देखकर हम सब हैरान रह गए। छिरिंग ने हमें बताया कि रसोइए का पति एक से अधिक पतियों से शादी करता है।
मेरी मां के चाचा एक मानवविज्ञानी हैं, जिन्होंने दशकों पहले हिमालयी जनजातियों के साथ काम किया था, जिनमें बहुपतित्व प्रथा आम है। उनके शोध सहायक ने एक बार एक आदिवासी लड़की को एक छोटे बच्चे के साथ चलते हुए देखा था।
‘प्यारा लड़का! क्या यह आपका बेटा है?’ शोधकर्ता ने पूछा।
महिला ने जवाब दिया, 'नहीं, वह मेरे पति हैं।'
कई भाइयों में सबसे बड़े से विवाह करके वह सबसे छोटे सहित सभी भाइयों की पत्नी बन गई थी। यह एक प्रकार का बहुपतित्व है, जिसमें सभी भाई एक ही पत्नी साझा करते हैं। चूंकि ये बंजर, पथरीली भूमि बहुत कम आबादी का ही भरण-पोषण कर सकती है, इसलिए पितृसत्तात्मक व्यवस्था में बहुपतित्व जनसंख्या नियंत्रण का एक प्रभावी तरीका है। यह एक आर्थिक आवश्यकता भी है, क्योंकि एक परिवार का भरण-पोषण करने के लिए अधिक लोगों की आवश्यकता होती है।
एक अन्य अवसर पर, साहसी हिमालयी शोधकर्ता आदिवासी महिलाओं के एक समूह के साथ थीं, तभी दूसरे गाँव की एक महिला उनके पास से गुजरी। प्रारंभिक बातचीत के बाद, महिलाओं के समूह ने अजनबी से पूछा कि उसके कितने पति हैं।
‘एक,’ उसने नजरें झुकाए हुए जवाब दिया।
गांव वालों को यकीन नहीं हुआ। सिर्फ एक पति?
उन्होंने अजनबी से पूछा, 'क्यों?' 'आप स्वस्थ हैं। आप सुंदर हैं। फिर भी आपका एक ही पति क्यों है?'

समूह की महिलाएं चुप हो गईं क्योंकि वे एक ही पति वाली पूरी तरह से स्वस्थ महिला के दुखद भाग्य पर विचार कर रही थीं।
रसोइए की शादी की कहानी ने कुछ चुटकुलों को जन्म दिया है। लेकिन समूह में मौजूद भारतीयों के लिए, भाई-भाई के बीच बहुपतित्व उतना अजीब नहीं लगता। ‘यह द्रौपदी की तरह है,’ प्रार्थना ने बताया।
हिंदू महाकाव्य महाभारत में राजकुमारी द्रौपदी का विवाह पांडव वंश के सभी भाइयों से होता है। लेकिन द्रौपदी का विवाह हिंदू परंपरा में एकमात्र असामान्य वैवाहिक व्यवस्था नहीं है। हमारे यहाँ अन्य विवाह रीति-रिवाज भी हैं जो विदेशियों को विचित्र लग सकते हैं। भारत के अधिकांश हिस्सों में आज भी निर्धारित विवाह ही प्रचलित हैं। तेलुगु संस्कृति में, मामा-मामी और चचेरे भाई-बहनों के बीच विवाह कभी आम थे। केरल के नायर समुदाय में कुछ लोग मातृसत्तात्मक समाज में रहते हैं, जहाँ विवाह के बाद पति अपनी बहन के घर में रहता है और अपनी पत्नी से केवल कभी-कभार ही मिलता है। पुराने समय में, यदि कोई नायर महिला किसी दूसरे पुरुष के साथ रात बिताना चाहती थी, तो वह एक अस्थायी विवाह कर सकती थी, जिसे संबंधम विवाह कहा जाता था। इस विवाह के दौरान उसका अस्थायी पति अपने जूते घर के मुख्य द्वार के बाहर छोड़ देता था। यदि स्थायी पति उस रात आता, तो वह जूते देखकर अपने घर लौट जाता था। जैसा कि मेरे मानवविज्ञानी परदादा ने बताया, लोगों ने वैवाहिक संरचनाओं की एक आश्चर्यजनक विविधता विकसित की है।
भारत में विवाह संबंधी अनूठी प्रथाओं को देखते हुए, मैंने हमारे रसोइए की असामान्य वैवाहिक स्थिति पर ज्यादा हंसना उचित नहीं समझा। वैसे भी, हमारी प्रतिक्रियाओं से रसोइए पर कोई असर नहीं पड़ा है, वह अपने बेटे के जन्म से अब भी बेहद खुश है।
रसोइए का खुशनुमा मिजाज सबको खुश कर देता है। थैलों और तंबुओं के ढेर के बीच, छिरिंग शरारती अंदाज़ में नेपाली लहजे में हिंदी फिल्मी गाने गा रहा है। बाकी लोग हंसते हैं और उसे और उत्साहित करते हैं। वह और भी ज़ोर से गाता है और एक और कर्कश धुन गुनगुनाता है। आखिरकार, जब सारा सामान लोड हो जाता है, तो हम जीपों में बैठकर कैलाश पर्वत के सबसे नज़दीकी कस्बे दारचेन के लिए निकल पड़ते हैं।
पुरंग की तरह कभी एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र रहा दारचेन अब तीर्थयात्रियों और बैकपैकर्स से भरा रहता है। लोग गलियों में टहलते हुए,

जर्जर सड़क किनारे की दुकानों पर खिलौने, चूड़ियाँ और आम तौर पर बने पैंट और जैकेट देखते हैं। सड़कों पर कुछ एक मंजिला सीमेंट की इमारतें भी दिखाई देती हैं। कुछ पुरुष सड़क किनारे पूल टेबल के आसपास बैठकर सिगरेट पी रहे हैं, जबकि एक तिब्बती व्यक्ति पोंचो और टोपी पहने हुए बेमन से क्यू से गेंद को धकेल रहा है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी पुरानी वेस्टर्न फिल्म में हूँ। मुझे उम्मीद है कि क्लिंट ईस्टवुड किसी दुकान से निकलकर पूल टेबल की ओर चले आएंगे।
डार्चेन में हमारे गेस्टहाउस में दुनिया के सबसे गंदे शौचालय हैं। एक कमरा कंक्रीट के फर्श पर सीमेंट के तीन खांचों में बंटा हुआ है, और इन खांचों के बीच नीची दीवारें हैं। अगर आप सुबह की दिनचर्या के दौरान आमने- सामने बातचीत करना चाहते हैं तो यह सब बढ़िया है।
मेरा कमरा, उदास और हवा रहित, दो छोटे सिंगल बेड और एक छोटी सी खिड़की से सुसज्जित है। एकमात्र अच्छी बात है रात का खाना: पिज्जा, उसके बाद एप्पल पाई। जब मैंने छिरिंग और उनके साथियों से पूछा कि उन्होंने इस दूरदराज के इलाके में इतना बढ़िया अमेरिकी खाना कैसे जुटाया, तो उन्होंने बस मुस्कुराकर कंधे उचका दिए। मैं अपने बच्चों को यह बताने के लिए बेताब हूँ कि मैंने कैलाश में पिज्जा और एप्पल पाई खाई।
भोजन कक्ष में, चमकीले लाल, सफेद और नीले रंग का पोंचो पहने एक आदमी मेरे सामने बैठा है। उसका चेहरा लाल-भूरा और झुर्रियों से भरा है, और उसके कंधे तक लंबे बालों पर एक चरवाहे वाली टोपी है। न्यिमा हमें बताती है कि वह आदमी एक स्थानीय खानाबदोश है जो व्यापार के लिए दक्षिण की ओर जा रहा है। उसकी हड्डियाँ, रंग और कपड़े देखकर वह बिल्कुल उन आदिवासी लोगों जैसा लगता है जिन्हें मैंने अक्सर नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका में पेरू या बोलीविया की तस्वीरों में देखा है। और फिर से, एक अजीब सी उलझन का एहसास होता है: मुझे लगता है कि मैं पेरू में हूँ।
उस रात प्रार्थना हमारे कमरे में आती है। लंबी और मिलनसार महिला अब थोड़ी झुकी हुई बैठी है। वह पल्लू के बिस्तर के किनारे पर बैठी है और अपने हाथों को घुटनों पर जोड़े हुए है। क्या वह हुमला में हुई अपनी ऊंचाई की बीमारी के बारे में सोच रही है? उसकी चिंता जायज़ है। कैलाश के चारों ओर की यात्रा कठिन है। ऑक्सीजन इतनी कम है कि साधारण सैर भी थका देने वाली लग सकती है।

‘चलो एक समझौता कर लेते हैं,’ प्रार्थना कहती है। ‘अगर हममें से कोई एक बीमार पड़ जाए, तो हम तीनों को उसके साथ वापस आना चाहिए।’
काफी देर तक सन्नाटा छाया रहता है।
‘मुझे लगता है कि बाकी सबको आगे बढ़ना चाहिए। हम इतनी दूर आ चुके हैं,’ मैंने कहा। ‘इसके अलावा, हम ठीक रहेंगे। बूढ़े लोग भी यह यात्रा करते हैं। तो हम क्यों नहीं?’
मुझे जितना आत्मविश्वास दिख रहा है, उतना आत्मविश्वास अब नहीं है। आज मेरा रक्तचाप लगभग 190/120 था, जबकि मैंने अपनी दवा की खुराक दोगुनी से भी अधिक कर दी है। पल्लू का कहना है कि हमें इंतजार करके देखना चाहिए।

देवताओं का पर्वत

कैलाश पर्वत, तिब्बत, तिब्बत

चीनी अधिकारियों ने कैलाश पर्वत पर चढ़ने पर रोक लगा दी है। उनका कहना है कि यह धार्मिक भावनाओं का सम्मान करने के लिए किया जा रहा है, क्योंकि कैलाश पर्वत पर चढ़ना लाखों श्रद्धालुओं के लिए घोर अपमानजनक है। फिर भी, यह अजीब और विडंबनापूर्ण है कि चीन ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया है। जब उन्होंने मंदिरों को ध्वस्त किया, भिक्षुओं का नरसंहार किया और अमूल्य पांडुलिपियों को जलाया, तब तो ऐसी संवेदनशीलता का अभाव दिखाई दिया। कैलाश पर्वत पर चढ़ने से उन्हें क्या रोक रहा है?
अफवाह है कि 2001 में चीनी अधिकारियों ने एक स्पेनिश टीम को कैलाश पर्वत पर चढ़ने की अनुमति दी थी। हिंदू और बौद्ध धर्म के लोगों ने इसका कड़ा विरोध किया और अंततः चीन ने अनुमति वापस ले ली। यह भी कुछ अजीब लगता है। तिब्बत पर कब्ज़ा, मानवाधिकारों का उल्लंघन और अन्य मुद्दों के कारण चीन पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी दबाव है। इसके बावजूद, वे अपनी हरकतें जारी रखे हुए हैं।
कैलाश पर्वत पर चढ़ाई पर चीन के निरंतर प्रतिबंध का वास्तविक कारण चाहे जो भी हो, परिणाम यह है कि आज भी कैलाश पर्वत मानव पदचिह्नों से अछूता है। कैलाश पर्वत पर चढ़ना वर्जित है। यात्रियों को पर्वत के चारों ओर एक अंडाकार पथ पर चलना पड़ता है, जैसे ग्रह एक तेजस्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं। बौद्ध इस पथ को कोरा कहते हैं। हिंदू इसे प्रदक्षिणा या परिक्रमा कहते हैं। दोनों धर्म कैलाश पर्वत को भौतिक और आध्यात्मिक ब्रह्मांड का केंद्र मानते हैं, और इसकी परिक्रमा करना ब्रह्मांड की परिक्रमा करने का प्रतीक है।
सुबह के शुरुआती घंटे हैं। न्यिमा, पल्लू, प्रार्थना, यिंग और मुझे दारपोछे ले जा रही है, जो कैलाश पर्वत की तलहटी में स्थित है। कैटी, जेफ और

स्पेरेलो सुबह तड़के ही निकल चुके हैं। वे दारपोछे तक पैदल चलकर आएंगे और परिक्रमा में हमारे साथ शामिल होंगे।
दारपोचे में मेरी सांसों से भाप निकल रही है। हम प्रार्थना झंडों के गुच्छों से लदे और याक के सींगों व रंगीन कपड़ों के टुकड़ों से सजे एक खंभे के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। दूर एक ऊंचे, चट्टानी टीले पर तिब्बती आकाश अंत्येष्टि की आकृति उकेरी गई है। यह टीला चौरासी महासिद्धियों (विद्वान गुरुओं) का समाधि स्थल रहा है। अब इसका उपयोग नहीं होता, क्योंकि शवों को खाने के लिए पर्याप्त गिद्ध नहीं हैं और कुत्तों की संख्या बहुत अधिक है। दारपोचे न केवल कैलाश परिक्रमा का आरंभिक बिंदु है, बल्कि यह सागा दावा उत्सव का भी स्थल है। यदि पल्लू और मैं अपने पिछले प्रयास में कैलाश पहुँच गए होते, तो हम स्वयं को सागा दावा उत्सव के बीच पाते, जहाँ तिब्बत के कोने- कोने से सैकड़ों लोग इस पवित्र दिन के लिए एकत्रित हुए होते। हम ध्वज को नीचे उतरते हुए देखते। हम नए प्रार्थना ध्वज बाँधते और ध्वज के पुनः फहराए जाने पर भीड़ के साथ जयकार करते। हम नारंगी वस्त्रधारी भिक्षुओं और लामाओं की पंक्तियों की तस्वीरें लेते, जो प्रार्थना कर रहे होते। हम तुरहियों की आवाजों, ढोलों की थाप, लोगों के जप और प्रार्थना की आवाज़ों और खिलौनों और गुब्बारों को लहराते बच्चों के शोर से घिरे होते।
अब, जब मैं अपने साथी यात्रियों के साथ यहाँ खड़ा हूँ, तो मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। दारपोचे का विशाल, खाली मैदान गहरी शांति से भरा हुआ है। कैलाश पर्वत हमारे सामने भव्यता से आकाश की ओर झुका हुआ है। यह एक विस्मयकारी दृश्य है: असीम नीले आकाश के सामने चट्टान और बर्फ का यह विशाल पर्वत। मुझे आश्चर्य होता है कि पृथ्वी इसके भार से क्यों नहीं टूट जाती। ऐसे स्थानों की विशालता हमें स्वयं की तुच्छता का एहसास कराती है। मुझे याद आता है कि मेरी हड्डियाँ, मेरी साँसें, मेरे दैनिक जीवन के उतार-चढ़ाव अनंत ब्रह्मांड में मात्र क्षणिक हैं।
दो लोग हमें इशारा कर रहे हैं। ये वही जर्मन दंपत्ति हैं जिनसे हम नेपाल में मिले थे। यिंग उनके पास जाती है और वे तब तक इंतजार करते हैं जब तक वह अपनी लाठियाँ गाड़कर ऊपर नहीं चढ़ जाती। तीनों रास्ते पर आगे बढ़ते हुए गायब हो जाते हैं।
दूर से, नीली लंबी पोशाक पहने एक छोटी कद की महिला एक छोटे पहाड़ी घोड़े को लेकर हमारी ओर आती है। उसके नीले पत्थरों और चांदी के मोतियों से बने

झुमके और हार हिल रहे हैं। उसके पीछे, झुर्रियों से भरे एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति को आराम से एक बड़ा घोड़ा खींचते हुए लाया जा रहा है। ये घोड़े यहाँ आपात स्थिति में उपयोग के लिए रखे गए हैं, ताकि यदि हममें से किसी को वापस ले जाना पड़े तो इनका इस्तेमाल किया जा सके। दोनों घुड़सवार लगाम खींचते हैं, मुश्किल से हमारी ओर देखते हैं। यही हमारे लिए परिक्रमा शुरू करने का संकेत है।
यह विरोधाभासों की भूमि है। यहाँ का भूगोल मिट्टी और चट्टानों के एक अंतहीन रेगिस्तान से बना है, जिस पर राक्षस ताल और मानसरोवर की विशाल झीलें स्वर्ग के पक्षियों की तरह विराजमान हैं। चार नदियाँ - सतलुज, ब्रह्मपुत्र, सिंधु और करनाली - यहीं से निकलती हैं। पिघली हुई बर्फ का एक झरना असीम ऊँचाई से गिरता है। हिरण चमत्कारिक रूप से चट्टान पर संतुलन बनाए रखते हुए झरने से पानी पीते हैं। देवताओं की नदी, ल्हा चू, उथले पत्थर के तल पर बहती हुई कलकल करती है, जो आज के हमारे मार्ग का मार्गदर्शन करती है। हम विशाल काले, लाल और भूरे रंग की चट्टानों से घिरे हुए हैं। सदियों से, हवा और सूर्य ने पत्थर को अद्भुत लहरों में तराशा है। गुफाएँ और दरारें चट्टान में खुदी हुई हैं। क्षरित पर्वत प्राचीन, तांत्रिक देवताओं के सम्मान में निर्मित विशाल, जटिल मंदिरों की तरह प्रतीत होते हैं।
हमें दो बोन लोग मिले। बोन तिब्बत के मूल निवासी हैं। पुरुष और स्त्री दोनों कद में छोटे हैं और उन्होंने कई परतों वाले वस्त्र पहने हैं। पुरुष स्त्री से कुछ कदम आगे चल रहा है, और हर कदम पर वे ज़मीन पर लेट जाते हैं, उनके शरीर मोटे भूरे एप्रन और दस्तानों से ढके हुए हैं। मुझे उनकी धीमी आवाज़ में की गई प्रार्थनाएँ सुनाई देती हैं। बोन लोगों के लिए कैलाश विश्व के केंद्र में स्थित एक अविनाशी क्रिस्टल पर्वत है। यह उनके देवता शेनराब का स्थान है। लेटकर वे उस धरती की पूजा कर रहे हैं जिस पर वे चल रहे हैं। कैलाश का हर पत्थर, घास का हर तिनका, हर कीड़ा पवित्र है। छिरिंग ने बताया कि बोन तीर्थयात्रा में तीन सप्ताह लगते हैं।
कैलाश की परिक्रमा करना अपने आप में ही मुझे काफी कठिन लगता है; हर कदम पर ज़मीन पर लेटना मानवीय सहनशक्ति का एक अविश्वसनीय उदाहरण है। ऑक्सीजन की कमी के कारण हर हरकत पल भर के लिए धीमी हो जाती है, मानो मैं किसी गाढ़े तरल पदार्थ में चल रहा हूँ। हर काम में अधिक मेहनत लगती है। मेरी समझ से परे है

प्रेम कहानियां

जब मैं किशोरी थी, तब मैं प्रेम उपन्यास बड़े चाव से पढ़ती थी। वे रोमांचक उपन्यास, जिनमें नायक-नायिकाएँ पहले से ही अनुमानित होती थीं और अंत सुखद होता था, मेरे सर्वथा साथी थे। मेरे कई दोस्तों की तरह, मेरा पालन-पोषण भी रूढ़िवादी माहौल में हुआ था (पश्चिमी दृष्टिकोण से रूढ़िवादी; भारतीय दृष्टिकोण से अपरंपरागत)। इसका मतलब यह था कि हम अमेरिकी हार्लेक्विन के उत्तेजक उपन्यासों की तुलना में ब्रिटिश मिल्स एंड बून के गंभीर प्रेम उपन्यासों से अधिक जुड़ाव महसूस करते थे। मिल्स एंड बून श्रृंखला में, सभी नायिकाएँ कुंवारी होती थीं और सभी पुरुष बेहद आकर्षक होते थे। फिर भी, इनमें से कोई भी प्रेम उपन्यास मेरी पसंदीदा प्रेम कहानी, शिव और सती की कहानी के करीब नहीं पहुँच पाया।
सती शक्तिशाली राजा दक्ष की प्रिय पुत्री और सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की पोती थीं। पहाड़ों में एकांतवास करने वाले उस प्रसिद्ध योगी के बारे में जितना अधिक वह सुनती थीं, उतना ही अधिक प्रेम उन्हें उनसे होने लगा। जब उनके विवाह का समय आया, तो उन्होंने अपने विवाह का प्रस्ताव रखने वाले प्रत्येक पुरुष को अस्वीकार कर दिया। वह केवल तपस्वी भगवान शिव से ही विवाह करना चाहती थीं। राजा दक्ष व्यथित रह गए। उन्हें लगा कि उनकी सुंदर पुत्री किसी महान देवता या शक्तिशाली राजा, किसी श्रेष्ठ पुरुष से विवाह करने की पात्र हैं, न कि उस निर्धन योगी से, जिन पर उनका हृदय आसीन था। लेकिन सती ने हार नहीं मानी।
यह एक पागलपन भरी खोज थी। सती ने शिव के बारे में कहानियां सुनी थीं, लेकिन उन्होंने कभी उन्हें देखा नहीं था और न ही शिव ने उन्हें देखा था। फिर भी, अगर उन्होंने उन्हें देख भी लिया होता, तो इससे क्या लाभ होता? उनकी सांवली, दमकती त्वचा, उनकी बड़ी, चमकीली आंखें, उनकी असाधारण सुंदरता और मनमोहक आकर्षण उस तपस्वी के लिए कुछ भी मायने नहीं रखते, जिसने सभी सांसारिक सुखों का त्याग कर दिया था। उनके सामने असंभव कार्य अपने पिता की

कभी-कभी मैं बेहद लोकप्रिय अमर चित्र कथा कॉमिक पुस्तकों में सती और शिव की कहानी का एक संस्करण पढ़ता था।
अमर चित्र कथाएँ प्रकाशित होते ही भारतीय पठन-पाठन की आदतों में एक छोटा सा बदलाव आ गया। अमर चित्र कथा कंपनी ने अद्भुत प्रेरणा का परिचय देते हुए भारत की रोमांचक पौराणिक कथाओं को मुद्रित कॉमिक्स में उतारा और उन्हें रंगीन चित्रों के माध्यम से जीवंत कर दिया, जिनमें देवता संवाद करते हुए दिखाई देते थे। अब पूरे भारत के बच्चे प्राचीन पुराणों और शास्त्रीय संस्कृत नाटकों की कहानियों को पढ़ सकते थे, जिससे उन्हें घंटों आनंद मिलता था।
अमर चित्र कथा कॉमिक्स ने पीढ़ियों की सामूहिक चेतना पर हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंश अंकित किया है। इन कॉमिक्स की अक्सर, शायद सही ही, आलोचना की जाती है कि ये प्रेम और पीड़ा की उन जटिल कहानियों का एक सरलीकृत, समरूप और कभी-कभी बचकाना चित्रण प्रस्तुत करती हैं जो मानवीय स्वभाव की गहराई में उतरती हैं। हाल ही में इनकी स्पष्ट नस्लवादी झलक के लिए भी इनकी निंदा की गई है; असुर, जो मुख्य रूप से खलनायक हैं, सभी सांवले रंग के हैं। फिर भी, बचपन में मुझे ये देसी कॉमिक्स पढ़ना बहुत पसंद था। इनमें से मेरी पसंदीदा कॉमिक शिव और सती की सुंदर और भयानक कहानी थी।
शिव और सती के बीच जो कुछ घटित हुआ, वह एक आदर्श प्रेम कहानी है। मुझे पूरा विश्वास था कि एक पुरुष को एक स्त्री से और एक स्त्री को एक पुरुष से इसी प्रकार प्रेम करना चाहिए: आनंदमय, दीवानेपन से भरे, असीम जुनून से। भला कोई प्रेम उपन्यास इसकी बराबरी कैसे कर सकता है?
शिव और सती की कहानी सती की मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होती। अपने वचन के प्रति सच्चे रहते हुए, शिव ने कई वर्षों तक एकांतवास किया और किसी अन्य स्त्री की ओर नहीं देखा। इसी दौरान, सती ने हिमालय पर्वत की पुत्री पार्वती के रूप में पुनर्जन्म लिया। सती की ही तरह, पार्वती भी शिव की कहानियों से मोहित हो गईं। उन्होंने भी अपनी कठोर तपस्या और भक्ति से शिव का दिल जीत लिया। इस बार, उनके पिता, पर्वतों के स्वामी, उनकी पसंद से प्रसन्न हुए। उन्होंने दंपति को अपना आशीर्वाद दिया। शिव और पार्वती कैलाश में रहने चले गए, और कहा जाता है कि वे आज भी वहीं रहते हैं।

यात्री

कैलाश पर्वत, तिब्बत, तिब्बत

हम एक बड़े तंबू के पास रुकते हैं। अंदर गर्माहट है और लंबी मेजें, बेंचें और कुर्सियाँ लगी हुई हैं। तंबू में लोगों की चहचहाहट गूंज रही है। न्यिमा और कुछ अन्य लोग प्रवेश द्वार के पास एक विशाल चूल्हे के चारों ओर बैठे हैं। इन पहाड़ों की ठंडी और विशालता के बाद, लोगों के जमावड़े की जीवंतता और गर्माहट इस विशाल, जर्जर तंबू को किसी सड़क किनारे के कैफे जैसा आरामदायक बना देती है। लकड़ी की बेंचों की कतारों पर बैठे पर्यटक और स्थानीय लोग गर्म चाय पी रहे हैं। जेफ एक अनोखे अंग्रेजी शैली के चाय के कप में चाय पी रहा है, जिस पर सोने का किनारा और लाल फूलों की डिज़ाइन बनी हुई है। हम हंसते हैं जब वह एक पुरानी विक्टोरियन महिला की नकल करता है, छोटी उंगली बाहर निकालकर, अपनी छोटी सी प्याली से छोटे-छोटे घूंट लेता है। देखते ही देखते जाने का समय हो गया। बाहर निकलते समय, मैं चूल्हे पर हाथ सेंकने के लिए रुका। छिरिंग वहीं बैठी थी और उसने मुझे वहाँ ज़्यादा देर न रुकने की सलाह दी, क्योंकि चूल्हा आसपास की पहले से ही कम ऑक्सीजन को सोख रहा था। मैंने अपने गालों को सहलाकर गर्माहट महसूस की, फिर अनिच्छा से पीछे हटकर बर्फीली पहाड़ी हवा में कदम रखा।
पल्लू, कैटी, यिंग और मैं जब दोबारा निकले, तो तंबू का खुशनुमा माहौल हमारे साथ बना रहा। छिरिंग ने तस्वीरें खींचीं और हम सबने मज़ेदार पोज़ दिए। हंसते-हंसते हम थोड़ा नाचने लगे। छिरिंग का नाच सबसे मज़ेदार था, इसलिए हमने उसे विजेता घोषित कर दिया।
क्या यह महज़ एक भ्रम है या सचमुच कई घंटे बीत चुके हैं? सूरज धरती के और करीब आ गया लगता है। उसकी तेज़ धूप हम पर पड़ रही है। कभी गर्म, कभी ठंडा, हर घंटे मौसम बदलता रहता है। तेज़ ठंडी हवा और विशाल खुले मैदानों में तेज़ धूप घुटन भरी लग रही है। हम कब से चल रहे हैं? दो घंटे या तीन? या बस कुछ मिनट? चलना भी एक बोझ सा लगता है। फिर भी, मैं एक पैर के आगे दूसरा पैर

कैलाश में रात्रि

Drira Phuk, Mount Kailash, Tibet

ऊंचाई ~ 5,200 मीटर

अभी शाम भी नहीं हुई थी कि हम पहले शिविर स्थल पर पहुँच गए। घाटी के उस पार, विशाल चट्टानों के पीछे आधा छिपा हुआ, द्रिरा फुक (याक-हॉर्न गुफा) मठ है। तिब्बत के अधिकांश स्थानों की तरह, याक-हॉर्न गुफा की भी अपनी एक कहानी है।
एक दिन, एक भिक्षु ने एक मादा याक देखी जो बाकी याकों से कुछ अलग लग रही थी। उत्सुकतावश, वह उसके पीछे गया। जब वह याक एक गुफा में गई, तो वह गायब हो गई, केवल अपने सींगों के निशान छोड़ गई। भिक्षु समझ गया कि वह याक एक दक्खिनी (दिव्य स्त्री) थी जो भेस बदलकर आई थी। वह उसे किसी कारण से गुफा में ले गई थी। भिक्षु ने गुफा में ध्यान करना शुरू किया और दक्खिनी उसकी रक्षक बन गई। वर्षों बीतने के साथ, गुफा ने कई और भिक्षुओं को आकर्षित किया। अंततः, इन भिक्षुओं के निवास के लिए और याक-सींग गुफा की दक्खिनी की स्मृति में द्रिरा फुक मठ का निर्माण किया गया। जब मैं शिविर स्थल से बाहर देखता हूँ, तो कभी समृद्ध और महत्वपूर्ण रहे द्रिरा फुक मठ की इमारतें साधारण लगती हैं। मुझे मठ जाने की कोई इच्छा नहीं है। मैं कैलाश पर्वत की तलहटी में रहना चाहता हूँ।
सममित काले और सफेद रंग का यह अखंड स्तंभ किसी अजनबी जैसा लगता है, फिर भी किसी पुराने सपने की तरह परिचित सा लगता है। छिरिंग हमें बताता है कि कैलाश के हम इससे ज़्यादा करीब नहीं पहुँच सकते और पर्वत का यह नज़ारा सबसे सुंदर है जो हम देखेंगे।
दल तंबू लगा रहा है, और जेफ और स्पेरेलो पहले ही ढलान पर चढ़ चुके हैं। वे कैलाश का नज़दीकी नज़ारा पाने की उम्मीद कर रहे हैं। हम बाकी लोग चिरिंग द्वारा जलाई गई आग के चारों ओर huddled हैं। सूरज अभी भी तेज़ चमक रहा है। जब कैटी ऊपर जाने का सुझाव देती है, तो पल्लू और मैं अपने दस्ताने वापस

पहनते हैं और उसके पीछे चल पड़ते हैं। यिंग और प्रार्थना आग के पास ही झुकी रहती हैं।
हम तीनों एक छोटी, बहती हुई धारा के किनारे-किनारे चलते हैं। कैलाश की पिघली हुई बर्फ हमारे शिविर स्थल से होकर बहती है। हम रुककर धारा से पानी पीते हैं। पानी ठंडा और मीठा है। हर कदम के साथ मेरी थकान दूर होती जाती है।
मानो बिना कहे ही, हम तीनों एक-एक पत्थर चुनकर चुपचाप बैठ जाते हैं। मैं अपनी आँखें बंद करके हवा की तेज़ गर्जना सुनती हूँ। मेरे पैरों के पास, काई लगे पत्थरों पर बहती हुई धारा कलकल करती है। मैं अपने नीचे के पत्थर की तरह स्थिर बैठी रहती हूँ, फिर भी मुझे एक छोटे बच्चे जैसा महसूस होता है, जो खुशी से उछलने और दौड़ने से खुद को मुश्किल से रोक पाता है। हालाँकि हम अलग-अलग बैठे हैं, अपनी-अपनी खामोशी में डूबे हुए हैं, फिर भी मुझे बाकी दोनों महिलाओं से गहरा जुड़ाव महसूस होता है।
ठंडी हवा और चलते बादलों के बीच एक खामोशी छाई हुई है। मैं हर चीज़ की शांति से भर गया हूँ: पहाड़, बहता पानी, चमकती बर्फ, ठंडी शुद्ध हवा, नीला आकाश। भगवान रुद्र, जो शिव का एक प्राचीन रूप हैं, की स्तुति में एक भजन है जो संसार और प्रकृति में भगवान की उपस्थिति का गुणगान करता है। भजन के कुछ अंश मुझे इस पल की शांति की याद दिलाते हैं।
रुद्र को प्रणाम!
जो पवित्र जल में और प्रत्येक तट पर निवास करता है,
सबसे गहरे झीलों में और ओस की हर बूंद में कौन है?
परमाणुओं में कौन व्याप्त है और धूल में कौन निवास करता है?
उन्हें मेरा प्रणाम।
शरद ऋतु के सफेद बादलों में कौन है?
और कौन सूर्य की तीव्र गर्मी में है?
उन्हें प्रणाम:
कोमल घास और झाग कौन है?
रेत और पानी कौन है?
और ध्वनि और प्रतिध्वनि।
सैकड़ों वर्ष पूर्व अनाम कवियों ने इन छंदों की रचना की थी। वे प्रकृति में लीन होकर जीवन व्यतीत करते थे। जब वे खेत जोतते, भोजन की तलाश करते या

आकाश को निहारते, तो उन्होंने शांति के क्षणों का अनुभव अवश्य किया होगा। अपने चारों ओर की विशालता और अपने अस्तित्व की सूक्ष्मता को महसूस करते हुए, उन्होंने इस संघर्षपूर्ण संसार की निरर्थकता और पीड़ा को अवश्य समझा होगा। अपने संसार की भयानक, रहस्यमयी सुंदरता के सामने, क्या वे असहाय या आनंदित महसूस करते? शांत या भयभीत? इन छंदों से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने इन सभी भावनाओं को महसूस किया, उन्होंने प्रकृति में दिव्यता का अनुभव किया।
हम अंधेरा होने से पहले शिविर में वापस आ गए। थोड़ी देर बाद, स्पेरल्लो की लंबी आकृति रास्ते से नीचे उतरती हुई दिखाई दी।
छिरिंग ने पूछा, 'जेफ कहाँ है?'
‘वह जल्द ही नीचे आ जाएगा,’ स्पेरल्लो ने उदास चेहरे से कहा। ‘पहाड़ में जेफ के साथ कुछ हुआ है।’
जब स्पेरेलो ने ढलान पर चढ़ना शुरू किया, तब तक जेफ पहले ही निकल चुका था। हर कदम के साथ, जेफ को लग रहा था कि वह आगे बढ़ रहा है, लेकिन पहाड़ उसके करीब नहीं आ रहा था। एक और कदम, जेफ ने खुद से कहा, एक और कदम। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ; पहाड़ उतना ही दूर लग रहा था जितना हमेशा से था। एक जगह पर, जेफ रुक गया; वह और आगे नहीं चल सकता था। अपने सामने चट्टान के उस विशाल टुकड़े को निहारते हुए, वह इस एहसास से कांप उठा कि पहाड़ नीचे से उठ रहा है, मानो वह चल रहा हो, धरती से आकाश की ओर बढ़ रहा हो। एक अवर्णनीय भावना उसके शरीर में दौड़ गई, जिसने उसे इतना झकझोर दिया कि वह घुटनों के बल गिर पड़ा। स्पेरेलो, जो आसपास तस्वीरें ले रहा था, ने पूछा कि क्या सब ठीक है। लेकिन जेफ कुछ बोल नहीं सका। घुटनों के बल बैठे हुए ही उसने स्पेरेलो से हाथ मिलाया।
बाद में जेफ ने हमसे कहा, 'मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा।' वह उस पल अपने साथ हुई घटना को ठीक से समझा नहीं पा रहा था।
अपनी यात्राओं में, जेफ़ हमेशा एक प्रेक्षक की तरह रहता है। वह एक फ़ोटोग्राफ़र है, यात्राओं का वृत्तांत लिखने वाला है, और अन्य संस्कृतियों और भौगोलिक क्षेत्रों का अनुभव करने वाला है। लेकिन उस दिन पहाड़ पर, सब कुछ बदल गया। लेंस को भुला दिया गया। अवलोकन की आवश्यकता और चिंतन की प्रक्रिया गायब हो गई। जेफ़ अब केवल देखने और नोट करने वाली आँख नहीं था; वह अस्तित्व में था, क्रियाशील था और अनुभव कर रहा था। वही

व्यक्ति, जिसे कुछ दिन पहले मारिएन का नदी किनारे ध्यान करना अजीब और विचित्र लगा था, भावनाओं के एक ऐसे विशाल सैलाब में डूब गया था जिसने उसे घुटनों पर ला दिया था। वह एक गहन आध्यात्मिक अनुभव से अभिभूत हो गया था जो केवल उसी का और पहाड़ का था।
इस अनुभव ने जेफ की दुनिया और खुद के बारे में समझ को बदल दिया। इस दिव्य दृष्टि का उन पर जो प्रभाव पड़ा और इससे उनके मन में उठे प्रश्न एक गहन सत्य थे। प्राचीन काल से ही, सभी धर्मों के रहस्यवादियों ने अपने आध्यात्मिक अनुभवों को भौतिक और सांसारिक जगत की सीमाओं से जोड़ने का प्रयास किया है। कई लोगों ने यह समझा है कि यद्यपि वास्तविकता और सत्य हमेशा एक समान नहीं होते, फिर भी वे एक दूसरे के विरोधी या खंडन करने वाले नहीं होते। शिव, झील और पर्वत की कथाएँ, बौद्ध कथाएँ और कल्पनाएँ, पर्वत के उठने का आभास: इनमें से किसी को भी सत्य मानने के लिए शाब्दिक होना आवश्यक नहीं है। ऐसे क्षण बस एक ऐसे सत्य की ओर इशारा करते हैं जो उतना ही जटिल है जितना कि उन्हें समझने का प्रयास करने वाले लोग।
आज रात का खाना हमारे तंबुओं में परोसा गया है। छिरिंग ने हमें बताया कि हमें जल्दी सोना चाहिए, क्योंकि कल हमें बहुत जल्दी उठकर डोल्मा ला दर्रे की लंबी, खड़ी चढ़ाई शुरू करनी है। स्लीपिंग बैग में घुसकर, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और आराम करने की कोशिश की। मैंने भेड़ों को गिना, फिर याकों को। लेकिन नींद गायब हो गई। शायद मैं यहाँ तक पहुँचने की खुशी से उत्साहित हूँ या डोल्मा ला की चढ़ाई के विचार से घबरा रहा हूँ। मुझे बार-बार उस आदमी की कहानी याद आ रही है जिसे कुत्तों ने नोंच-नोंच कर टुकड़े- टुकड़े कर दिया था; उस औरत की जो शौचालय के तंबू में मर गई थी; उस योगी की जो डोल्मा ला दर्रे के पास गिर पड़ा था। अंत में, कुछ भी उस योगी को नहीं बचा सका - न आसन, न प्राणायाम, न ध्यान।
मैं अपने तंबू से बाहर निकला। सब सो रहे थे। याक और घोड़े धूल में अपनी पूंछें फड़फड़ा रहे थे और कुछ भूखे-प्यासे कुत्ते घात लगाए बैठे देख रहे थे। हम सब यहाँ एकत्रित हैं, जानवरों और मनुष्यों का यह मिला-जुला समूह, एक ऐसे पहाड़ के नीचे जो तारों से जगमगाते आकाश से रोशन था।

नीली बत्तियाँ

Drira Phuk, Mount Kailash, Tibet

ऊंचाई ~ 5,200 मीटर

एक आवाज सुनाई देती है, 'सुप्रभात!'
मैं कराहता हूँ और अपना चेहरा स्लीपिंग बैग की गर्मी में छिपा लेता हूँ। ‘जाग जाओ, महिलाओं!’ छिरिंग की पुकार और भी तेज़ हो जाती है।
मुझे याद आने में एक पल लगता है कि मैं कैलाश के पहले शिविर में हूँ और आज ही हमें डोलमा ला दर्रे पर चढ़ाई करनी है। मैं उठकर आँखें खोलता हूँ। उसी क्षण, मुझे नीली रोशनी की बौछार दिखाई देती है। वे मेरे चारों ओर हैं: नीली चमक, बहुत तेज़ गति से चलती हुई। कुछ मेरे नीचे से निकलती हैं, कुछ सामने दिखाई देती हैं, और इलेक्ट्रॉनों की तरह एक तेज़ नृत्य के बाद, नीली रोशनी मेरी ओर केंद्रित हो जाती हैं। मैं अपनी दृष्टि साफ़ करने के लिए कुछ बार पलकें झपकाता हूँ। फिर वही, नीली रोशनी की बौछार। मैं अभी भी अपने तंबू में हूँ - ये रोशनी कहाँ से आ रही हैं?
रोशनी छोटे, खामोश पटाखों की तरह चमकती है – झिलमिलाती, नाचती हुई, और जैसे- जैसे वे मेरे करीब आती हैं, वे फीकी पड़ जाती हैं। साफ, तेज, सुंदर: ये शब्द मन में उभरते हैं। रोशनी दोपहर से शाम के ढलते आसमान के रंग की है और नीलमणि की तरह चमकदार है। सदमा और अविश्वास विस्मय में बदल जाते हैं। मैं खुद को उस पल में समा लेता हूँ। नीली रोशनी मुझ पर छा जाती है, मुझे अपनी चमक में नहला देती है।
कुछ ही देर में रोशनी धीमी हो जाती है। नीला रंग फीका पड़ जाता है, चमक कम हो जाती है। रोशनी फैलकर बड़े सफेद गोलों में तब्दील हो जाती है, और फिर अंत में वह भी मंद पड़ जाती है। पल भर में, वह गायब हो जाती है। मैं यह सुनिश्चित करने के लिए अपना सिर हिलाता हूँ कि रोशनी सचमुच गायब हो गई है। सब कुछ सामान्य हो जाता है। यह पूरा अनुभव दस सेकंड से भी कम समय में पूरा हो गया।

‘क्या तुमने वो देखा?’ मैं पल्लू की ओर मुड़ती हूँ, लेकिन वो अभी भी सो रही है।
मुझे अपने बैग में टूथब्रश और साबुन मिल गया और मैंने अपने चचेरे भाई को जगाने के लिए उसे हिलाया।
बाहर कड़ाके की ठंड है, हालांकि सूरज निकल चुका है। पहाड़ पर बादल एक पल के लिए ठहरते हैं और अगले ही पल उड़ जाते हैं। पांचों याक प्रस्थान के लिए तैयार किए जा रहे हैं, और सींग वाले इन जानवरों की काली खाल आसपास की बर्फ की सफेदी के बीच बेहद आकर्षक लग रही है। स्पेरेलो अपना कैमरा झुकाकर कैलाश पर्वत के दक्षिणी भाग की तस्वीरें खींच रहे हैं, क्योंकि सुबह की धूप से पहाड़ की चोटी नारंगी रंग में चमक रही है। सुबह की रोशनी पहाड़ की उभरी हुई और धंसी हुई सतहों पर पड़ रही है, जिससे प्रकाश और छाया की अजीबोगरीब आकृतियाँ बन रही हैं। प्रकाश का यह खेल निचली ढलानों को ढकने वाली चट्टान और बर्फ की लंबी क्षैतिज रेखाओं के विपरीत प्रभाव को और भी उभार रहा है। ये रेखाएँ रावण के घाव हैं, जिसने राक्षस ताल के जल को विषैला कर दिया था। रावण, जो महान भारतीय महाकाव्य रामायण का खलनायक है, शिव का सबसे बड़ा भक्त भी था। पौराणिक फिल्म देखते समय, शिव द्वारा रावण पर दिखाई गई विभिन्न कृपाओं को देखकर मेरी चाची ने भगवान के अंधाधुंध वरदान देने की क्षमता पर आश्चर्य व्यक्त किया।
पौराणिक कथाओं के अनुसार, रावण लंका का राजा था, जो अब श्रीलंका है। उसने शिव से विनती की कि वे उसके दक्षिणी राज्य में चले जाएँ ताकि रावण जब चाहे अपने प्रिय देवता की पूजा कर सके। शिव ने मना कर दिया; वे कैलाश पर्वत नहीं छोड़ना चाहते थे। इसलिए रावण ने कैलाश पर्वत को ही हिलाने का फैसला किया। लंका के राजा ने कैलाश के चारों ओर मजबूत रस्सियाँ बाँधीं और अपने हाथों से पर्वत का भार उठाने लगा। कैलाश धीरे-धीरे ऊपर उठने लगा और काँपने लगा। शिव को यह सब समझ आ गया। मुस्कुराते हुए - आखिर रावण उनका प्रिय भक्त था - शिव ने अपने पैर की छोटी उंगली से दबाव डाला। केवल उनकी उंगली का भार ही कैलाश को गिराने के लिए काफी था, जिससे रावण चट्टान के नीचे दब गया। पर्वत के नीचे दबकर रावण को होश आया। उसे एहसास हुआ कि एक देवता को हिलाने की उसकी सोच कितनी अहंकारी थी। उसने शिव की शक्ति और करुणा को भी समझा, जो उसे पल भर में मार सकते थे, लेकिन उन्होंने दया दिखाई ताकि उनका भक्त विनम्रता का महत्व सीख सके।

पर्वत के नीचे, रावण ने अनायास ही ‘शिवतंडवस्तोत्रम्’ की रचना की और उसका गायन किया – यह शिव, नर्तक की स्तुति में रचित एक काव्यमय रचना थी। इस शक्तिशाली, लयबद्ध रचना में, जिसके मंत्र शिव के ढोल की थापों को प्रतिबिंबित करते हैं, रावण ने शिव को ब्रह्मांड का भार वहन करने वाले के रूप में वर्णित किया। भावपूर्ण छंदों में, रावण ने शिव की सुंदरता का गुणगान किया। उसने शिव के जटाओं में चंद्रमा, नागों से सुशोभित उनके काले गले और गंगा नदी की लहरों से सुंदर बनी उनकी जटाओं का वर्णन किया। रावण ने घोषणा की कि शिव की सच्ची पूजा नाग और माला, रत्न और मिट्टी, सम्राट और आम आदमी को पूर्ण समभाव से देखना है।
रावण के गीत से प्रसन्न होकर शिव ने लंका के राजा को कैलाश पर्वत के नीचे से मुक्त कर दिया। रस्सियाँ ढीली होकर गिर गईं, लेकिन उन्होंने पर्वत पर अपने निशान छोड़ दिए। उस बर्फीली सुबह, उगते सूरज के नीचे, मैंने रावण के उन पौराणिक बंधनों के निशान देखे, जब वह अपने भगवान के लिए पर्वत उठाने का प्रयास कर रहा था।
कैलाश पर्वत का हर पहलू प्राचीन मिथकों के निशान लिए हुए है। कैलाश की सबसे प्रतिष्ठित छवि इसका उत्तरी भाग है, जिसमें शिखर से लेकर मध्य भाग तक एक गहरी दरार फैली हुई है। राक्षस ताल और चियू गोम्पा में मैंने यह दृश्य देखा था, जिसमें कैलाश एक पिरामिड की तरह दिखता है जिस पर सीढ़ी खुदी हुई है। तिब्बती बौद्धों और बोन जनजाति के लोगों के लिए, यह दरार मिलारेपा की कथा में वर्णित बोन चुंग के ढोल का चिह्न है।
मिलारेपा 11 वीं या 12 वीं शताब्दी में रहने वाले एक बौद्ध भिक्षु और संत थे। बॉन धर्म के एक संत और शक्तिशाली जादूगर बॉन चुंग ने उन्हें यह निर्धारित करने के लिए कई प्रतियोगिताओं की चुनौती दी कि कौन अधिक शक्तिशाली है। अंतिम चुनौती कैलाश पर्वत पर चढ़ना थी, और जो सबसे पहले शिखर पर पहुंचता उसे विजेता घोषित किया जाता।
बोन चुंग सुबह जल्दी उठ गया। अपना ढोल लेकर वह पर्वत पर चढ़ने लगा। इस बीच, मिलारेपा सोता रहा। जैसे-जैसे सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता गया, बोन चुंग भी कैलाश पर्वत पर ऊपर चढ़ता गया। मिलारेपा के अनुयायी चिंतित होने लगे। इस गति से तो बोन जादूगर कुछ ही घंटों में शिखर पर पहुँच जाएगा। उन्होंने अपने गुरु से चढ़ाई शुरू करने की विनती की, लेकिन मिलारेपा ने जम्हाई ली और वापस सो गए। समय बीतता गया और बोन चुंग शिखर के करीब पहुँच रहा था।

मिलारेपा के अनुयायी अब हताश हो गए थे। उनके गुरु अभी भी हिलने को तैयार नहीं थे। बोन चुंग के शिखर पर पहुँचने से ठीक पहले, मिलारेपा अंततः जाग गए। उन्होंने कहा, अब समय आ गया है, और तुरंत कार्रवाई की। पल भर में, मिलारेपा प्रकाश द्वारा पर्वत की चोटी पर पहुँच गए, बोन चुंग से ठीक पहले। सदमे में, बोन चुंग गिर गया और कैलाश की ढलानों से नीचे लुढ़क गया। उसका ढोल भी उसके पीछे लुढ़क गया, जिससे पर्वत के उत्तरी भाग की चोटी बन गई। बोन चुंग को हराने के बाद, मिलारेपा ने कैलाश पर्वत को बौद्ध धर्म के लिए अपना बना लिया। बॉन लोगों को पूर्व दिशा में एक और पर्वत आवंटित किया गया था। पौराणिक कथाओं से घिरा कैलाश पर्वत महज एक पर्वत नहीं है। सदियों से, भौतिक पर्वत का अपने रहस्यमय स्वरूप मेरु पर्वत से गहरा संबंध रहा है। हिंदू और बौद्ध धर्म के अनुसार, मेरु आध्यात्मिक ब्रह्मांड के केंद्र में स्थित क्रिस्टलीय प्रकाश का पर्वत है। मेरु का भौतिक स्वरूप भी है। योग ग्रंथों में रीढ़ की हड्डी को मेरु दंड (मेरु का डंडा) कहा गया है। मेरे बौद्ध ध्यान गुरु कहते हैं कि ध्यान साधना में, मेरु को रीढ़ की हड्डी के समानांतर, ठीक उसके सामने, शुद्ध प्रकाश-ऊर्जा के एक बेलन के रूप में देखा जा सकता है। ध्यान के माध्यम से हम इस क्रिस्टलीय प्रकाश के पर्वत को खोज सकते हैं, और इसकी ऊर्जा हमें उच्च चेतना की ओर ले जाएगी।
‘जब तुम अपनी आँखें बंद करो,’ वह मुझसे कहती है, ‘इस प्रकाश की कल्पना करो।’ मुझे यह विचार अच्छा लगा। मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि यह पर्वत जिसे हम देखते हैं, जिसकी तस्वीरें लेते हैं और जिसकी प्रशंसा करते हैं, वह हमारे भीतर ही समाया हुआ है। हम इसे अपने शरीर में धारण करते हैं। यद्यपि हम चट्टान और पत्थर के कैलाश पर्वत पर नहीं चढ़ सकते, हम प्रकाश के मेरु पर्वत पर चढ़ सकते हैं। मैं सोचता हूँ कि इनमें से कौन सी यात्रा अधिक कठिन है। सुबह की पहली किरण में पहाड़ बेहद खूबसूरत लग रहा था, लेकिन मैं वहां ज्यादा देर नहीं रुका। मुझे पहले ही देर हो रही थी, और छिरिंग ने कहा कि हमें सामान्य से जल्दी निकलना होगा। यह यात्रा का सबसे खतरनाक हिस्सा है और वह चाहता था कि हम दोपहर से पहले डोलमा ला दर्रे की ऊँचाई पार कर लें। उसके बाद हवा या बारिश की संभावना बढ़ जाएगी, जिससे यह लगभग असंभव हो जाएगा। अगर हम सुरक्षित रूप से दर्रे को पार कर लेते हैं, तो हमारी परिक्रमा पूरी हो जाएगी। फिर हम कम ऊँचाई वाले सुरक्षित इलाकों से होकर गुजरेंगे।

“अगर ज्यादा मुश्किल हो जाए तो चलो टट्टू पर बैठ जाते हैं। अगर चढ़ाई ज्यादा मुश्किल हो जाए तो चढ़ने की कोई जरूरत नहीं है।” पल्लू ने हमारे टेंट में अपना बैग बंद कर लिया।
‘हां,’ मैंने कहा, ‘लेकिन एक समस्या है।’
'क्या?'
'छिरिंग ने हमें बताया कि अगर सतह फिसलन भरी हो जाती है, तो टट्टू अपना संतुलन खो सकते हैं। वे फिसल सकते हैं और किनारे से गिर सकते हैं।'
'ओह आदमी।'
'हाँ।'
‘क्या करें?’ पल्लू कहती है। ‘मुझे लगता है हमें बस निकलना होगा। बाकी सब लोग तो पहले ही निकल चुके होंगे।’
‘तुम जाओ। मैं आ रहा हूँ,’ मैंने उससे कहा।
मैं अभी भी अपना बैग पैक कर रही हूँ। समझ नहीं आ रहा कि आज सुबह इतना समय क्यों लग रहा है। शायद कड़ाके की ठंड है। हो सकता है कल रात नींद पूरी न होने की वजह से हो, या फिर इसलिए कि मुझे ध्यान लगाने में दिक्कत हो रही है क्योंकि मैं बार-बार लाइटों वाली घटना के बारे में सोच रही हूँ।
मैंने उन रोशनी के बारे में किसी को नहीं बताया। मुझे समझ नहीं आ रहा कि वे क्या थीं। क्या वे नीली रोशनी किसी सपने का असर थीं? सपने जैसा तो लग नहीं रहा था। पूरा अनुभव एकदम सजीव था, मानो मैं पूरी तरह से जागृत और सचेत था। तिब्बती ग्रंथ बार्डो थोस ग्रोल (अंतराल के दौरान श्रवण द्वारा मुक्ति) में नीली रोशनी दिखाई देती है। अमेरिका में, बार्डो थोस ग्रोल को 1960 के दशक में 'तिब्बती मृत्यु-पुस्तक' के रूप में प्रसिद्धि मिली। इस पुस्तक का उपयोग साइकेडेलिक ड्रग्स के मैनुअल के रूप में किया गया था, लेकिन अपने लहजे और उद्देश्य में, बार्डो थोस ग्रोल हिप्पी संस्कृति से बहुत दूर है। एक महत्वपूर्ण न्यिग्मा ग्रंथ, यह पुस्तक मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति के मार्ग से संबंधित है। एक तेरमा (गुप्त ग्रंथ), बार्डो थोस ग्रोल को पद्मसंभव द्वारा 8 वीं शताब्दी में लिखा गया माना जाता है और फिर तब तक छिपाकर रखा गया जब तक कि मानवता इसे ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं हो गई। छह सौ वर्ष बाद, कर्मा लिंगपा नामक एक युवा बौद्ध शिक्षक ने इसे चट्टानों के ढेर में पाया - ठीक वैसे ही जैसे सदियों पहले भविष्यवाणी की गई थी।

कोशिश करता रहता हूँ। शायद रोशनी नीली इसलिए थी क्योंकि शिव नीलकंठ हैं - नीले गले वाले। शायद रोशनी मेरे सामने इसलिए नाची क्योंकि शिव नृत्य के देवता हैं। मैंने ये रोशनी शिव के निवास स्थान कैलाश पर्वत के चरणों में देखी। शायद नीली रोशनी शुभ संकेत है, जैसे मानसरोवर झील में मिला माला पल्लू और वो रोशनी जो मैंने और प्रार्थना ने झील पर देखी थी।
आज सुबह, मिथकों के पहाड़ की छाया में, सब कुछ संभव प्रतीत होता है।

बादलों में चलना

सब चले गए हैं, सब गायब हो गए हैं। मुझे जल्दी करनी होगी। शिविर स्थल समेट लिया गया है। मुझे जाना है, लेकिन मेरे जूते के फीते नहीं बंध रहे। मेरे जूते बंध ही नहीं रहे। अपने आप बंध रहे हैं। मैं अपने जूते नहीं बांध पा रहा। याक और घोड़े भी चले गए हैं। मैं अकेला हूँ।
मैं एक चट्टान पर बैठा हूँ। मेरे सामने कैलाश पर्वत आकाश को ढक रहा है, और उसके चरणों में खाली पड़ा शिविर स्थल है। मैं झुका हुआ हूँ, जूतों के फीते बाँधने की कोशिश कर रहा हूँ, जो मेरी उंगलियों से साँप की तरह फिसल रहे हैं। शायद मेरे दस्तानों की वजह से मैं लड़खड़ा रहा हूँ। मैं दस्ताने उतारता हूँ, लेकिन ठंड से मेरी उंगलियाँ तुरंत सुन्न हो जाती हैं। मैं दस्ताने वापस पहन लेता हूँ। मैं सीधा बैठता हूँ, गहरी साँस लेता हूँ और फिर कोशिश करता हूँ। आखिरकार, मैं किसी तरह गाँठ बाँधने में कामयाब हो जाता हूँ। मेरे पीछे मुझे घोड़ों की आवाज़ सुनाई देती है। मैं छिरिंग के सहायकों में से एक को देखता हूँ, एक छोटा, पतला आदमी, जो आसपास मंडरा रहा है। अच्छा। मैं अकेला नहीं हूँ।
मैं खड़ी हो जाती हूँ। मुझे सबके साथ चलना है। मैं बाकी लोगों के साथ डोल्मा ला दर्रे तक पहुँचना चाहती हूँ। मैं सहायक से जल्दी चलने को कहना चाहती हूँ। वह इतनी धीमी गति से क्यों चल रहा है? मैं छोटे पत्थरों पर लड़खड़ा जाती हूँ और सहायक मुझे संभालने के लिए मेरा हाथ पकड़ लेता है। मैं धीरे चलती हूँ। मैं दस कदम और चलती हूँ। अचानक, मैं पूरी तरह से थक जाती हूँ।
चिंता मत करो। चिंता की कोई बात नहीं है। बस नींद की कमी है। मुझे रात को नींद नहीं आ रही है। मैं मन ही मन सोचती हूँ कि मुझे बस कुछ सेकंड चाहिए।
मैं एक पत्थर से टेक लगाकर खड़ी हो जाती हूँ। सहायक कुछ कहता है जो मुझे समझ नहीं आता।

'मुझे बस एक मिनट चाहिए,' मैं कहती हूं, हालांकि मुझे पता है कि वह भी मुझे समझ नहीं सकता।
मैं फिर से चलने लगती हूँ। तीन कदम चलने के बाद ही मुझे चक्कर आने लगते हैं। दुनिया मानो धीरे-धीरे हिल रही हो। मैं मन ही मन सोचती हूँ, यह ठीक हो जाएगा। मैं अपनी साँसों पर ध्यान केंद्रित करती हूँ और हर कदम के साथ साँस को अंदर-बाहर खींचने की कोशिश करती हूँ। पहले बायाँ पैर, फिर दायाँ। मेरी नज़र धुंधली होने लगती है। एक के बाद एक साँसें लेती हूँ, लेकिन दुनिया धुंधली होती जा रही है। यह रुई की तरह धुंधली और मुलायम हो जाती है। मैं एक पैर के आगे दूसरा पैर रखती हूँ। मानो मैं बादलों में चल रही हूँ।
‘मुझे बैठना है,’ मैंने सहायक से कहा। ध्यान केंद्रित करो, ध्यान केंद्रित करो। गहरी साँस लो और छोड़ो। सहायक मेरी बात समझ गया लगता है। उसने मुझे एक चट्टान तक सहारा दिया। मैं उस पर लड़खड़ाते हुए बैठ गया और मुझे लगा जैसे दुनिया मेरे ऊपर गिर रही हो। घोड़ों की आवाज़ें, हवा की आवाज़ें और कुछ आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। किसकी आवाज़ें? मैं अपने सामने लगभग छह फीट तक देख पा रहा था और उससे आगे, आकृतियाँ एक-दूसरे में घुलती जा रही थीं। धरती घूमने लगी। फिर भी, मुझे चमकीले रंग दिखाई दे रहे थे। सहायक की जैकेट चमकीले नीले रंग की धुंधली सी दिख रही थी। जिस चट्टान पर मैं बैठा था, वह काले बादल जैसी लग रही थी। दूर, एक लाल वस्तु धीरे-धीरे पास आ रही थी। यह रॉबिन पक्षी का लाल रंग था, एक ऐसा रंग जो इन भूरे, बर्फीले परिदृश्यों में बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन मुझे वह लाल रंग याद आया – यह पल्लू की जैकेट का लाल रंग था। मैं उम्मीद करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था, लेकिन क्या यह वही हो सकती है?
‘पल्लू, पल्लू!’ मैं चिल्लाता हूँ।
‘अरे, कवि! मुझे लगा तुम चली गई!’ उसकी आवाज दूर से आती हुई प्रतीत होती है। ‘पल्लू! छिरिंग को बुलाओ!’ मैं फिर से चिल्लाता हूँ।
'क्या?'
‘छिरिंग को बुलाओ! कुछ गड़बड़ है। छिरिंग को बुलाओ!’ मैं चिल्लाता हूँ।
मैं नीली जैकेट पहने सहायक की ओर मुड़ता हूँ। 'छिरिंग, छिरिंग को बुलाओ!' बस यही शब्द मैं बोल पाता हूँ। उम्मीद है वो समझ जाएगा। मैं चट्टान पर बैठा रहता हूँ, साँस लेने की कोशिश करता रहता हूँ, खालीपन में घूरता रहता हूँ।

अब मुझे बस अपने सामने दो फीट तक ही दिखाई दे रहा है। सचेत रहो। जागते रहो। ध्यान केंद्रित करो। ध्यान केंद्रित करो।
मुझे छिरिंग की आवाज़ सुनाई देती है। अचानक, उसका चेहरा मेरे चेहरे के करीब आ जाता है और मैं खड़ी हो जाती हूँ। मैं कब खड़ी हुई? मुझे याद नहीं आ रहा कि मैं चट्टान से कब उतरी। छिरिंग मेरी आँखों में देखता है। मैं उसकी पुतलियाँ देख सकती हूँ, ठीक वैसे ही जैसे वह मेरी पुतलियाँ देख सकता है। वह मेरी पलकें नीचे खींचता है। वह मेरे गालों को ध्यान से देखता है और उन्हें धीरे से दबाता है।
मेरे गालों को देखना बंद करो, मैं चिल्लाना चाहती हूँ, कुछ करो!
वह मेरे दस्ताने उतारता है और मेरी उंगलियों को एक-एक करके ध्यान से देखता है। जिस तरह से वह मेरी उंगलियों को पकड़ता है, वह पुराने जमाने की शिष्टाचार की निशानी है। "मेरे साथ क्या हो रहा है? क्या मैं मरने वाली हूँ? क्या मैंने कुछ बोल दिया है? किसी ने सुना नहीं है, और मुझे राहत मिली है। बकवास मत करो। नाटक करना बंद करो। बस धीरे-धीरे सांस लो।" सफेद बादल धीरे-धीरे मुझे घेर लेता है, जैसे कोई कोमल आलिंगन हो। मेरी दृष्टि धुंधली होती जा रही है।
‘छिरिन, अब हम क्या करें?’ मैंने पूछा।
‘तुम वापस नीचे जाओ। यही सबसे अच्छा है।’ छिरिंग सिर हिला रहा है। वह गंभीर दिख रहा है – नहीं, एकदम संजीदा। वह वाकई गंभीर दिख रहा है।
‘नीचे कहाँ? पीछे?’
‘हाँ। नीचे वापस जाओ!’
उसका मतलब क्या है? क्या उसे पता है कि वह क्या कह रहा है? अगर मैं वापस चला गया, तो मैं परिक्रमा पूरी नहीं कर पाऊंगा। मैं दूसरों के साथ डोलमा ला दर्रे पर नहीं जा पाऊंगा।
‘क्या हम इंतज़ार कर सकते हैं? शायद हम इंतज़ार करके देख सकते हैं।’ मैं छिरिंग को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि मैं ट्रेक पूरा कर सकता हूँ। मैं काफी फिट हूँ, काफी जवान हूँ, और काफी दृढ़ निश्चयी हूँ।
छिरिंग अपना सिर हिलाता है।
मैं उसे बताना चाहती हूँ कि सब ठीक हो जाएगा। देखो, मैं समझाना चाहती हूँ, मुझे परिक्रमा पूरी करनी ही है – हमें इस यात्रा के लिए बुलाया गया है। और वह माला, झील पर पड़ती रोशनी, शिव के नृत्य करते नीले प्रकाश। क्या ये

संकेत के अलावा कुछ और हो सकते हैं? मैं परिक्रमा पूरी करूँगी क्योंकि मुझे इसे पूरा करना ही है। यह विचार इतना अस्पष्ट है कि मेरे बोलने से पहले ही गायब हो जाता है।
'तुम नीचे जाओ,' छिरिंग ने ज़ोर देकर कहा। उसकी आवाज़ दूर से आती हुई प्रतीत हुई। मैं खड़ा नहीं हो पा रहा था, और मुझे ध्यान केंद्रित करना पड़ा, और खुद को जगाए रखने के लिए मजबूर करना पड़ा।
हाथ हैं। हाथ मुझे थामे हुए हैं। कई हाथ, शायद अनगिनत हाथ, मुझे उठा रहे हैं। वे मुझे काठी पर बिठा रहे हैं। जब भी मैं फिसलती हूँ, हाथ मुझे संभाल लेते हैं। ये सारे हाथ कहाँ से आ गए? जैसे ही घोड़ा चलने लगता है, हाथ मुझे कसकर पकड़ लेते हैं। मुझे पत्थरों पर खुरों की आवाज़ सुनाई देती है और मैं घोड़े के साथ डगमगाती हूँ। साँस लो, साँस लो, मैं खुद से कहती हूँ।
मैं ढलान से नीचे जा रहा हूँ। मैं बाकियों के साथ नहीं रहूँगा। वे डोल्मा ला दर्रे की ओर ऊपर जाएँगे और मैं नीचे आऊँगा। एकाग्र रहो, ध्यान केंद्रित करो, जागते रहो। मैं अपने घोड़े को कसकर पकड़ता हूँ और अपना गाल उसकी गर्दन पर रखता हूँ। साँस लो, साँस लो, अंदर और बाहर।
‘कवि!’ ये पल्लू की आवाज़ जैसी लग रही है, पर ऐसा नहीं हो सकता। मैं ज़रूर सपना देख रहा हूँ। ‘कवि, तुम कैसा महसूस कर रहे हो?’ ये वो आवाज़ नहीं हो सकती।
‘पल्लू?’
'हां। आप कैसा महसूस कर रहे हैं?'
वह यहाँ क्या कर रही है? उसे पहाड़ पर होना चाहिए। उसे डोल्मा ला दर्रे की ओर जाना चाहिए।
‘पल्लू, तुम क्या कर रही हो?’ उसे तो हमारे अधूरे काम को पूरा करने के लिए जाना चाहिए था। वो इसीलिए तो यहाँ आई है, काम पूरा करना ही तो उसकी यात्रा का मूल उद्देश्य है। ‘तुम यहाँ क्यों हो?’ मैं अपनी आवाज़ को सख्त बनाने की कोशिश करती हूँ, लेकिन वो अजीब और भावहीन लगती है। मेरे बोलने और सुनने के बीच एक अंतराल सा है, मानो मैं लिप-सिंकिंग कर रही हूँ। क्या उसे भी मेरी आवाज़ ऐसी ही सुनाई दे रही है?
वह कहती है, 'मैं तुम्हारे साथ रहूंगी।'
‘नहीं। वापस जाओ,’ मैं उससे कहती हूँ। मैं उसे कैसे समझाऊँ कि अगर मेरी वजह से वह ट्रेक पूरा नहीं कर पाई तो मुझे कितनी निराशा और अपराधबोध होगा?

‘पल्लू, ट्रेक पूरा करो।’
‘मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूंगी,’ वह कहती है।
'कृपया जाएँ।'
मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूंगा।
मैं उसे बताना चाहती हूँ कि हममें से कम से कम एक को तो यह सफ़र पूरा करना ही होगा। यह एक साझा जीत होगी। लेकिन इतनी बातें करते-करते मेरी साँस फूल गई है। ध्यान केंद्रित करो। साँस लो। मुझे ध्यान केंद्रित करना होगा। मुझे होश में रहना होगा।
आधे घंटे के भीतर, मैं उठकर बैठ सकती हूँ। मुझे अपनी साथी का सहारा लेने की ज़रूरत नहीं है। ढीले पत्थरों पर घोड़ों के खुरों की आवाज़, गर्म धूप और घोड़ों की गंध से दुनिया फिर से ठोस लगने लगती है। हम थोड़ी देर रुकते हैं जब घोड़े एक छोटी सी धारा से पानी पीने के लिए झुकते हैं।
‘आप कैसा महसूस कर रहे हैं?’ पल्लू ने पूछा।
‘बेहतर। ज़्यादा मज़बूत।’ मुझे सब साफ़ दिखाई दे रहा है। बोलने और खुद को सुनने के बीच अब कोई अंतराल नहीं है। ‘वापस जाओ। तुम छिरिंग वापस जा सकते हो।’
मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा रहा हूँ।
'मुझे छोड़ दो। मुझे छोड़ दो। मैं ठीक हूँ। ट्रेक पूरा करो!'
'बिल्कुल नहीं।' पल्लू अपना सिर हिलाती है। उसका घोड़ा हिनहिनाता है। ‘शायद हम दोनों वापस जा सकते हैं।’ यह एक शानदार विचार लगता है।
क्या तुम पागल हो?
अब मैं बेहतर महसूस कर रहा हूँ। हम साथ मिलकर इसे पूरा कर सकते हैं। 'नहीं।'
न्यिमा हमारे साथ है। वह मेरे बगल में चलता है और बार-बार मेरी नब्ज़ जाँचता है। कुछ ही देर में हम वापस ल्हा चू घाटी में पहुँच जाते हैं। हम नदी के किनारे, उन चट्टानों के नीचे चलते हैं जो मुझे अजीब मंदिरों जैसी लग रही थीं। पल्लू के घोड़े को आगे ले जा रहा आदमी अपनी कमर पर बंधे एक छोटे से संगीत वादक को चालू करता है। तिब्बती मंत्र हवा में गूंजने लगते हैं। धीमी लय हमारे कदमों के साथ घुलमिल जाती है, और लंबी आवाज़ अजीब और सुंदर लगती है। पल्लू अपने घोड़े पर बेचैनी से बैठी है, उसकी लाल जैकेट का हुड लगभग उसका चेहरा ढके हुए है।

हमारे घोड़े ढीले पत्थरों पर चल रहे हैं, उनकी नाक नीचे की ओर झुकी हुई है। घुंघराले पीले बालों वाली एक मुस्कुराती हुई महिला अपनी ट्रेकिंग पोल लहराकर हमारा अभिवादन करती है। हमारे पीछे जर्मन यात्रियों का एक खुशमिजाज समूह हंसता-हंसता बातें कर रहा है। मैं उनकी ओर देखने से बचता हूँ, क्योंकि मुझे थोड़ा शर्म आ रही है कि मैं इस यात्रा में बीमार पड़ गया हूँ, जिसे वृद्ध लोग भी पूरा करते हैं।
न्यिमा हमें बताते हैं कि छिरिंग बहुत चिंतित था। उन्होंने मुझे बताया कि मुझे उच्च ऊंचाई वाला सेरेब्रल एडिमा (एचएसीई) है, जो ऊंचाई पर होने वाली बीमारी का एक खतरनाक और अक्सर जानलेवा रूप है। मस्तिष्क में तरल पदार्थ भर जाता है और ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, जिससे अनिद्रा, मतिभ्रम और भटकाव होता है। मुझमें इसके सभी लक्षण दिखाई दे रहे थे: मेरी नाड़ी कमजोर हो गई थी, मेरा चेहरा नीला पड़ रहा था और मेरी पुतलियाँ फैल गई थीं। पिछली रात मुझे नींद नहीं आई थी। मैंने नीली रोशनी देखी थी। आज सुबह मैं अपने जूतों के फीते नहीं बाँध पा रहा था क्योंकि मैं भटक गया था। एचएसीई में, निर्णय लेने की क्षमता कमजोर हो जाती है, इसलिए मैंने खतरे के संकेतों को नहीं पहचाना और न ही मैंने इस तथ्य को स्वीकार किया कि मैं खतरे में हूँ। एचएसीई से बचने की एकमात्र उम्मीद तुरंत नीचे उतरना है।
दारपोचे में सूरज खूब चमक रहा है। यहीं से हमने अपनी कोरा (मार्गयात्रा) शुरू की थी।
‘एक आखिरी बार देख लो,’ मैंने पल्लू से कहा। मैं पहाड़ के नज़ारे में खो गया। मेरे मन में एक अजीब सा ख्याल आया कि वापस दौड़कर यात्रा पूरी कर लूँ।
लेकिन, यह नामुमकिन था।
‘बस थोड़ा सा बाकी था,’ पल्लू कहती है। पहाड़ बहुत करीब था। हम अपनी परिक्रमा पूरी करने के बहुत करीब थे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह इनमें से किस कथन का जिक्र कर रही है, क्योंकि दोनों ही सत्य हैं।
रुद्र की स्तुति में रचित प्राचीन श्लोकों में कवियों ने लिखा है:
उन्हें मेरा प्रणाम।
जो दलदली, कीचड़ भरे स्थानों में रहता है,
और कौन स्वच्छ जलकुंडों में रहता है?
कांटेदार, कठिन स्थानों में,
वन की लताओं में।

उन्हें मेरा प्रणाम।
जो इस संसार में जन्म लेता है,
जो अच्छे और बुरे दोनों गुणों से मिश्रित है,
और चीजें बदलती रहती हैं।
रुद्र इस संसार के देवता हैं। वे किसी दिव्य लोक में नहीं, बल्कि श्मशान घाटों, जल, धूल, वन की लताओं और बर्फ और चट्टान के एक सुंदर, लेकिन खतरनाक पर्वत पर निवास करते हैं। श्लोक इस बात की अनुभूति कराते हैं कि चाहे कीचड़ और दलदल हो या निर्मल जल, दोनों का अस्तित्व समान है। कैलाश पर मेरी एक रात और मेरी अधूरी परिक्रमा, दोनों एक ही यात्रा का हिस्सा हैं। ध्यान करते समय, कभी-कभी मुझे आनंद और शांति का अनुभव होता है, और कभी-कभी भय और पीड़ा उत्पन्न होती है। ध्यान के दौरान विकसित होने वाले कौशलों में से एक है उस आनंद और उस पीड़ा दोनों को स्वीकार करने की क्षमता।
महान ज़ेन गुरु डोगेन ने कहा था: 'एक फूल हमारे प्यार के बावजूद भी गिर जाता है; एक खरपतवार हमारे प्यार न करने के बावजूद भी उगता है।'
मेरी ध्यान साधना के समय और स्थान के भीतर, यह अंतर्दृष्टि मेरे लिए स्पष्ट है; हालाँकि, मेरी साधना से बाहर, मैं अक्सर इस समझ को भूल जाता हूँ।
जैसे ही मैं घोड़े से उतरता हूँ, घुड़सवार महिला की उदासीन निगाहें कुछ पल के लिए मुझ पर टिक जाती हैं।
मैं मुस्कुराता हूँ और कहता हूँ, 'धन्यवाद, धन्यवाद!'
मैं उसे बताना चाहती हूँ कि मैं उसकी और उसके घोड़े की बहुत आभारी हूँ, लेकिन वह नज़रें फेर लेती है। मैंने सोचा था कि हमारे साझा अनुभव ने हमारे बीच एक बंधन बना दिया है, लेकिन शायद उसके लिए इसका कोई मतलब नहीं है। मेरे जीवन के नाटक उसके लिए कोई मायने नहीं रखते, क्योंकि उसने ये सब पहले भी देखा है। जब मैं होश में रहने के लिए संघर्ष कर रही थी, तब वह क्या सोच रही थी? शायद वह घर लौटने पर खाना बनाने के विचार से नाराज़ थी। शायद मेरे जल्दी लौटने से उसे एक दिन की मजदूरी और टिप का नुकसान हो रहा था, और मैं इस नुकसान का एक चिड़चिड़ा प्रतीक थी।
फिर भी, मैं चाहती हूँ कि उसे पता चले, इसलिए मैंने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'धन्यवाद।' मुझे यकीन नहीं है कि वह समझ पाई या नहीं। उसने सिर हिलाया और दूसरी तरफ देखने लगी।

आगे तिब्बती आकाश अंत्येष्टि है जिसे मैंने शुरुआत में देखा था। यह बिल्कुल वैसा ही दिखता है - विरोधाभासों के पहाड़ पर उकेरा गया, काला और सफेद, चट्टान और बर्फ। इस पहाड़ पर, मृत्यु को भी उदासीनता से देखा जाता है और मृत्यु भी एक भेंट है।

एक चुराया हुआ दिन

Lake Manasarovar, Tibet

ऊंचाई ~ 4,600 मीटर

हमें आज रात डार्चेन में उस गेस्टहाउस में बितानी है, जिसके कमरे हवादार नहीं हैं और शौचालय असहनीय है। पल्लू ने न्यिमा से हमारे लिए कोई दूसरा विकल्प ढूंढने का अनुरोध किया।
‘कोई और जगह। जैसे मानसरोवर। हम मानसरोवर में क्यों नहीं रुक सकते?’ वह पूछती है।
‘हमारे पास अनुमति नहीं है,’ वह उससे कहता है।
‘क्या आप इसे लाने की कोशिश कर सकते हैं?’ वह पूछती है।
न्यिमा सिर हिलाता है लेकिन अनिश्चित दिखता है। वह हमें बताता है कि जब तक वह अधिकारियों से बातचीत कर रहा है, तब तक हम पास के टेलीफोन बूथ से अपने परिवारों को फोन कर लें।
टेलीफोन बूथ पर एक मोटा, बेढंगा, सड़े हुए दांतों वाला आदमी बैठा है। दीवार पर दक्षिण भारतीय फिल्मों की नायिका स्नेहा का एक पोस्टर टंगा है, जिसमें वह एक तेलुगु आभूषण की दुकान के विज्ञापन में दिखाई दे रही है। कांचीवरम साड़ी पहने, सिर से पैर तक तरह-तरह के सोने के आभूषणों से सजी स्नेहा की हिरनी जैसी निगाहों के नीचे, मुझे थोड़ी खुशी होती है कि मेरे गृहनगर का एक छोटा सा हिस्सा तिब्बत के सुदूर अंदरूनी इलाकों तक पहुंच गया है। पल्लू बताती है कि यह पोस्टर शायद किसी तेलुगु तीर्थयात्री ने फेंक दिया होगा। कोई तीर्थयात्री तीर्थयात्रा पर आभूषण का पोस्टर क्यों लाएगा, यह मेरी समझ से परे है। खैर, अपने परिवार को फोन करने की हमारी कोशिश बेकार गई – यहां फोन काम नहीं करता।
जब न्यिमा लौटता है, तो वह बहुत खुश दिखता है। उसने मानसरोवर झील पर एक अतिरिक्त दिन के लिए परमिट हासिल कर लिया है। हम उसका तहे दिल से शुक्रिया अदा करते हैं, और उसके प्रति अपने पहले के रवैये पर पछतावा करते हैं। हम

महसूस करते हैं। यहाँ कोई और आगंतुक नहीं है। पल्लू और मैं झील के किनारे अकेले हैं।
पल्लू कहती हैं, 'यह डरावना था, जिस तरह से तुम बात कर रहे थे, तुम्हारी आंखें। यह बहुत डरावना था।'
मुझे याद आता है कि कैलाश की बर्फीली पगडंडियों पर मैं लगभग मर ही गया था। पल्लू को वापस लौटना पड़ा था, इस अपराधबोध ने मेरे विचारों को इतना घेर लिया था कि अब तक मैं यह समझ ही नहीं पाया था कि मैं कितने बड़े खतरे में था।
मैंने अपनी चचेरी बहन पर एक नज़र डाली। वह दूर तक देखती हुई काफी शांत लग रही थी। उसे कैसा लग रहा होगा? पल्लू के लिए यह यात्रा दृढ़ता की एक महत्वपूर्ण परीक्षा थी। उसे यह देखना था कि क्या वह इतने साल पहले शुरू किए गए अपने काम को पूरा कर पाएगी।
पल्लू ने न सिर्फ परिक्रमा छोड़ी, बल्कि मेरी देखभाल की ज़िम्मेदारी भी उठा ली। बौद्ध धर्म में कहा जाता है कि उदारता दिखाना कठिन है, लेकिन कृतज्ञता दिखाना उससे भी ज़्यादा। उसने अपनी लंबे समय से चली आ रही इच्छा को त्याग दिया है और मैं इससे असहज महसूस कर रही हूँ। क्यों? शायद इसलिए कि मैंने हमेशा खुद को अजेय समझा है और जब मुझे देखभाल की ज़रूरत होती है तो इसे स्वीकार करना मेरे लिए मुश्किल होता है। और यह कितना अजीब है कि मेरी छोटी चचेरी बहन मेरे लिए यह सब कर रही है। इतने सालों से तो मैंने हमेशा यही सोचा था कि यह उल्टा होना चाहिए था। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या उसे पता है कि उसके कार्य कितने अद्भुत थे, वह उन्हें इतनी सहजता से लेती है। उसे धन्यवाद कैसे दूँ? हम इतने करीब हैं कि औपचारिक धन्यवाद के शब्द पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए, मैं जो कर सकती हूँ वही करती हूँ - मैं इसे हल्के में लेती हूँ।
‘पल्लू, तुम पागल हो। तुम्हें काम खत्म कर देना चाहिए था।’
‘पागल तो तुम हो।’
‘नहीं, मुझे ऊंचाई की बीमारी हो गई थी। तुम पागल हो,’ मैंने उससे कहा।
‘बस चुप रहो।’ वह मुस्कुराती है।
हम एक छोटी बत्तख को शांत लहरों पर तैरते हुए देखते हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में, मानसरोवर के पक्षी इतने शुद्ध प्राणी माने जाते हैं कि वे दूध को पानी से अलग कर सकते हैं। यह झील पहाड़ों के बीच स्थित एक शांत, चमकीली

नीलमणि की तरह है। आकाश के रंग इसकी लहरों में प्रतिबिंबित होकर जीवंत प्रतीत होते हैं। पहाड़ों की प्रचंड सुंदरता के बाद, झील मन को शांति प्रदान करती है। यह अनंत, दीप्तिमान नीले रंग का एक फैला हुआ अंडाकार आकार है। मानसरोवर को सूर्य झील के नाम से जाना जाता है, लेकिन मुझे यह चंद्रमा के समान कोमल लगती है; यह एक चंद्र झील है।
पानी के किनारे, पल्लू और मैं अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में समय और स्थान से परे छोटी-छोटी, बेमतलब की बातें करते हैं। हम बेशर्मी से गपशप करते हैं। हम उन सभी चीज़ों के बारे में बात करते हैं जो हम घर लौटने पर करेंगे और जो कहानियाँ सुनाएँगे। हम अपने जूते उतारते हैं और अपने पैर पानी में डालते हैं। पानी बर्फ़ जैसा ठंडा है, फिर भी धूप से गर्म है। हम काँपते हैं और हँसते हैं। हुमला की ट्रेकिंग के दौरान हम यही करना चाहते थे, अपने जूते उतारना और मिट्टी, पानी, घास को महसूस करना। ऐसा लगता है जैसे यह दिन समय से चुरा लिया गया हो, और अब जब हम अपने जूते उतारते हैं और अपने पैर झील में डालते हैं, तो हम इसे समय में ही डुबो देते हैं।
न्यिमा ने मुझे हरि से बात करवाई, जिसने बताया कि उसने पल्लू और मुझे हवाई जहाज से निकालने का इंतजाम कर दिया है। मेरे पति की आवाज में जो घबराहट थी, वह शांत वातावरण में बेमेल सी लग रही थी।
थोड़ी देर बाद न्यिमा को एक और कॉल आती है। वह फोन मुझे थमा देता है।
‘हेलो?’ यह एक पुरुष की आवाज है जिसमें अमेरिकी लहजा काफी लंबा खिंचा हुआ है।
‘हाय! मेरा नाम जॉन है और मैं बोस्टन से फोन कर रहा हूं।’ उनकी आवाज में काफी चिंता झलक रही है।
हाय जॉन। मैं कविता हूँ।
‘कैसी हो, कविता?’ वह पूछता है।
मैं कल्पना करता हूँ कि एक लंबा-चौड़ा, भूरे बालों वाला आदमी अपने तापमान नियंत्रित कमरे में डेस्क पर बैठा है, खिड़की से बाहर ठंड, कोहरे, यातायात, शोर और कारों को देख रहा है। और मैं यहाँ दुनिया के सबसे खूबसूरत स्थानों में से एक में हूँ; यह कितना अजीब है कि वही मुझसे पूछ रहा है कि मैं कैसा हूँ।
‘मैं? मैं ठीक हूँ,’ मैंने कहा, ‘मैं बहुत बढ़िया हूँ! आप कैसे हैं? बोस्टन कैसा है?’

‘आप ठीक हैं, यह जानकर खुशी हुई,’ वह कहते हैं। फिर वह मेरी उम्र, स्वास्थ्य और अन्य जानकारियों के बारे में कुछ सवाल पूछते हैं। जॉन कहते हैं कि मेरी तबीयत इतनी खराब नहीं लग रही कि मुझे एयरलिफ्ट करके अस्पताल ले जाना पड़े। कुछ पल सोचने के बाद, मुझे उनकी बात से सहमत होना पड़ा।
बाद में हरि ने दोबारा फोन किया। 'तो, बचाव दल के उस आदमी ने क्या कहा?' उन्होंने 'हाय' और 'आप कैसे हैं' कहा।
'और आपने क्या कहा?'
मैंने कहा कि मैं बहुत अच्छा कर रहा हूँ।
‘क्या? महान का क्या मतलब है? तुम तो मौत के कगार पर थे।’
लेकिन उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कैसा हूँ, तो मैंने कहा कि मैं बहुत अच्छा हूँ, क्योंकि उस समय मैं वास्तव में बहुत अच्छा था।
‘ठीक है। फिर क्या?’
मैंने उनसे पूछा कि वे कैसे हैं।
थोड़ी देर का विराम होता है। 'मुझे लगता है कि वह हेलीकॉप्टर नहीं भेज रहा है।'
'मुझे नहीं लगता।'
'धिक्कार है कवि! तुमने यह क्यों कहा कि तुम ठीक हो? तुम ठीक नहीं हो - चौबीस घंटे पहले तो मुझे लगा था कि तुम बच नहीं पाओगे।'
लेकिन मैंने कर दिखाया।
हम सब यहां चिंतित हैं।
‘मैं जल्द ही घर आ रहा हूँ, हरि।’
वह मुझे बताता है कि कैलाश के शिविर में जिस सुबह मैं बीमार पड़ी थी, उस सुबह उसने एक सपना देखा था। सपने में वह एक बेंच पर अकेला बैठा था, तभी उसे कदमों की आहट सुनाई दी। उसने पीछे मुड़कर देखा तो मुझे देखा।
‘अरे! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ उसने मुझसे पूछा था।
मैं कमरे के उस पार जाकर उसके बगल में बैठ गया।
उन्होंने कहा, 'मुझे लगा तुम कैलाश में हो।' मैं बस मुस्कुराई। मैंने अपना हाथ उनके हाथ में डाला और हम दोनों वहीं बैठ गए।
हरि चौंककर और बेचैनी से जाग उठा था। सुबह हो चुकी थी और मैं कैलाश के शिविर में बहुत दूर था। शायद मैं कॉफ़ी पी रहा था। शायद मैं अपना स्लीपिंग

बैग अपने बैकपैक में रख रहा था। या शायद, मैं अभी-अभी जागा था, मेरी आँखें खुलती जा रही थीं और नीली रोशनी मेरे सामने नाच रही थी।
बाद में अशोक का फोन आता है। पल्लू उसे बताती है कि हम ठीक हैं और चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।
‘बस कुछ ही दिन बचे हैं,’ वह उससे कहती है। ‘हम लगभग घर पहुँच चुके हैं।’ दोपहर तक, समूह के शेष सदस्य मानसरोवर पहुंच जाते हैं।
प्रार्थना हैरान-परेशान दिखती है। वह कहती है, 'आप लोग मेरे ठीक पीछे थे। फिर अचानक छिरिंग ने हमें बताया कि आप लोग वापस मुड़ गए थे।'
यह सच है। घटनाओं की पूरी श्रृंखला - मेरा बीमार पड़ना, पल्लू और मेरा घोड़ों पर सवार होकर शिविर स्थल से निकलना - दस मिनट से अधिक समय नहीं लगा होगा।
'हमें डोल्मा ला के बारे में बताएं। हमें बाकी की यात्रा के बारे में बताएं,' पल्लू कहता है।
यात्रा पूरी करने की खुशी प्रार्थना के चेहरे पर साफ झलक रही है, लेकिन हमें तसल्ली देने के लिए वह कहती है कि कैलाश के सबसे खूबसूरत नज़ारे तो पहले दिन ही देखने को मिले थे। वह कहती है, 'मुझे आप लोगों की बहुत याद आई।' यिंग भी चिंतित है। वह पूछती है, सब कुछ अचानक कैसे बिगड़ गया? वह कहती है कि मेरे बीमार पड़ने के बाद छिरिंग ने उससे कहा था कि उसे मेरी कोई चिंता नहीं थी। हमारी पूरी यात्रा के दौरान, उसे सबसे ज़्यादा चिंता यिंग की ही थी।
बाद में यिंग ने मुझसे कहा, 'लेकिन यात्रा अहंकार के बारे में नहीं है। मुझे नहीं लगता कि यह प्रतिस्पर्धा के बारे में है। अगर आप काफी मजबूत नहीं हैं, तो क्या हुआ? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर आपको मदद की ज़रूरत है, तो कुली किराए पर ले लें। अगर आप चल नहीं सकते, तो टट्टू की सवारी करें। अगर आप तेज़ नहीं चल सकते, तो धीरे चलें। यह पहले आने, मजबूत होने या इसे चुनौती के रूप में लेने के बारे में नहीं है। यात्रा को जैसे भी आप कर सकते हैं, करें। दूसरों को आपको रोकने न दें।'
स्पेरेलो को अपनी बाईं एड़ी में दर्द के बावजूद दौड़ पूरी करने पर राहत मिली है। उनका कहना है कि वे अपनी पत्नी कार्ला को यहाँ लाएँगे। हो सकता है कि वह इतनी दूर तक चल न पाएँ, लेकिन वे उनके लिए एक टट्टू का इंतज़ाम करेंगे। वे चाहते हैं कि कार्ला किसी भी तरह से पहाड़ को देख सकें।

कैटी शुक्रगुजार है कि उसे इस बात का पता नहीं था कि पल्लू और मैं कितने अयोग्य और अनुभवहीन थे, और यिंग के खराब पैर के बारे में भी नहीं। वह कहती है कि अगर उसे पता होता, तो वह यात्रा रद्द कर देती और वह अपने लिए एक अनमोल अवसर से वंचित रह जाती।
जेफ ने पल्लू और मुझे एक-एक पत्थर दिया। 'मैंने इन्हें डोल्मा ला दर्रे से प्राप्त किया है।'
‘धन्यवाद, जेफ!’ पल्लू कहती है।
मैंने सफेद पॉलिश किए हुए पत्थर को सहलाया और डोल्मा ला के टुकड़े को अपनी जेब में रख लिया।
मैरिएन और स्टीफन शिविर स्थल पर पहुँचते हैं। उन्हें घटना के बारे में पता चल चुका है।
मैं कहती हूं, 'मैं ठीक-ठाक चल रही थी, और फिर अचानक सब कुछ गड़बड़ हो गया। मुझे अब भी यह समझ नहीं आ रहा है।'
‘चिंता मत करो, अनुभवी पर्वतारोहियों के साथ भी ऐसा होता है,’ मैरिएन कहती हैं। वह हमें बताती हैं कि जब वह और स्टीफन तंजानिया में माउंट किलिमंजारो पर चढ़ाई करने निकले थे, तब तक वे कई सालों से दुनिया भर में ट्रेकिंग कर रहे थे। फिर भी, जब वे किलिमंजारो की चोटी के लगभग करीब थे, तब स्टीफन को हल्का दिल का दौरा पड़ गया।
‘अरे नहीं! तुमने क्या किया?’ मैंने पूछा।
वह क्या कर सकती थी? उसने उसे गाइड के साथ छोड़ दिया और चोटी पर चढ़ाई पूरी की।
परिक्रमा का दूसरा दिन, जिसे पल्लू और मैं चूक गए थे, बेहद खूबसूरत और भावुक कर देने वाला था। बाकी लोग हमारे सामने उस दिन के बारे में बात करने से बचते रहे, जो उनकी समझदारी थी। धीरे-धीरे हमें उस दिन के बारे में पता चला – परिक्रमा पूरी करने का रोमांच, रास्ते के नज़ारे, और जिन लोगों से वे मिले। मृतकों की याद में बने स्थान पर, जेफ ने अपनी मरी हुई बिल्ली के लिए एक छोटी सी वेदी बनाई। पुनर्जन्म की सुरंग में, अगर आप उस छोटे से रास्ते से रेंगकर निकल पाते हैं, तो कहा जाता है कि अगले जन्म में आपका जन्म आपके वर्तमान माता-पिता के घर होगा। जेफ रेंगकर बाहर निकला और बोला, 'माफ़ करना मम्मी-पापा, आपको फिर से मेरे साथ ही रहना पड़ेगा!' डोलमा ला दर्रे की चोटी

पर, स्पेरेलो ने अपनी बहन द्वारा दिए गए काले झंडे बाँधे। कैटी और यिंग चोटी पर एक साथ खड़ी होकर उस पल का आनंद ले रही थीं।
प्रार्थना एक टट्टू पर सवार होकर आगे चली गई। जब पल्लू और मैं वापस नीचे उतरने लगे, तो उसे अकेलापन महसूस हुआ। मैं कल्पना कर सकती हूँ कि वह लगाम को कसकर पकड़े हुए थी, चिंतित थी क्योंकि टट्टू ने अपना सिर डोल्मा ला दर्रे की ऊँचाई की ओर उठाया हुआ था। तीनों भारतीय महिलाओं में से प्रार्थना सबसे ज़्यादा डरी हुई थी, लेकिन वही अंत तक पहुँची। मुझे खुशी है कि हममें से कम से कम एक तो अंत तक पहुँच पाई।
स्पेरल्लो ने अपनी जेब से कुछ चमकदार चीज़ निकाली। ये सोने के रंग के कागज़ में लिपटी हुई दो चॉकलेट थीं। वो इटली से सात चॉकलेट लाए थे, हममें से हर एक के लिए परिक्रमा पूरी करने के उपलक्ष्य में एक-एक। बाकी सभी ने अपनी-अपनी चॉकलेट परिक्रमा के अंत में खा ली थीं।
‘ये आपके हैं,’ वह हमसे कहते हैं, और अपनी हमेशा की विनम्रता से पल्लू और मुझे दे देते हैं। मैं थोड़ा हिचकिचाती हूँ और यह बताने लगती हूँ कि पल्लू और मैंने परिक्रमा पूरी नहीं की है। लेकिन मैं खुद को रोक लेती हूँ। पल्लू उन्हें धन्यवाद देती है और अपनी चॉकलेट खोलती है। मैं भी ऐसा ही करती हूँ। चॉकलेट की मिठास मेरे मुँह में घुल जाती है। शायद चॉकलेट का उद्देश्य हर तरह के अंत का जश्न मनाना है, चाहे वह किसी भी तरह से हुआ हो।
सबके वापस आने से शिविर में चहल-पहल मच गई है। जेफ एक तह कुर्सी पर बैठा है और झील के ठंडे पानी में अपने नंगे पैर डुबो रहा है। जर्मन दंपति अपने सहायकों के साथ शिविर लगा रहे हैं। केटी, पल्लू और मैं गर्म चाय की चुस्कियां ले रहे हैं, जबकि स्पेरेल्लो शिविर स्थल पर बैठी एक बूढ़ी औरत से नमक खरीद रहा है, जो वह इटली में अपने दोस्त के लिए उपहार के रूप में ढूंढ रहा था। वह पल्लू और मुझे स्मृति चिन्ह के रूप में हल्के गुलाबी रंग के सेंधा नमक के टुकड़े देता है।
जब मैं समूह के बाकी लोगों से बात कर रहा था, तो मुझे यकीन करना मुश्किल हो रहा था कि कुछ ही घंटे पहले मैं मौत के इतने करीब था। मेरी दृष्टि कमजोर होती जा रही थी, फिर भी मैं डोलमा ला दर्रे तक जाना चाहता था, जहाँ हवा और भी पतली थी, और जहाँ मौत और भी करीब मंडरा रही होती। छिरिंग ने मुझे पहाड़ से नीचे लाकर मेरी जान बचाई। मैं न्यिमा का आभारी हूँ, जो मेरे साथ थी, उस टट्टू का जिसने मुझे उठाया, उस घुड़सवार का जिसने जानवर को रास्ता दिखाया,

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मून लेक

Lake Manasarovar, Tibet

ऊंचाई ~ 4,600 मीटर

मानसरोवर झील पर सूर्यास्त के समय आसमान गुलाबी, नारंगी और लाल रंगों से जगमगा उठता है। झील दमक रही है और किसी अवास्तविक दृश्य जैसी प्रतीत होती है। यिंग, अपने सुंदर शब्दों के वरदान से, हमें बताती है कि इस क्षण में क्षणभंगुर और शाश्वत दोनों समाहित हैं। क्षणभंगुर और शाश्वत। मैं इन शब्दों को स्वयं से दोहराता हूँ। यह क्षण क्षणभंगुर है क्योंकि सब कुछ क्षणभंगुर है। यह शाश्वत है क्योंकि सूर्यास्त अद्भुत, सुंदर और आनंदमय है, और ये गुण हमारे जीवनकाल के संक्षिप्त समय में शाश्वतता के उतने ही निकट पहुँचते हैं जितना हम पहुँच सकते हैं।
आकाश में पूरा चांद चमक रहा है। पूर्णिमा का दिन, यानी आज का पूर्णिमा का दिन, मानसरोवर झील की परिक्रमा के लिए शुभ माना जाता है। स्पेरेलो ने इस 85 किलोमीटर की यात्रा के लिए एक लैंड क्रूज़र का इंतजाम किया है। पल्लू, प्रार्थना और मैं पीछे की सीट पर बैठ जाते हैं। स्पेरेलो आगे की सीट पर बैठते हैं। जैसे ही गाड़ी स्टार्ट होती है, वे मुड़कर पल्लू और मुझसे कहते हैं, 'मुझे खुशी है कि आप यह परिक्रमा कर सकते हैं। मुझे खुशी है कि आप इसे पूरा कर पाएंगे।'
कैलाश पर्वत की परिक्रमा की तुलना में कम महत्वपूर्ण मानी जाती है, फिर भी झील की परिक्रमा पवित्र मानी जाती है, विशेषकर पूर्णिमा के दौरान, जब चंद्रमा का प्रतिबिंब जल में दिखाई देता है। यदि कैलाश पर्वत की परिक्रमा विनाश के देवता के प्रति सम्मान का प्रतीक है, तो पूर्णिमा की रात को झील की परिक्रमा का क्या अर्थ है?
बौद्ध धर्म में चंद्रमा का आदर किया जाता है। डोगेन ने जल पर चंद्रमा के प्रतिबिंब की तुलना ज्ञान प्राप्ति से की है। जब चंद्रमा का प्रतिबिंब जल पर पड़ता है, तो वह न तो गीला होता है, न ही जल में कोई छिद्र होता है, और न

ही उसका आकार बदलता है; ठीक वैसे ही जब कोई व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है। और यद्यपि चंद्रमा का प्रकाश विशाल और व्यापक है, फिर भी वह घास की एक पत्ती पर पड़ी ओस की बूंद या एक बूंद बारिश में प्रतिबिंबित हो सकता है; ठीक वैसे ही ज्ञान का विशाल प्रकाश होता है।
एक ज़ेन कथा के अनुसार, चियोनो नाम की एक भिक्षुणी ने वर्षों तक ध्यान का अभ्यास किया, लेकिन उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। एक रात, उन्होंने एक कुएँ से पानी भरकर अपनी पुरानी बाल्टी में भर लिया। बाल्टी का निचला हिस्सा बाँस से बंधा हुआ था। उस रात चाँद चमकीला था और उन्होंने बाल्टी के पानी में उसका प्रतिबिंब देखा। अचानक, बाल्टी का निचला हिस्सा टूट गया और पानी ज़मीन पर गिर गया। उसी क्षण, चियोनो को सत्य का ज्ञान हुआ: बिना पानी के चाँद नहीं।
जापानी कहानियां और पहेलियां अपनी रहस्यमयता के लिए प्रसिद्ध हैं। शायद यही उनका उद्देश्य है। क्योंकि ज्ञानोदय मायावी है, अगर असंभव नहीं तो। शायद ज्ञानोदय को सही मायने में समझने का एकमात्र तरीका उसे प्राप्त करना ही है। फिर भी, सटीक समझ के बिना भी, मुझे ये रहस्यमय कहानियां और इनमें मौजूद खूबसूरत बिम्ब बहुत पसंद हैं: पानी की बाल्टी में चांद का प्रतिबिंब; बारिश की एक बूंद में विशाल और अनंत आकाश का प्रतिबिंब। तिब्बती परंपरा में भी चंद्रमा को पूजनीय माना जाता है। सागा दावा उत्सव तिब्बती बौद्ध धर्म का सबसे पवित्र उत्सव है और महीने की पूर्णिमा के दिन इसका समापन होता है। मंदिरों के बाहर लटके कई तिब्बती थांका चित्रों में चंद्रमा दिखाई देता है। यालबांग मठ में हमने जो थांका देखा, उसी तरह के थांका चित्रों में एक चक्र के चारों ओर मारा (चंद्रमा) की आकृति बनी होती है, जिसमें बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं के दृश्य दर्शाए गए हैं। सबसे ऊपर, बुद्ध बादलों में विराजमान हैं। उनका हाथ फैला हुआ है और उनकी तर्जनी उंगली मारा के ऊपर आकाश में चित्रित चंद्रमा की ओर इशारा कर रही है। चमकता हुआ चंद्रमा एक कोमल चांदी जैसी रोशनी है और यह बुद्ध की सभी शिक्षाओं का प्रतीक है। यह धम्म है और ज्ञानोदय का मार्ग है। जब बुद्ध चंद्रमा की ओर इशारा करते हैं, तो वे इस संसार में दुखों के अंत का मार्ग दिखाते हैं।
इस चंद्र सरोवर से मैं जो भी अर्थ लेना चाहूँ, ले सकता हूँ। चूँकि मानसरोवर ब्रह्मा की चेतना से उत्पन्न हुआ था, इसलिए मैं इस सरोवर को सृजनात्मक चेतना के प्रतीक के रूप में देखता हूँ। पूर्णिमा की इस रात को इस सरोवर की

परिक्रमा करना सृजनशीलता के प्रति सम्मान का प्रतीक है। शायद यही वह चीज थी जिसकी मुझे हमेशा से तलाश थी - कुछ नया और सुंदर सृजित करना, जो मेरी चेतना से निकलकर संसार में प्रकट हो।
रात की हवा बेहद ठंडी है। मैं अपने कोट में दुबक जाती हूँ। जैसे ही हमारी कार झील का चक्कर लगाती है, छोटे खरगोश इधर-उधर भागते हैं और फिर मुड़कर हमें देखने लगते हैं, कार की रोशनी में उनकी आँखें चमक उठती हैं। जब हम गाड़ी की गति धीमी करते हैं, तो स्पेरेल्लो एक तस्वीर खींचता है। जब हम फिर से रफ्तार बढ़ाते हैं, तो मैं उससे कहती हूँ कि वह मुझे तस्वीरें ईमेल कर दे।
‘काश मेरे पास एक बेहतर कैमरा होता। काश मैंने और तस्वीरें खींची होतीं,’ मैंने स्पेरेल्लो से कहा। पल्लू और मैंने मुश्किल से ही कोई तस्वीर खींची है। मेरा कैमरा विशाल नज़ारों और पहाड़ों की तस्वीरें खींचने के बजाय जन्मदिन की पार्टियों की तस्वीरें खींचने के लिए ज़्यादा उपयुक्त है। उन्होंने बताया, 'आपके पास क्षण या यादगार वस्तुएं हो सकती हैं। आपके पास दोनों नहीं हो सकते।'
चांदनी रात में हमारी कार धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। स्थानीय तीर्थयात्री, मोटे लबादे ओढ़े हुए, अपने कंधों पर थैले, खाना पकाने के बर्तन और अन्य सामान लादे हुए चल रहे हैं। हमारे बाईं ओर एक पहाड़ी पर एक छोटा सा मठ है, जो अंधेरे में धुंधला सा दिखाई दे रहा है। मैं उसकी खिड़कियाँ कतार में देख सकता हूँ, और उनमें लाल, हरे और पीले रंग की झलकियाँ नज़र आ रही हैं। झील के पास गीले कंकड़ चांदनी में मोतियों की तरह चमक रहे हैं। रात हर चीज़ को रहस्यमय और अलौकिक बना देती है, और चंद्रमा की रोशनी सूर्य की चकाचौंध से कहीं अधिक चमकदार लगती है। प्रकाश प्रदूषण न होने के कारण तारे बहुत चमकीले हैं। आकाश इतना करीब है कि मुझे लगता है कि मुझे बस इतना ही हाथ फैलाना है कि मैं सबसे चमकीले तारों को चुन सकूँ और उन्हें अपने बच्चों के लिए घर ले जा सकूँ।

रिटर्निंग

हैदराबाद, भारत

ऊंचाई ~ 500 मीटर

घर पर सब कुछ पहले जैसा ही है। हरि उसी सफेद कप में अपनी ताज़ी फ़िल्टर कॉफ़ी की चुस्कियाँ ले रहा है। बच्चे उन्हीं दोस्तों, उन्हीं शिक्षकों और उन्हीं टीवी शो के बारे में बातें कर रहे हैं जिनके वे आज भी दीवाने हैं। बगीचे में गुलाबी ओलियंडर और लाल हिबिस्कस के फूल आज भी खिले हुए हैं। फिर भी, जो कुछ पुराना और जाना-पहचाना है, वह नया और अद्भुत लगता है, मानो मैं किसी और के सपने में हूँ।
मैंने हरि को जेफ से सीखी हुई बीयर की ढक्कन वाली ट्रिक दिखाई। उसने सराहना करते हुए सिर हिलाया। मैंने बैग पलटने वाली ट्रिक दिखाई और बच्चे प्रभावित हुए। उन्होंने अपने स्कूल बैग के साथ इसका अभ्यास किया।
शाम को हरि और मुझे कुछ पल अकेले बिताने का मौका मिलता है। मैं उसे अपने चेहरे को घूरते हुए पकड़ लेती हूँ।
‘क्या?’ मैंने पूछा।
वह अपना सिर हिलाता है। लेकिन मुझे लगता है कि मैं समझ गई। कई साल पहले, हरि अपने दोस्तों के साथ कोलोराडो के पहाड़ों पर ट्रेकिंग के लिए गया था। जब वह लौटा, तो उसने टेंट में सोने, डिब्बाबंद खाना और मेवे खाने, चट्टानों पर चढ़ने और घाटियों से बाहर निकलने की कहानियां सुनाईं। जब वह बोल रहा था, मैं उसे घूरती रही। यह सब मेरे पति से बिल्कुल अलग था। वह अपने खान-पान को लेकर बहुत सतर्क रहते हैं, उन्हें बिस्तर के अपने हिस्से पर और सिर्फ अपने तकिये पर सोना पसंद है, और मैंने उन्हें कभी भी किसी चीज पर चढ़ते हुए नहीं देखा। हरि जहां सलीके से कपड़े पहनते हैं और हमेशा अच्छे से तैयार रहते हैं, वहीं मेरे सामने बैठा आदमी नहाया नहीं था, उसकी जींस गंदी थी और उसके जूतों पर कीचड़ लगा था। उसकी दाढ़ी थी। मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैंने

उसे आखिरी बार दाढ़ी के साथ कब देखा था। उस अनुभव ने उसे कितना बदल दिया था? वह कितना बदल गया था?
हरि अब मुझे इसी नज़र से देखता है। मैं कितना बदल गई हूँ? मैं उन जगहों पर जा चुकी हूँ जिनके बारे में उसने सिर्फ़ कहानियों में सुना है। मैं लगभग मौत के मुँह से वापस आई हूँ। वह मेरे जीवन की इन घटनाओं का हिस्सा नहीं रहा है। क्या इसका मतलब यह है कि मेरे जीवन में उससे और हमारे साथ बिताए जीवन से अलग भी कुछ होगा?
शायद। मुझे नहीं पता कि हरि मेरी इस यात्रा को कभी पूरी तरह समझ पाएगा या नहीं, क्योंकि वह वहाँ मौजूद नहीं था। लेकिन मैं इतना ज़रूर जानती हूँ कि उन पहाड़ों में, पर्वतीय लोगों के सादे जीवन के बीच, और कैलाश पर्वत की ढलानों पर जब मैं घोड़े पर सवार होकर सुरक्षित स्थान की ओर जा रही थी, तब मैं घर जाना चाहती थी। मैं अपने परिवार को चाहती थी।
‘हरि,’ मैंने कहा, ‘मुझे सपने के बारे में बताओ।’
'मैंने आपको पहले ही बताया था।'
नहीं, विवरण।
‘क्या विवरण?’
‘हम कहाँ थे? घर पर? किसी और जगह? अमेरिका में, भारत में?’
हरि एक पल सोचता है, फिर कंधे उचका देता है। 'मुझे नहीं पता।'
दीवारों का रंग क्या था?
‘कवि, मुझे याद नहीं है,’ वह कहता है।
‘ठीक है। मैं कैसी दिख रही थी?’
‘तुम्हें मेरे दफ्तर वाली तस्वीर याद है? तुम उसमें ऐसी ही दिख रही थी।’ यह तस्वीर उसने तब खींची थी जब हम बीस साल के थे। हमारी सगाई अभी-अभी हुई थी। हम एक गली में चल रहे थे जब उसने एक फोटो स्टूडियो देखा। मुझे फोटो खिंचवाने में झिझक होती थी, इसलिए मैं हिचकिचा रही थी। लेकिन उसने ज़िद की क्योंकि वह अपने गृहनगर वापस जा रहा था और मेरी तस्वीर चाहता था। उस तस्वीर में, मेरी ड्रेस काले और सुनहरे रंग की है और मेरे सीधे बाल मेरे चेहरे को ढके हुए हैं।
‘ठीक है। तो मैं उस तस्वीर में जैसी दिख रही थी वैसी ही दिख रही थी।’ मुझे कुछ ठोस जानकारी पाकर बहुत खुशी हुई। ‘आप कैसी दिख रही थीं?’

‘मुझे नहीं पता। मैं सपने में भी वैसा ही दिखता रहा होगा जैसा अब दिखता हूं। मुझे नहीं पता। सपने में तो मैं खुद को नहीं देख पाता, है ना?’ हरि कहता है।
मैं अपनी कल्पना में अपने पति के सपने को फिर से जीवंत करती हूँ। मेरे सपने में, हम एक कमरे में हैं और वह शाम की हल्की रोशनी से जगमगा रहा है। हम बेंच पर बैठे हैं और हमारे सामने एक दीवार है जिस पर हल्का भूरा-हरा रंग चढ़ा हुआ है। हमारे सामने एक छोटी सी खिड़की है। वहाँ कोई पहाड़ नहीं हैं। कोई चट्टानें या कोई कठोर या नंगी चीज़ नहीं है। बाहर की दुनिया में ऊँचे-ऊँचे पेड़ और नम, मुलायम मिट्टी से फूटते हुए हरे-भरे पौधे हैं। हरि के बाल सफ़ेद और काले मिले-जुले हैं; मेरे बाल सीधे और काले हैं, जो मेरी पोशाक के कंधों को छू रहे हैं। हम कुछ नहीं बोलते। हम चुपचाप एक-दूसरे का हाथ थामे खिड़की से बाहर देखते हुए बैठे हैं।
अगले कुछ दिनों तक पल्लू का परिवार उसे अपने करीब रखता है। वह अपने पुराने जीवन में ही सिमटी रहती है। दूर रहकर वह अशोक और अपने बच्चों के और करीब आ गई है। पल्लू माला को घर के पूजा कक्ष में रख देती है। हरि की तरह अशोक भी धार्मिक है। उसके लिए रुद्राक्ष की माला अमूल्य आशीर्वाद है। पल्लू इसे उस झील का उपहार मानती है जिसे वह बचपन से देखने का सपना देखती थी, और साथ ही इस बात का प्रमाण भी कि उसने अपने लक्ष्य से भी कहीं अधिक महान कार्य पूरा किया है।
हम प्लास्टिक की बोतलों में इकट्ठा किया हुआ मानसरोवर का जल अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को भेजते हैं। वे इसे बाल्टी में छिड़ककर स्नान करते हैं। बुजुर्ग महिलाएं हमें छूकर हमारे सफ़र के दौरान अर्जित पुण्य में हिस्सा लेती हैं। कुछ महिलाएं जल को अपनी हथेलियों में लेकर प्रसाद के रूप में पीती हैं।
मैं हरि को नीली रोशनी के बारे में नहीं बताता। कैलाश में उस दिन जितनी महत्वपूर्ण वे रोशनी थीं, अब वे उतनी महत्वपूर्ण नहीं लगतीं। मैं उन रोशनी को शिव का संकेत या बुद्ध वैरोचना का भ्रम नहीं मानता। मेरा मानना है कि वे ऊंचाई पर होने वाली बीमारी के लक्षण थे।
फिर भी, मैं उस ठंडी और चमकदार सुबह कैलाश की बर्फीली ढलानों पर अपनी ओर नाचती हुई उन नीली रोशनी को देखकर जो महसूस किया, उसे मैं नहीं भूल सकता।

क्षणिक और शाश्वत

यिंग के शब्द मेरे मन में बसे हुए हैं। क्षणभंगुर और शाश्वत। बुद्ध के अनुसार, इस संसार में कुछ भी शाश्वत नहीं है, और सब कुछ क्षणभंगुर है। हमारी यात्रा समाप्त हो चुकी है, और झील और पहाड़ की सुंदरता अब दूर हो चुकी है। फिर भी, जो चीजें हमारे साथ रहेंगी, वे इस जीवन की किसी भी चीज की तरह शाश्वत रहेंगी। पल्लू के पास हमेशा रुद्राक्ष की माला रहेगी। हमारे पास हमेशा जेफ द्वारा दिए गए पत्थर रहेंगे। हमारे पास हमेशा सहयात्रियों की तस्वीरें और ईमेल रहेंगे। हम हमेशा अपनी बनाई हुई मित्रता को याद रखेंगे। और कुछ यादें हमारे साथ हमेशा रहेंगी, जबकि अन्य धुंधली पड़ जाएंगी।
जब मैं अपनी यात्रा के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे कुछ खास पल याद आते हैं और मैं उन्हें ठीक उसी तरह जीवंतता से महसूस करता हूँ जैसे उस पल में किया था। मुझे हुमला के पहाड़ी जंगल में दोपहर के भोजन में खाए गए पकौड़ों से उठती भाप याद है। मुझे ठीक से याद है कि पहले शिविर स्थल से कैलाश पर्वत काले पत्थरों और सफेद बर्फ से घिरे क्षितिज पर कितना विशाल दिखाई दिया था। मुझे चट्टानों पर घोड़ों के खुरों की आवाज याद है।
मुझे सबसे स्पष्ट रूप से पल्लू के साथ मानसरोवर झील पर बिताया गया वह चोरी-छिपे का दिन याद है।
पल्लू और मैं, अपने मोटे कोट और हाइकिंग बूट पहने, किनारे पर पीठ के बल लेटे हुए हैं। सूरज की गर्मी हमारे चेहरों को छू रही है, ठंडी हवा हमारे गालों को चुभ रही है, और धूल-मिट्टी हमारे बालों को बिखेर रही है। नीले पानी पर बिखरे हुए पक्षी धीरे-धीरे उड़ रहे हैं। शांति और एकांत किसी विलासिता की तरह महसूस हो रहे हैं, जैसे त्वचा पर रेशम की ठंडी चादरें हों। पास ही एक छोटा सा पत्थरों का ढेर है। मैं उसमें जोड़ने के लिए एक पत्थर उठाती हूँ। जैसे मैंने बाकी सभी पत्थरों के ढेरों में जोड़े हैं, वैसे ही मैं चाहती हूँ कि इस ढेर का भी कोई अर्थ हो। मैं अपनी चचेरी बहन की ओर

देखती हूँ, जिसने अपने लंबे पैर फैला रखे हैं और धूप से बचने के लिए अपनी आँखें बंद कर ली हैं। झील के किनारे बना यह पत्थरों का ढेर उन सभी चीजों का प्रतीक है जिनके बारे में पल्लू और मैं कभी बात नहीं करते - उदारता, स्वीकृति और दोस्ती के लिए अपने सपने को त्यागने का अर्थ। झुककर, मैं पत्थरों के उस हिलते-डुलते ढेर में एक और छोटा पत्थर जोड़ देती हूँ।

अनुक्रमणिका

ऊंचाई से बीमारी
अमर चित्र कथा
Annapurana
एनोटाटा झील
Avalokiteshwara, Bodhisattva
बार्डो थोस ग्रोल (अंतराल के दौरान सुनने से मुक्ति) नीली बत्तियाँ
बोधिसत्वों
बॉन
बॉन चुंग
ब्रह्मा
ब्रह्मपुत्र
बुद्धा
पदचिह्न
बुद्ध धर्म
महायान
थेरवाद
तिब्बती
Vajrayana
बौद्ध
पौराणिक कथा
समयबद्धता और करुणा के मूल्य
बुमाचिया खोला
चक्रसंवर (बुद्ध डेमचोक) वज्रवरही भी देखें Chhiring

चीन
बौद्ध, कन्फ्यूशियस और ताओवादी प्रणालियाँ और भारत, संबंध
चीनी
कैलाश पर्वतारोहण पर प्रतिबंध
आर्थिक सुधार
तिब्बत पर आक्रमण
तिब्बत में सोने, खनिजों और तेल का खनन
तिब्बत और तिब्बत की शांतिपूर्ण मुक्ति के लिए सत्रह सूत्री समझौता चिउ गोम्पा, पक्षी मठ
चियोनो
करुणा
रचनात्मक चेतना
सांस्कृतिक पहचान
सांस्कृतिक क्रांति
दक्ष
दलाई लामा, चौदहवें
दारचेन, तिब्बत
दारपोचे, तिब्बत
Dharapori, Humla, Nepal
डोगेन
डोल्मा ला दर्रा, तिब्बत
दूरदर्शन
Drira Phuk Monastery
Drira Phuk, Mount Kailash, Tibet
प्रबोधन
पर्यावरणीय क्षति
तीर्थयात्री अपने पीछे कचरा छोड़ जाते हैं। गंगा चू चैनल
संप्रदाय को भूल गया
कृतज्ञता

गोरखा राइफल्स
उच्च ऊंचाई मस्तिष्क शोफ (HACE)
अभिवादन
हिन्दू धर्म
हिंदुओं
मानव चेतना
तिब्बत में चीन द्वारा मानवाधिकारों का उल्लंघन भौंरा यात्रा
पेरू में स्थित माचू पिचू के इंका खंडहर
सिंधु
जैन
कबीर
काग्यू संप्रदाय
कैलाश, पर्वत
देवताओं का पर्वत
चीन द्वारा तीर्थयात्रियों के लिए बंद कर दिया गया था प्रदक्षिणा के आसपास
हिंदू तीर्थयात्रियों के लिए शिव का निवास स्थान रात में
Kala Bhairava
कर्मा लिंगपा
कर्मापा लामा
कामुक
किलिमंजारो, तंजानिया
कोरचांग गोम्पा मंदिर
भूस्खलन
ल्हा चू घाटी, तिब्बत
महाभारत
Manasarovar Lake, Tibet
डुबोना, सफाई करना
लाइट लगाओ

मारा
भारत में वैवाहिक प्रथाएँ भौतिक असमानता
माया (भ्रम)
माया, बुद्ध की माता
मेरु, पर्वत
मिलापेपा
खनन
चंद्रमा
मुखर्जी, देब
अमेरिका देश का जंगली घोड़ा पौराणिक कथा
बौद्ध
हिंदू
नालंदा विश्वविद्यालय
नमखा ख्युंग द्ज़ोंग मठ, तिब्बत नारा ला दर्रा, तिब्बत
Neelakantha
नगारी, तिब्बत
गोताखोरी
रुकना
न्यिंगमा संप्रदाय
Om Mani Padme Hum
पद्मसंभव. रिनपोछे, गुरु देखें पार्वती (शिव भी देखें)
पितृसत्तात्मक व्यवस्था
पेमा रिक्सल, ओल्ड
तीर्थ
बहुपतित्व
चारों ओर प्रदक्षिणा (परिक्रमा)। कैलाश पर्वत

Lake Manasarovar
पुरंग, तिब्बत
राक्षस ताल, तिब्बत
राम अ
रामायण
रावण
धार्मिक स्वतंत्रता
राइम संप्रदाय
रिनपोछे, गुरु (पद्मसंभव)
कैलाश में चीन द्वारा सड़क निर्माण रुद्र (शिव भी देखें)
Rudraksha mala
Sadashiva
सागा दावा
शाक्य संप्रदाय
सल्ली खोला, हुमला, नेपाल
तिब्बत के पहाड़ों में स्थित नमक की झीलें Santarakshita
सती (शिव भी देखें)
Shakyamuni, Buddha
शेनराब
शिव
Shivatandavastotram
चीन के सिचुआन प्रांत में। सिमिकोट, हुमला, नेपाल
आकाश अंत्येष्टि
स्नेहा
सोनम
पेरू में स्पेनिश औपनिवेशिक शासन Sudhana Buddha
सन गेट, पेरू

□□□□□
□□□□□□□□□
□□□□□ □□□□
Tharo Dhunga, Humla, Nepal
□□□□□□: □□□□ □□□□□□
□□□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□
□□□□□□□□□□ □□□□
□□□□□□
□□□□□□; □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□
□□□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□
□□□□□□ □□□□□□
Tumkot
Vairochana, Buddha
□□□□□□□□□
□□□□
□□□□ □□□□□□□□
Yalbang Chaur
□□□□□□□ □□, □□□□□

उपसंहार एवं आभारोक्ति

मैंने कैलाश और मानसरोवर की अपनी यात्रा बिना किसी योजना के शुरू की थी। मैंने कोई नोट्स नहीं बनाए, बस एक साधारण कैमरा साथ रखा और कुछ ही तस्वीरें खींचीं। सौभाग्य से, स्पेरेलो, चिंग, जेफ और केटी ने ढेर सारी तस्वीरें खींचीं और विस्तृत डायरी रखीं, जिनसे एक साल बाद, जब मैंने यात्रा के बारे में लिखना शुरू किया, तो मुझे बहुत मदद मिली। किताब में मौजूद तस्वीरें उन्हीं ने खींची हैं और मैं उनका तहे दिल से आभारी हूं कि उन्होंने मुझे अपनी तस्वीरें इस्तेमाल करने की अनुमति दी। पल्लू और प्रार्थना के साथ हुई बातचीत से भी कई जानकारियों को समझने में मदद मिली। इसके लिए और कई अन्य बातों के लिए, मैं अपने अद्भुत यात्रा साथियों का सदा आभारी रहूंगा। मैं अपने मार्गदर्शक छिरिंग, मिंग मा और सुरेंद्र का बहुत आभारी हूँ। विशेष रूप से छिरिंग और उनके दल का, जिन्होंने हमें सुरक्षित रूप से मार्ग दिखाया, मैं उनका ऋणी हूँ। दुर्भाग्यवश, कैलाश और मानसरोवर पर ध्यान केंद्रित रखने के कारण, मैंने उन कुछ अन्य अद्भुत स्थानों का वर्णन नहीं किया जो उन्होंने हमें दिखाए - गुगे का प्राचीन गुफा साम्राज्य, माउंट एवरेस्ट के तिब्बती हिस्से की यात्रा, और ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे विशाल रेत के टीलों पर रुकना। शायद किसी दिन मैं उनके बारे में लिखूंगा और वे किसी अन्य कहानी का हिस्सा होंगे। साथ ही, कथा प्रवाह के लिए, कुछ मामलों में बातचीत के समय में बदलाव किया गया है। अंत में, लिखे गए शब्द ठीक वही नहीं हैं जो बोले गए थे, फिर भी वे याद की गई बातचीत के अर्थ के अनुरूप हैं। मैं अपने सहयात्रियों का फिर से आभारी हूँ जिन्होंने मेरे अंतिम मसौदे को पढ़ा और समय, घटनाओं और बातचीत की सटीकता के लिए इसे परिष्कृत करने में मेरी मदद की - इस मामले में मैं विशेष रूप से पल्लू का ऋणी हूँ जिन्होंने धैर्य और प्रेम के साथ पुस्तक के कई मसौदों में से प्रत्येक को पढ़ा।

किताब के बारे में

कविता और उसकी चचेरी बहन पल्लू, नेपाल और तिब्बत के हिमालयी चीड़ के जंगलों और दुर्गम पहाड़ों से गुज़रते हुए खुद से यही सवाल पूछती हैं। उनका लक्ष्य है कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील तक पहुँचना।
दोनों महिलाएं प्राचीन मठों की यात्रा करती हैं, बर्फीली ढलानों पर ध्यान लगाती हैं, कैलाश पर्वत की तलहटी में नृत्य करती हैं और पहाड़ों की ठंडी हवा में मृत्यु का सामना करती हैं। हिंदू और बौद्ध धर्म के सबसे पवित्र स्थलों कैलाश और मानसरोवर में, वे अपने तर्कवादी विचारों को आस्था और अपने बचपन से जुड़ी प्रिय पौराणिक कथाओं के साथ सामंजस्य बिठाने का प्रयास करती हैं। आश्चर्यजनक रूप से, यही यात्रा उन्हें मित्रता का अर्थ समझने में मदद करती है।
'वॉकिंग इन क्लाउड्स' दूर-दराज के स्थानों और अपने भीतर के अनुभवों की यात्रा का खूबसूरती से रचा गया संस्मरण है। यह गीतात्मक और वर्णनात्मक कहानी को मनमोहक तस्वीरों के साथ मिलाकर एक अनोखी यात्रा वृत्तांत प्रस्तुत करता है।

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

http://twitter.com/HarperCollinsIN

[illegible] [illegible]

http://www.facebook.com/HarperCollinsIndia

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

http://instagram.com/harpercollinsindia/

Tumblr [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

http://www.tumblr.com/blog/harpercollinsindia

भारत में पहली बार 2019 में प्रकाशित। हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स
ए-75, सेक्टर 57, नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301, भारत
www.harpercollins.co.in
2 4 6 8 10 9 7 5 3 1
कॉपीराइट © कविता यागा बुग्गना 2019
पी-आईएसबीएन: 978-93-5302-478-9
ईपब संस्करण © दिसंबर 2019 ISBN: 978-93-5302-479-6
इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और मत लेखक के अपने हैं और तथ्य उन्हीं के द्वारा बताए गए हैं, और प्रकाशक इसके लिए किसी भी तरह से उत्तरदायी नहीं हैं।
कविथा यागा बुग्गना इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करती हैं। कॉपीराइट अधिनियम, 1957 के तहत सभी अधिकार सुरक्षित हैं। आवश्यक शुल्क के भुगतान पर, आपको इस ईबुक के पाठ को स्क्रीन पर देखने और पढ़ने का गैर-अनन्य, गैर-हस्तांतरणीय अधिकार प्रदान किया गया है। हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना, इस पाठ का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, प्रसारित, डाउनलोड, डीकंपाइल, रिवर्स-इंजीनियर या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली में, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे इलेक्ट्रॉनिक हो या यांत्रिक, वर्तमान में ज्ञात हो या भविष्य में आविष्कार किया जाए, संग्रहीत या उसमें शामिल नहीं किया जा सकता है।
कवर फोटो: जेफ मरे, कवर डिजाइन: हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया
www.harpercollins.co.in
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स
ए-75, सेक्टर 57, नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301, भारत
1 लंदन ब्रिज स्ट्रीट, लंदन, SE1 9GF, यूनाइटेड किंगडम
हेज़ल्टन लेन्स, 55 एवेन्यू रोड, सुइट 2900, टोरंटो, ओंटारियो M5R 3L2 और 1995 मार्खम रोड, स्कारबोरो, ओंटारियो M1B 5M8, कनाडा
25 राइड रोड, पिम्बल, सिडनी, न्यू साउथ वेल्स 2073, ऑस्ट्रेलिया
195 ब्रॉडवे, न्यूयॉर्क, एनवाई 10007, यूएसए